

पश्चिम मध्य रेल

मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा सरिता



नारी विशेषांक

संपादकीय



संपादक की कलम से 

राजभाषा विभाग की गृहपत्रिका 'राजभाषा सरिता' से जुड़कर पश्चिम मध्य रेल के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिजनों ने अपने सारगर्भित एवं मनोरंजक रचनाओं से पत्रिका को और अधिक लोकप्रियता प्रदान की है। रचनाकार के रूप में महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पश्चिम मध्य रेल पर विभिन्न विभागों में भी महिला रेलकर्मियों की उपस्थिति बढ़ी है। उन्होंने पुरुष रेल कर्मियों के साथ मिलकर पश्चिम मध्य रेल के कार्यों को न सिर्फ गति प्रदान की है बल्कि उसकी पूर्णता में अथक सहयोगी बनी हैं।

कहते हैं हर सफल इंसान के पीछे किसी ना किसी महिला का हाथ होता है, चाहे वह माँ, बहन, बेटा, पत्नी या कोई अन्य रूप में हो। नारी को शिल्पकार माना गया है। यह आम धारणा है कि अगर एक महिला को शिक्षित किया जाए तो वह पूरे परिवार को शिक्षित बना देती है।

राजभाषा सरिता का 46वां अंक नारी शक्ति को समर्पित है। हमारे देश में नारी गौरव गाथाओं की एक लंबी सूची है। वीरांगनाएं रानी लक्ष्मी बाई, रानी दुर्गावती, रानी कमलापति, स्वर कोकिला लता मंगेशकर, हिंदी साहित्य की धरोहर महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान हों या लंबे मैदानों की दूरी कदमों में नापने वाली पी.टी. ऊषा हों सभी अपने-अपने क्षेत्र की अद्वितीय नारी रही हैं। शिक्षा, साहित्य, कला, संगीत एवं राजनीति सहित लगभग सभी क्षेत्रों में नारियों के योगदान की अनुपम कहानियां हैं।

आज की भागदौड़ एवं व्यस्त जीवनशैली में भी महिलाएं अपने पारिवारिक दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते हुए बाहरी जिम्मेदारियों का भी सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं।

पश्चिम मध्य रेल पर महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने रेल संचालन के साथ रेल राजस्व, रेल सुरक्षा, रेल स्वास्थ्य एवं रेल उत्पादन आदि महत्वपूर्ण बागडोर बड़ी जिम्मेदारी के साथ संभाल रखी है। वे स्वयं को सुरक्षित रखते हुए रेल यात्रियों विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा एवं सहायता में अग्रणी रहती हैं।

मुझे उम्मीद है कि राजभाषा सरिता के प्रवाह को निरंतर बनाए रखने में वे अपना बहुमूल्य योगदान देती रहेंगी और रचनाकार के रूप में जुड़कर इसे और उपयोगी बनाएंगी।

राजभाषा सरिता का यह अंक आपको कैसा लगा, अपने विचार संपादक मंडल तक अवश्य पहुंचाएं।
प्रतीक्षा में



(राज रंजन श्रीवास्तव)

राजभाषा अधिकारी
मुख्यालय/पमरे



पश्चिम मध्य रेल

सुधीर कुमार गुप्ता

महाप्रबंधक

पश्चिम मध्य रेल



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राजभाषा विभाग, मुख्यालय, पश्चिम मध्य रेल द्वारा गृह पत्रिका राजभाषा सरिता का 46 वां अंक 'नारी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी डॉ. अंबेडकर ने कहा था –“ मैं किसी समाज की उन्नति को इस आधार पर मापता हूँ कि उस समाज में स्त्रियों की प्रगति कितनी हुई है।” आज महिलाएं शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, खेलकूद, सुरक्षा, साहित्य, राजनीति आदि लगभग हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर अपनी दोहरी जिम्मेदारी को बड़ी कुशलता से निभा रही हैं। महिलाओं ने देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे शास्त्रों में भी लिखा है –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः

जहां स्त्रियों का आदर होता है, वहां संस्थानें निश्चित तौर पर विकास की नई गाथाएं लिखती हैं।

रेल मंत्रालय ने भी नारी सशक्तिकरण की पुरजोर वकालत करते हुए देश के प्रथम विश्वस्तरीय रेलवे स्टेशन का नामकरण वीरांगना रानी कमलापति के नाम पर कर अपने संकल्प को दोहराया है जो पश्चिम मध्य रेल के लिए गौरव की बात है।

गृह पत्रिकाएं संवाद का एक सशक्त माध्यम होती हैं। मुझे खुशी है कि राजभाषा विभाग संघ की राजभाषा नीतियों के प्रचार-प्रसार के साथ अपने सामाजिक दायित्व का भी निर्वहन कर रहा है। इससे हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रूचि बढ़ेगी और दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

नारी को समर्पित इस विशेष अंक के लिए मैं संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।



सुधीर कुमार गुप्ता

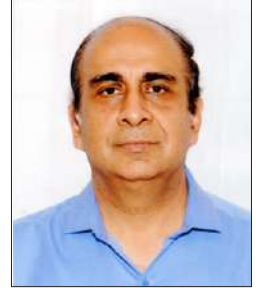
महाप्रबंधक



पश्चिम मध्य रेल

रविशंकर सक्सेना

अपर महाप्रबंधक एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी
पश्चिम मध्य रेल



हर्ष का विषय है कि राजभाषा विभाग, मुख्यालय, पश्चिम मध्य रेल अपनी विभागीय हिंदी पत्रिका राजभाषा सरिता का 46 वां अंक 'नारी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित कर रहा है।

'मैं भी छू सकती हूँ आकाश, बस मुझे भी है एक मौके की तलाश' को आज महिलाओं ने सार्थक कर दिखाया है। वास्तव में नारी का अस्तित्व ही जीवन का आधार है। सशक्त नारी से ही सशक्त समाज की परिकल्पना की जा सकती है। वर्तमान में लगभग हर क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है और दिन प्रतिदिन इसमें वृद्धि हो रही है। रेल के विकास में महिलाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। रेलों पर जहां लोको पायलट, गार्ड, स्टेशन मास्टर, टी.टी.ई., ट्रेकमेन, गैंगमेन आदि पदों पर कभी केवल पुरुष ही प्रायः दिखते थे, वहां आज महिलाओं ने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। पश्चिम मध्य रेल में भी महिला रेल कर्मियों की भागीदारी बढ़ी है।

कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं की महती भूमिका रहती है। नारी विशेषांक का प्रकाशन पश्चिम मध्य रेल पर कार्यरत महिला कर्मियों के लिए प्रेरणादायी अवसर है। मुझे विश्वास है कि इसके प्रकाशन से रेल कर्मियों के बीच राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में सहायता मिलेगी और दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय नारी की अप्रतिम उपलब्धियों को समर्पित इस विशेष अंक के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

25.1.

(रविशंकर सक्सेना)





संरक्षक
श्री सुधीर कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
श्री रविशंकर सक्सेना
अपर महाप्रबंधक
एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

परामर्श
श्री यू. के. सिंह
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
श्री राज रंजन श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
श्री राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

सहयोग
राजभाषा विभाग

छायांकन
श्री राजेन्द्र पैगवार

पत्राचार का पता
संपादक, राजभाषा सरिता
पश्चिम मध्य रेल

कार्यालय, इंदिरा मार्केट, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-2627077, 54714 (रेलवे)

• सीमित संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए
• पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त
विचार लेखकों के अपने हैं।

अनुक्रमणिका

क्र. शीर्षक

1. राष्ट्रीयता के पर्याय सुभद्रा जी...
2. बेटियाँ (कविता)
3. रानी कमलापति
4. मध्यप्रदेश की मूर्धन्य महिला साहित्यकार
5. मेरी बिटिया (कविता)
6. सुभद्रा जी की मातृत्व भावना
7. जब से मेरी बिटिया मिष्टी आई
8. भारतीय नारी की करुण कथा- 'निर्मला'
9. महिला सशक्तीकरण ...
10. नारी और साहित्य
11. सबकी बिटिया (कविता)
12. क्रांतिज्योति सावित्री बाई फुले
13. वीरांगना-रानी दुर्गावती
14. महीयसी महादेवी वर्मा
15. सुन बेटा तू ताकतवर बनना
16. प्रतिभा संपन्न भारतीय महिलाएं
17. 'नारी-समाज का गौरव'
18. पुनर्जीवन (कहानी)
19. मैं तो केवल नारी हूँ (कविता)
20. चन्दा- (कहानी)
21. नंदिनी- (कहानी)
22. नारी (कविता)
23. विमाता (कविता)
23. माँ (कविता)
24. गीत
24. नारी सम्मान (कविता)
25. आने वाला कल है बेटिया (कविता)
26. जीवन का आधार है-नारी (कविता)
27. क्षणिकायें
28. छायाचित्र-राजभाषा गतिविधियाँ
29. दोहे

लेखक नाम

- | | |
|---------------------------|-------|
| आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल' | 2 |
| आर.के. मालवी 'प्रखर' | 4 |
| डॉ. कुमार आशीष | 5 |
| घनश्याम मैथिल 'अमृत' | 7 |
| अरुण कुमार | 8 |
| नवीन चतुर्वेदी | 9 |
| श्रीमती सुधा दुबे | 10 |
| कृष्णावीर सिंह सिकरवार | 11 |
| अर्चना श्रीवास्तव | 13 |
| सिद्धेश्वरी सराफ (शीलू) | 15 |
| संजीव तिवारी | 16 |
| डॉ. दमयंती सैनी | 17 |
| डॉ. आशा रानी | 19 |
| राही विशाल | 21 |
| दीनबंधु परालिया | 22 |
| संत कुमार मालवीय 'संत' | 23 |
| हरीशंकर मिश्र, | 25 |
| शरद उपाध्याय | 27 |
| इंजी. आशा शर्मा | 28 |
| हरि सहाय पाण्डेय | 29 |
| अशोक शर्मा | 30 |
| डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव | 30 |
| अश्विनी कुमार स्वामी | 31 |
| अखिलेश ब्यौहार 'शिक्षक' | 32 |
| मिथिलेश बड़गैँयाँ 'श्री' | 32 |
| राजेश कुमार लखेरा | 33 |
| देवराज चापागाई | 34 |
| नरोत्तम नामदेव | 35 |
| घनश्याम मैथिल 'अमृत' | 36 |
| बसंत कुमार शर्मा | 37-42 |



मुख पृष्ठ : स्केच पेंटिंग- जूही कुमारी यादव
पिता श्री सुबोध यादव, लेखा विभाग, जबलपुर मंडल





16 अगस्त 1904 - 15 फरवरी 1948

राष्ट्रीयता के पर्याय सुभद्रा जी - लक्ष्मण सिंह जी

75 वीं
पुण्यतिथि
विशेष

सुभद्रा जी की ख्याति राष्ट्रवादी प्रथमतः कवयित्री और बाद में सभानेत्री के रूप में फैली। सुभद्रा जी की सहज-स्वाभाविक राष्ट्रीय भाव धारा परक

का महायज्ञ था। दोनों एक दूसरे के पूरक थे और दोनों का प्राप्य था भारत का स्वातंत्र्य। लक्ष्मण सिंह जी के कवि के रूप में पहचान हिंदी साहित्य में अपेक्षाकृत कम है। लक्ष्मण सिंह चौहान रचित साहित्य में नाटक कुली-प्रथा, उत्सर्ग, दुर्गावती और अंबपाली लिखे जो लोकप्रिय हुए। उन्होंने 'त्रिधारा' सामूहिक काव्य संकलन का संपादन-प्रकाशन भी किया था जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी, केशवप्रसाद पाठक तथा सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रतिनिधि रचनाएँ सम्मिलित थीं। 'वंदे मातरम्' शीर्षक से प्रकाशित निम्न हिंदी गज़ल में उनकी काव्य कुशलता और राष्ट्रीय भावना की बानगी है -

'चल दिए माता के बंदे जेल वंदे मातरम्
देशभक्तों की यही है गैल वंदे मातरम्
हैं जहाँ गाँधी गए; बरसों तिलक भी थे जहाँ
हम भी वहाँ के कष्ट लेंगे झेल वंदे मातरम्'

उदित हुआ नक्षत्र गगन पर जन्मजात काव्य प्रतिभा की धनी सुभद्रा जी ने मात्र 6 वर्ष की आयु में पहली तुकबन्दी की -

तुम बिन व्याकुल हैं सब लोग।
तुम तो हो इस देश के गोगा।।

गोगा उत्तर प्रदेश और अन्य प्रांतों में पूजित लोकदेवता हैं जो अदृश्य रहकर भक्तों का भला करते हैं। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह गोगा जी के भजन गाते थे।

मात्र 9 वर्ष की आयु में 1913 में प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका 'मर्यादा' में 'सुभद्रा कुँवर' नाम से उनकी प्रथम काव्य रचना 'नीम' प्रकाशित हुई जिसकी आरंभिक पंक्तियाँ निम्न हैं -

'सब दुखहरन सुखकर परम हे नीम! जब देखूँ तुझे।
तुहि जानकर अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे।'

अपनी मिसाल आप पाँच संतानों सुधा, अजय, विजय, अशोक व ममता की माता सुभद्रा जी ने दुधमुँहे बच्चों को अपनी राष्ट्रभक्ति-पथ और साहित्यिक सृजन में बाधक नहीं बनने दिया। उन्होंने पारिवारिक, राजनैतिक और सामाजिक दायित्व निर्वहन में समन्वय, सामंजस्य और संतुलन की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की। वर्ष 1919 में लक्ष्मण सिंह जी से विवाह पश्चात् सुभद्रा जी जबलपुर आ गई और 1920 में स्वातंत्र्य संघर्ष में कूद पड़ीं। बापू के सादगी के महामंत्र को इस

काव्यधारा के प्रवाहित होने में उनकी अभिन्न सखी महीयसी महादेवी वर्मा जी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शालेय जीवन से ही सुभद्रा-महादेवी की जोड़ी विद्रोही प्रवृत्ति के लिए चर्चित रही किन्तु यह विद्रोह सुविचारित और सकारात्मक था। महादेवी का बाल विवाह को नकारकर अविवाहित रहना और सुभद्रा का विवाह में दहेज और पर्दा प्रथा को ठुकराना तत्कालीन परिवेश में दुष्कर और चुनौतीपूर्ण कदम थे। लक्ष्मणसिंह जी ने पारिवारिक विरोधों और आर्थिक अभावों की परवाह न कर सुभद्रा के साथ मिलकर देश के स्वतंत्रता हेतु सर्वस्व के संकल्प को प्राणप्रण से पूर्ण किया। राष्ट्रीय भावधारा सुभद्रा जी और लक्ष्मण सिंह जी दोनों के काव्य में पल्लित-पुष्पित होकर सत्याग्रहियों और जन सामान्य के लिए प्रेरक शक्ति के रूप में सामने आई।

लक्ष्मण सिंह जी के एक अभिन्न मित्र की बहिन थीं सुभद्रा। प्रथम साक्षात् में ही दोनों के मन में यह भाव आया कि वे पूर्व परिचित हैं। सुभद्रा जी 'प्रथम दर्शन' शीर्षक से लिखती हैं -

प्रथम जब उनके दर्शन हुए,
हठीली आँखें अड़ ही गई।
बिना परिचय के एकाएक,
हृदय में उलझन पड़ ही गई।

लक्ष्मण सिंह जी ने सुभद्रा जी को किस दिव्य दृष्टि से देखा, इसकी बानगी उनकी यह कविता प्रस्तुत करती है -

वह ठिठक अड़ैली चंचल थी,
ज्यों प्रीति लाज में घुली हुई।
हँसी रसीले होंठों की,
नव रूप सुधा से धुली हुई।।

इस दिव्य दंपति का मिलन दैहिक से अधिक आत्मिक अद्वैत



तरह अंगीकार किया कि चूड़ी-बिंदी और किनारेवाली साड़ी तक त्याग दी। 1920 में अखिल भारतीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में लक्ष्मण सिंह जी और सुभद्रा जी दोनों कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सम्मिलित थे। बापू ने पूछा 'बेन तुम्हारा ब्याह हो गया।' सुभद्रा ने कहा 'हाँ,' उत्साहपूर्वक बताया पति भी साथ आए हैं। बापू आश्चर्य हुए तो 'बा' ने सस्नेह डाँटा कि चूड़ी-बिंदी और किनारेवाली साड़ी पहनो। गृहप्रवेश के साथ ही पर्दा प्रथा का विरोध करने वाली विद्रोहिणी सुभद्रा ने 'बा' का स्नेहादेश शिरोधार्य किया। 1922 में झंडा सत्याग्रह में सुभद्रा जी देश की प्रथम महिला सत्याग्रही बनीं तथा 1923 तथा 1942 के सत्याग्रह आंदोलनों में हिस्सेदारी कर दो बार कारावास भी पाया। उनकी कविताओं की सहज-स्वाभाविक वृत्ति राष्ट्रीय पौरुष को ललकारने-जगाने की है। देश की पहली महिला सत्याग्रही सुभद्रा जी के 3 कहानी संग्रह बिखरे मोती, उन्मादिनी तथा सीधे-सादे चित्र तथा काव्य संग्रह मुकुल व त्रिधारा प्रकाशित हुए हैं। भारत सरकार ने उनकी याद में एक डाक टिकिट निर्गत किया तथा एक भारतीय तट रक्षक जहाज का नामकरण किया है। जबलपुर नगर निगम प्रांगण में उनकी मानवाकार संगमरमरी प्रतिमा स्थापित की गई है।



सुभद्रा जी का साहित्यिक वैशिष्ट्य-

सुभद्रा जी कविता लिखती नहीं थीं, कविता उनके माध्यम से खुद को व्यक्त करती थी। अभिन्न सखी महादेवी जी की ही तरह सुभद्रा जी का भी काव्य माथापच्ची का परिणाम नहीं, हृदय की तीव्रतम भावनाओं और गहन अनुभूतियों का सहज प्रागट्य होता था। देश-प्रेम, नारी-जागरण और अन्याय से संघर्ष सुभद्रा जी की जन्मजात प्रवृत्तियाँ थीं। उन्होंने छायावादी आत्माभिव्यक्ति और राष्ट्रीय लोकाभिव्यक्ति, नारी जागरण और समाज सुधार का नीर-क्षीर मिश्रण प्रकृत एवं आकर्षक परिधान में प्रस्तुत कर जन-मन जीत लिया। उनकी अभिव्यक्तियाँ सरल, सहज, बोधगम्य एवं अकृत्रिम हैं। प्रगीत शिल्प उनकी अनुभूतियों का आवरण नहीं, आत्मिक तत्त्व है। वे अनुभूतियों पर काव्य को आरोपित नहीं करतीं, वे काव्यमय अनुभूतियाँ अनुभव करती हैं। उनकी अभिव्यंजना ही काव्यमयी है। राजनैतिक परवशता का विरोध, समाजिक विसंगतियों पर प्रहार, पारिवारिक ममत्व की प्रतीति के साथ राष्ट्रीय गौरव गान करते समय सुभद्रा जी की रचनाओं में कहीं अंतर्विरोध नहीं है। वे सर्वत्र राग, सृजन और नव निर्माण के गीत जाती हैं, कहीं भी विनाश या ध्वंस की कामना नहीं करतीं। वे क्रांतिकारिणी हैं, विद्रोहिणी हैं पर उनकी क्रांति बंदूक की नली से नहीं उपजती, उनका विद्रोह रक्तधार नहीं बहाता।

सुभद्रा जी के काव्य में आशावाद-

उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक से आरंभ काव्य यात्रा में सुभद्रा जी सतत् अहिंसक सत्याग्रहों का अभिन्न हिस्सा रहीं। वे पति की सहधर्मिणी रहीं, अनुगामिनी नहीं। लक्ष्मण सिंह जी जैसा अद्भुत जीवन साथी का अखंड विश्वास सुभद्रा का संबल और प्रेरणाशक्ति था। उन्हें पूर्ण विश्वास था की गाँधीवादी अहिंसक संघर्ष ही देश को स्वतंत्रता दिला सकेगा। सुभद्रा जी के काव्य में देश और परिवार दो धुरियाँ सहज दृष्टव्य हैं। उनकी दो सर्वाधिक प्रसिद्ध गीति रचनाएँ 'झाँसी की रानी' तथा 'कदंब का पेड़' इन धुरियों पर ही रची गई हैं। वे 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'विश्वैक नीडम्' की विरासत को ग्रहणकर समस्त देशवासियों की पीड़ा अपनी मानकर उसके शमन हेतु जूझती हैं। अभावों और कठिनाइयों से घिरी रहकर भी वे कभी निराश नहीं हुईं। सुभद्रा जी लिखती हैं -

मैंने हँसना सीखा है, मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल-पल पर मेरे जीवन में सोना।
मैं अब तक जान न पाई, कैसी होती है पीड़ा।
हँस-हँस जीवन में कैसे, करती है चिंता क्रीड़ा।।

सुभद्रा जी का आशावाद उनकी रचनाओं में उत्साह, उमंग, स्फूर्ति, साफल्य और विजय के रूप में शब्दित होकर पाठकों में नवाशा, विश्वास, ओज तथा कर्मठता का संचार करता है।

सुभद्रा काव्य में श्रृंगार रस

सुभद्रा जी के काव्य में श्रृंगार रस की मनोहर छवियाँ जहाँ-तहाँ शोभित हुई हैं। उनका श्रृंगार भोग-विलास नहीं, त्याग और समर्पण के साथ कर्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा बनता है।

मैं जिधर निकल जाती हूँ, मधुमास उतर आता है।
नीरस जन के जीवन में, रस घोल-घोल जाता है।
सुखर सुमनों के दल पर, मैं मधु संचालन करती।
मैं प्राणहीन का, अपने प्राणों से पालन करती।

सुभद्रा जी की नारी प्रिय की अर्धांगिनी के रूप में लक्ष्मण सिंह जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने के साथ-साथ पाँच बच्चों के लालन-पालन में प्राण-प्राण से निमग्न होती है। वे नारी विमर्श और नारी जागरण करते हुए अर्धांगिनीत्व और मातृत्व को बाधक नहीं साधक पाती हैं। प्रस्तुत हैं दाम्पत्य जीवन में अपने प्रिय के प्रति सुभद्रा जी के अखंडित विश्वास की साक्षी देती दो पंक्तियाँ -

तुम कहते हो आ न सकोगे, मैं कहती हूँ आओगे।
सखे! प्रेम के इस बंधन को यों ही तोड़ न पाओगे।

नारी शक्ति का हो पूरा उपयोग, इसलिए नारी सशक्तिकरण को दो सहयोग



सुभद्रा साहित्य में वात्सल्य सलिला

सुभद्रा जी का मातृत्व अपने बचपन और अपने बच्चों के बचपन का नीर-क्षीर सम्मिश्रण है। जीवन की विविध जटिलताओं के बीच सुभद्रा जी बच्चों के बचपन में अपने बचपन को फिर-फिर जी रही थीं और सुधियों के सागर से संजीवनी पा रही थीं। देखिए एक झलकी

शैशव के सुन्दर प्रभात का मैंने नव विकास देखा।
यौवन की मादक लाली में जीवन का हुलास देखा।

सुभद्रा काव्य में उद्दाम राष्ट्रीय भावधारा

तरुण सुभद्रा ने भारत-भारती को एक ही जाना था। उनके लिए हिंदी की सेवा भी भारत माता की सेवा थी। आज की कॉन्वेंटी पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि जब देश में गिनी-चुनी आंग्ल शिक्षा संस्थाएँ थीं तब सुभद्रा जी 'क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज प्रयाग' की मेधावी छात्रा होते हुए, आंग्ल भाषा में काव्य रचना करने में समर्थ होते हुए भी हिंदी में काव्य रचना कर रही थीं-

जिनको तुतला-तुतला करके शुरू किया था पहली बार।
जिस प्यारी भाषा में हमको प्राप्त हुआ है माँ का प्यार ॥

सारतः यह निर्विवाद है कि सुभद्रा जी का साहित्य उनके जीवन-संघर्षों की अनकही गाथा कहता है। वे सत्य की आँखों में आँखें डालकर अपनी कलम चलाती हैं। यथार्थ की कुरूपता में भी सत्य-शिव-सुन्दर की उपस्थिति देख और दिखा सकने के लिए जो दिव्य दृष्टि चाहिए वह सुभद्रा जी में है। उनका स्त्री विमर्श कहीं और कभी पुरुष विरोधी नहीं होता, यह उनका वैशिष्ट्य है। विरूपता में सुरुपता की स्थापना करती सुभद्रा जी महीयसी की काल्पनिक छायावादी सौंदर्य सृष्टि का न तो अनुकरण करती हैं न विरोध। एक ही काल में पारस्परिक प्रगाढ़ स्नेह संबंध में गुंथी दोनों काव्य प्रतिभाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं। महीयसी एक बार मुक्ति की कामना से बौद्ध धर्म में दीक्षित होने गईं भी तो मोह भंग होते ही वापिस आ गईं और सुभद्रा जी तो स्वामी विवेकानंद की तरह मृत्योपरांत भी धरती और जीवन से जुड़े रहने की कामना करती रहीं। वह अपनी मृत्यु के बारे में कहती थीं कि 'मेरे मन में तो मरने के बाद भी धरती छोड़ने की कल्पना नहीं है।' मैं चाहती हूँ, मेरी एक समाधि हो, जिसके चारों ओर नित्य मेला लगता रहे, बच्चे खेलते रहें, स्त्रियाँ गाती रहें ओर कोलाहल होता रहे।' आपको बारंबार नमन्।



आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल'

वरि.साहित्यकार नेपियर टाउन, जबलपुर
मो.: 9425183244



बेटियाँ

घर-द्वार-आंगन में खेलती है बेटियाँ।
फूलों की क्यारी सी महकती है बेटियाँ।
बेटी बिना सारे ये, त्योंहार अधूरे से,
नन्ही बुलबुल सी चहकती है बेटियाँ।
बोझ नहीं है बेटियाँ, शक्ति का संचार है,
कुल के गौरव-मान को बढ़ाती है बेटियाँ।
जीवन के इस पावन मंदिर में,
दुर्गा-लक्ष्मी और सरस्वती है बेटियाँ।

बेटी से ही ब्रह्मा जी की सृष्टि गतिमान है,
नदी और निर्झर सा बहती है बेटियाँ।
सुख-दुख विरह और वेदना के क्षणों में,
तपकर कुंदन सी दमकती है बेटियाँ।
उन्नति और तरक्की के खुले आसमान में,
चांद और सितारों से चमकती है बेटियाँ।
लड़ती है जुल्मों-सितम-अन्याय से,
झांसी वाली रानी सी गरजती है बेटियाँ।

प्राणों से भी ज्यादा जिसे प्यार करते हैं,
बाबुल का नेह पहचानती है बेटियाँ।
गोदी में जो खेलती थी इठला के चलती थी
डोली में जब बैठी तो दे सिसकती है बेटियाँ।
लाखों-लाखों जन्मों के पुण्य भी कम है,
सौभाग्य से जिस घर आ जाती है बेटियाँ।
फिर अपने ही देश और अपने ही राज में,
फिर गली-गली क्यों ये लुटती है बेटियाँ।



आर.के. मालवी 'प्रखर'

सीनियर सेक्शन इंजी./टेली/मुख्य/भोपाल
मो.: 9752416821



नारी को सशक्त करना है, मानवता में नया रंग भरना है।



रानी कमलापति

कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,
मौत भी तुझसे हारी है।।



उत्तर मध्यकालीन मध्य भारत इतिहास की कई कालजयी घटनाओं का साक्षी रहा। इनमें से एक घटना वर्जनाओं, विरोधाभाषों, विश्वासघात और षडयंत्रों में पुरी तरह सनी हुई है। उपरोक्त पंक्तियाँ ऐसे ही मान लिये जाने वाले तथ्यों का विरोध प्रदर्शन करती हैं, कोई भी विचार निर्वात में उत्पन्न नहीं होता बल्कि यह उन परिस्थितियों के गर्भ से जन्म लेता है जिसके मूल में जड़ हो चुके समाज की रूढ़ दीवारों को गिराकर परिवर्तन को आत्मसात करना होता है। निश्चित ही यह परिवर्तन तय कर दिये मानकों और निश्चित कर दी गई भूमिका तलाशने की एक कवायद होती है। रानी कमलापति का किरदार भी उसी नए पन को खोजने का एक प्रयास है। एक ऐसा प्रयास जो सदियों से निर्धारित कर दी गई उन मान्यताओं से टकराता है, जहाँ वीरता, विजय एवं प्रतिरोध को पुरुषत्व का पर्याय या नैसर्गिक गुण का निषेध माना गया है।

इतिहास के कालखण्ड में 17-18 वीं सदी का भारत और मध्य क्षेत्र, मुगल बादशाहों की क्रूरता और समाजवादी मानसिकता का निरंतर शिकार हो रहा था। इसी दौर में मध्यप्रदेश के गढ़-मण्डला के गोंड राजवंश के बाद गिन्नौरगढ़ के गोंड राजवंश ने अपनी जनजातीय अस्मिता को किसी तरह से संरक्षित और सुरक्षित रखने का सिलसिला जारी रखा। कालांतर में गिन्नौरगढ़ की शासिका रानी कमलापति ने पूर्व की समस्त परंपराओं एवं ढाँचे को अस्वीकार करते हुये अंत तक पारिवारिक षडयंत्र एवं आक्रान्ताओं का पुरजोर विरोध किया। अपने मूल्यों और सिद्धांतों से समझौता ना करना और उनके अविस्मरणीय संघर्ष को निम्न पंक्तियों में बयान किया जा सकता है।

**उसूलों पर जो आँच आये तो टकराना ज़रूरी है
गर जिंदा हो तो जिंदा नज़र आना ज़रूरी है...**

इतिहासकार शंभु दयाल गुरु ने मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र के प्रमुख शासकों पर विस्तृत विवरण देते हुए प्रश्न किया है कि रानी कौन होती हैं, जिसे राजा ब्याह ले? शायद नहीं। रानी होना केवल राजपाठ, ऐश्वर्य, भोग-विलास, साजो श्रृंगार मात्र से जुड़ा हुआ नहीं हो सकता। रानी बनने के साथ ही कई कर्तव्य जुड़ जाते हैं जो उसे राजा की पत्नी मात्र होने से परे और व्यापक बनाते हैं। फिर चाहे वह प्रजा के सुखों की चिंता हो या उनके दुख दूर न कर पाने की

छटपटाहट, विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों के समय स्वदेश रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग हो या आन्तरिक षडयंत्रों से साम्राज्य को बचाना। राजा अगर राज्य के किले की तरह है तो रानी उस किले की नींव की तरह। राजा अगर सिंहासन है तो रानी जनता की उस सिंहासन में बसी हुई आत्मा। भारतवर्ष में अनेक रानियाँ हुई हैं जो उनके राजा से अधिक जानी जाती हैं चाहे वह अंग्रेजी सेना के खिलाफ झांसी की रानी हो या फिर रानी पद्मिनी जिन्होंने अग्निकुंड में जौहर कर लिया या फिर जल जौहर कर लेने वाली गिन्नौरगढ़ की रानी कमलापति हो। रानी कमलापति का नाम समय की धूल के नीचे छिप जरूर गया था लेकिन सोने की चमक जिस तरह उसे अधिक समय तक गुप्त नहीं रख सकती उसी तरह रानी कमलापति के शौर्य की चमक ने इतिहास के पन्नों से निकलकर पुनः अपने को दर्ज करवाया है और शायद इसी शौर्य-

बलिदान की स्मृति को अमर बनाने के लिए रेल मंत्रालय ने भोपाल के एक रेलवे स्टेशन का नाम उन्हीं के नाम पर कर दिया गया है जो अमृतकाल में इतिहास में विस्मृत महान व्यक्तित्वों को पुनः स्मरण करने का प्रयास है।

रानी कमलापति सल्कनपुर के राजा रतोलिया की बेटा थी। जिनकी सुन्दरता और चातुर्य के चर्चे आस-पास के क्षेत्र में थे। निकटवर्ती राज्य गिन्नौरगढ़ के राजा निजामशाह से उनके विवाह के बाद राजकुमारी कमलापति रानी बनती है किन्तु परिकथाओं के विपरीत जिसमें राजकुमारी राजकुमार से विवाह के बाद सुखमय जीवन बिताती है रानी कमलापति के लिये संघर्ष शुरू होता है चूँकि विवाह के पूर्व भी अनेक राजा राजकुमार रानी से विवाह करना चाहते थे किन्तु ऐसा न होने पर यही लोग राजा निजामशाह से खार खाए बैठे थे। इन्हीं में से एक निजामशाह के भतीजे और निकटवर्ती राज्य का राजा आलमशाह था। निजामशाह के प्रति ईर्ष्या और क्रोध और रानी कमलापति को पा लेने की चाह में आलमशाह ने राजा की जहर देकर हत्या कर दी। और उनके राज्य पर नियंत्रण कर लिया। इस दशा में रानी कमलापति अपने तीन पुत्रों को लेकर भोपाल स्थित रानी कमलापति महल में आकर स्वयं और पुत्रों को संरक्षित करती है लेकिन राजा निजामशाह की हत्या, राज्य के छीने जाने का अपमान रानी को चैन से बैठने नहीं देता। आलमशाह जैसे क्रूर और लालची शासक को सबक सिखाने के लिये रानी इस्लामपुर के शासक और मुगल सुबेदार दोस्त मोहम्मद से मदद लेती है और आलमशाह पर हमला कर उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है। रानी को राज्य वापस मिल जाता है। दोस्त मोहम्मद द्वारा रानी की मदद उसके लालच और योजना का एक भाग थी। रानी को राज्य

ऐसा कोई काम बताओ, जहाँ नारी का ना हो नाम बताओ



रानी कमलापति महल भोपाल

मिलने के बाद दोस्त मोहम्मद रानी कमलापति को पाने और उनका राज्य छीन लेने के उद्देश्य से रानी पर हमला करता है जिसमें रानी अपने 14 वर्षीय पुत्र और अपने विश्वसनीय लड़ाकों के साथ लालघाटी में युद्ध करती है। इस युद्ध में नवलसिंह की मृत्यु हो जाती है। लालघाटी का नाम ही राज्य की स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे इन लड़कों के रक्त से लाल हो गई भूमि के कारण पड़ा।

अपने पुत्र की मृत्यु और युद्ध में पराजय के बाद रानी कमलापति ने जल जौहर करके अंतिम बलिदान पूरा किया। रानी की इस जीवनगाथा के साथ ही कहा जाता है कि उन्होंने अपने राज्य की प्रजा के कल्याण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करवाए। रानी कमलापति की प्रेरणा और प्रयासों से राजा निजामशाह ने आब्रजन नियमों को सरल बनवाने से राजा को पड़ौसी राज्यों से संबंध सुधारने और एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहा जा सकता है कि रानी कमलापति सही अर्थों में रानी थीं जिन्होंने अपनी प्रजा के सुखों को सदैव प्रथम रखा और राज्य की सुरक्षा और स्वतंत्रता को प्राणोत्सर्ग करके भी बचाने का प्रयास किया। रानी कमलापति की जीवन कथा एक छोटी-सी रियासत से शुरू होती है लेकिन उनके बलिदान ने इसे इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिख दिया है।

अठारहवीं सदी के संक्रमण कालीन दौर में उन्होंने भारतीय नारी के शौर्य बलिदान को पुनः स्थापित किया, भारतभूमि को वीरांगनाओं ने यहां के वीर पुत्रों की ही भांति रणकौशल दिखाया है। जब तक सम्भव हुआ महलों के भीतर से जब मौका आया तब रणभूमि में प्राणों की आहुति देकर। रानी कमलापति भी भारतभूमि की इन वीरांगनाओं की फेहरिस्त में शामिल है। जिन्होंने धन-संपत्ति, राजपाठ, ऐश्वर्य के स्थान पर आत्मसम्मान, स्वाभिमान, स्वतंत्रता जैसे अनमोल गहनों का वरण किया। वैश्विक समाज के

नारीवादी साहित्य में नई स्त्री की जो संकल्पना की गई है, इत्तेफाक से उससे मिलती-जुलती आदर्श नारी चरित्र का निर्वहन भारत में रानी कमलापति ने उस कालखण्ड में किया जब पश्चिमी सभ्यता और आततायी मुगल, भारतीय संस्कृति की बाहों को लगातार मरोड़े जा रहे थे।

इतिहासकार डॉ. उमा चक्रवर्ती ने the new aspect of the woman question के हवाले से 17-18 वीं सदी में भारत और पश्चिमी शासिकाओं की एक सशक्त तस्वीर पेश की है। रानी कमलापति के द्वारा प्रवासियों के प्रति अपनायी गयी सहृदयतापूर्ण नीति, जनजातीय समुदाय की आकांक्षाओं के अनुरूप किये गये वन संरक्षण के उपाय, कला और स्थापत्य के क्षेत्र में जन साधारण के उपयोग में आने वाली सार्वजनिक संरचनायें, समानतामूलक कानून, राजनीतिक, सामाजिक विमर्शों के केंद्र में आम जन को शामिल करना उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाता है। शारीरिक मृत्यु के बाद उनके किरदार की अमरता पर यह कहना अनिवार्य हो जाता है कि-इस बार स्त्रियाँ अपनी गाथा खुद लिखेंगी-

**जहाँ चीर-हरण होने पर भी वह
सभा में प्रार्थना नहीं करेंगी,
नहीं मांगेगी देवताओं से लज्जा की भीख,
वह टूटती-बिखरती खुद खड़ी होंगी,
उसके भीतर एक आग छुपी है साधो,
वह दंतकथाओं की फीनीक्स पक्षी की तरह
अपनी ही राख से उठ खड़ी होंगी।**

भारतीय संस्कृति की समृद्धता यहां की सभ्यताओं की समृद्धि से कहीं अधिक यहाँ के मूल्यों और विचारों से बनी है। विभिन्न देश काल में अनेक महान व्यक्तियों ने इस सांस्कृतिक समृद्धि के वर्धन में अपने आदर्शों मूल्यों को अपने कर्मों के द्वारा समय-समय पर स्थापित किया है। ऐसे मूल्य जिन्हें पूरा विश्व दर्शन के रूप में देखता है। इन्हीं महान व्यक्तियों और विशेषकर भारतीय इतिहास की महान नारियों में रानी कमलामति का नाम अविस्मरणीय है।

डॉ. कुमार आशीष
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर,
स.डि.पु.का, भोपाल, पमरे
मो.: 9752416451



सशक्त नारी की यही पहचान, मुश्किलों से न होती परेशान

मध्यप्रदेश की मूर्धन्य महिला साहित्यकार

इस सृष्टि का निर्माण ही द्वैत से हुआ है आप मानें या न मानें जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही इस संसार में धरती-आकाश, सूर्य-चन्द्रमा, दिन-रात, सुख-दुःख, स्त्री-पुरुष आप जहां भी दृष्टि डालेंगे आपको हर जगह द्वैत के दर्शन होंगे यानी एक के बिना दूसरा अधूरा हम अपने शरीर की संरचना को ही ले लें तो पूरा शरीर ही दो आँखें, कान, नाक, हाथों, पैरों में बंटा हुआ है और कैसे शरीर के समस्त अंग एक-दूसरे के पूरक हैं, एक-दूसरे की जरूरत हैं। यहां यह सब कहने का मेरा आशय सिर्फ इतना है कि हमारा समाज स्त्री के बिना अधूरा है, भले लम्बे समय से स्त्री को हमारे समाज में वो दर्जा नहीं मिला जिसकी वह सदैव अधिकारिणी रही है, उसे सदैव इस पुरुषवादी सोच ने सदैव हाशिये पर धकेलने की कोशिशें की परन्तु आज स्थितियां बिल्कुल बदल गई हैं और आधुनिक नारी अपनी पूरी क्षमता और श्रेष्ठता के साथ समाज में पुरुष के साथ पूरी बराबरी के साथ हर जगह अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करवा रही है।

आज की नारी शिक्षित नारी शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी कौशल, प्रशासन, राजनीति के साथ ही सुरक्षा एवं सेना के विविध क्षेत्रों में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज करवा रही है (एक स्त्री पर घर के अलावा बाहर की दोहरी जिम्मेवारी होती है वह खेतिहर मजदूर हो अथवा कोई महत्वपूर्ण प्रशासनिक अधिकारी उसके ऊपर अपनी संतान अपने घर-परिवार को संभालने का दायित्व भी होता है, स्त्री सर्वप्रथम एक माँ के रूप में फिर पत्नी, बहिन, पुत्री आदि के विविध रूपों में हमारे घर और समाज की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। स्त्री सृष्टि की सृजनहार है, हम आज स्त्री के एक और सृजक रूप यानी कलमकार साहित्यकार रूप की चर्चा करेंगे। यूँ तो विश्व और देशभर में हर सदी में अनेक महिला रचनाकार हुई हैं जिनमें भक्तिकाल की मीरा से लेकर वर्तमान में महादेवी वर्मा तक अनेक नाम हुए हैं परन्तु हम यहां देश के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश की माटी में जन्मी अथवा इसे कर्मभूमि बनाने वाली कुछ ख्यातिलब्ध महिला रचनाकारों की चर्चा करेंगे जिनके विपुल साहित्य सृजन पर आज समूचे राष्ट्र को गौरव है, जिनके साहित्य सृजन से हिंदी राष्ट्रभाषा समृद्ध हुई है वह जनभाषा बनी है। जिनमें प्रमुख हैं :-

महादेवी वर्मा:- मध्यप्रदेश की पावन मालवा माटी के इंदौर नगर में जिनका बचपन बीता जिनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा इंदौर में हुई उन

महीयसी महादेवी वर्मा का हिंदी साहित्य सदैव ऋणी रहेगा। 26 मार्च 1907 को फर्रुखाबाद उत्तरप्रदेश में जन्मी, छायावादी कविता के प्रमुख चार स्तम्भों में से एक निराला, पन्त, प्रसाद, के साथ महादेवी भला इन्हें कौन भुला पायेगा। इंदौर के क्रिश्चन कॉलेज में पढ़ी महादेवी को इंदौर में बिताया एक-एक पल बखूबी याद था जिसका स्मरण उन्होंने अपने अनेक आलेखों में बार बार किया है, वे एक कुशल कवयित्री ही नहीं उत्तमकोटी की गद्य लेखक भी थीं, उनके लिखे संस्मरण, रेखाचित्र भला कौन पाठक भूल सकता है। मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी कुछ ऐसी ही उनकी कालजयी कृतियाँ हैं। इसके साथ ही नीहार, रश्मि, सांध्य-गीत, दीप शिखा, अमर काव्य कृतियों जिनमें उन्होंने अपनी आत्मा ही उंडेल दी, भला कभी

भुलाया जा सकेगा। महिला विद्यापीठ प्रयाग में प्राचार्य के रूप में बच्चों को शिक्षित संस्कारित करने वाली, राष्ट्रप्रेम की भावना से भरी, महाप्राण निराला से जीवन पर्यन्त भाई का आत्मीय रिश्ता निभाने वाली अनेक सम्मानों, पुरस्कारों से पुरस्कृत महादेवी जी भले ही 11 सितम्बर 1987 को यह नश्वर देह त्याग हमारे बीच से चली गई हों परन्तु उनका कृतित्व उनका सृजन सदैव हमारे बीच रहेगा, इस आधुनिक युग की मीरा को मेरा शत-शत नमस्, कोटि-कोटि प्रणाम।

सुभद्रा कुमारी चौहान:- महीयसी

महादेवी वर्मा के पश्चात उनकी समकालीन और निकटम मित्र सुभद्राकुमारी चौहान का नाम मध्यप्रदेश की माटी से जुड़े हैं जो सचमुच हर प्रदेशवासी के लिए गौरव की बात है। 16 अगस्त 1904 को प्रयाग उत्तरप्रदेश में जन्मी सुभद्रा जी रचित कितनी ही कविताएं आज हमें कंठस्थ हैं, जैसे 'बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी महारानी वो तो झांसी वाली रानी थी।' तथा 'वीरों का हो कैसा वसन्त' और 'यह कदम्ब का पेड़, अगर माँ होती यमुना तीरे, मैं भी उस पर बैठ कहैया बनता धीरे धीरे।' इन कालजयी कविताओं को कौन भुला सकता है। आपका विवाह सन 1919 में खण्डवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ, आपने देश के स्वाधीनता आंदोलन में सक्रियता से हिस्सा लिया आप लंबे समय तक जबलपुर में भी रहीं। आपने कविताओं के साथ कई कहानियों के माध्यम से भी हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, यह हमारा दुर्भाग्य की 15 फरवरी 1948 को एक सड़क दुर्घटना में उनका सिवनी

असमानता के बंधन तोड़ो, नारी को उन्नति की राह से जोड़ो

के निकट अल्पायु में ही असमय निधन हो गया, यदि वे कुछ वर्षों और हमारे बीच रहती तो निश्चित ही हिंदी साहित्य को और समृद्ध करती ।

मालती जोशी :- मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाकर जीवन पर्यंत हिंदी भाषा की अहर्निश भाव से सेवा करने वाली एक और महत्वपूर्ण पूर्ण मौन साधक हैं पद्मश्री सम्मान से अलंकृत मालती जोशी जी, 04 जून सन 1934 को औरंगाबाद, महाराष्ट्र में जन्मी मालती जी एक अनूठी और लोकप्रिय कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार हैं, बहुत ही सरल और विनम्र स्वभाव की धनी, भारतीय संस्कार और संस्कृति बोध में रची-बसी मालती ताई का व्यक्तित्व अनूठा है, उन्हें देखकर उनसे मिलकर कभी लगता ही नहीं की हम इतनी बड़ी साहित्यकार से मिल रहे हैं, इतनी आयु में भी उनकी स्मरण शक्ति गजब की है उन्हें अपनी कई कहानियां कंठस्थ हैं, जिन्हें वे बिना पढ़े आपको सहज ही सुना सकती हैं । आपकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं जिन्हें हर पाठक बार बार पढ़ना चाहेंगे उनमें हैं 'औरत एक रात है', 'यह तेरा घर वो मेरा घर', 'पिया पीर न जानी' आदि । आपको ओजस्विनी सम्मान, दुष्यंत अलंकरण, भवभूति अलंकरण, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं ।

मन्नू भंडारी :- मध्यप्रदेश की माटी में जो महिला साहित्यकार हुई हैं उनमें एक और महत्वपूर्ण नाम है मन्नू भंडारी जी का 3 अप्रैल सन 1931 को भानपुरा जिला मंदसौर (मध्यप्रदेश) में जन्मी मन्नू जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस से हिंदी में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की तथा कलकत्ता, दिल्ली आदि नगरों में अध्यापन का कार्य किया, यह भी महत्वपूर्ण है कि आप सन 1992 से 1994 तक प्रेमचंद सृजनपीठ की निदेशक रही हैं, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आपका विवाह कथाकार श्री राजेन्द्र यादव सम्पादक 'हंस' के साथ हुआ था । आपके उपन्यासों में एक इंच मुस्कान, आपका बंटी, स्वामी और महाभोज प्रमुख हैं इसके साथ ही मैं हार गई, तीन निगाहों की तस्वीर, यही सच है, एक प्लेट सैलाब और नाटक 'बिना दीवारों के घर' तथा आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' चर्चित रहे हैं, इसके साथ ही आपने बाल साहित्य और प्रौढ़ साहित्य के लिए महत्वपूर्ण सृजन किया है, आपकी रचनाओं का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है । आपको मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के 'भवभूति अलंकरण' महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, बिहार भाषा राज्य परिषद, भारतीय भाषा परिषद, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान सहित अनेक संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया है, अभी कुछ समय पूर्व 15 नवंबर 2021 को आपका निधन हो गया ।

मेहरुनिसा परवेज़ :- मेहरुनिसा परवेज़ मध्यप्रदेश में जन्मी एक चर्चित और महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, आपका जन्म 10 दिसम्बर 1944 को बालाघाट मध्यप्रदेश में हुआ, आप देश में समकालीन समय की महत्वपूर्ण महिला साहित्यकार कथाकार हैं । आपके द्वारा लिखित प्रथम उपन्यास 'आंखों की दहलीज' प्रकाशित हुआ था जिसे पाठकों और आलोचकों का भरपूर प्यार मिला, इसके साथ ही अकेला

पलाश, समरांगण और पासंग उनके प्रमुख उपन्यास हैं, तथा आदम और हव्वा, टहनियों पर धूप, गलत पुरुष फाल्गुनी, अंतिम पढ़ाई, अयोध्या से वापिसी, एक और सैलाब, ढहता कुतुब मीनार, रिश्ते, अम्मा और समर उनकी प्रमुख कहानियां हैं । आपको साहित्य भूषण सम्मान, महाराजा वीरसिंह जूदेव पुरस्कार, सुभद्राकुमारी चौहान पुरस्कार, डॉ राही मासूम रजा सम्मान के साथ ही उनके महत्वपूर्ण साहित्यिक अवदान हेतु भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अबुलकलाम महोदय द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया है, आप इन दिनों भोपाल में रहकर 'समर-लोक' साहित्यिक पत्रिका के सम्पादन के साथ ही साहित्य सृजन में सतत सक्रिय हैं ।

इसके साथ ही कृष्णा अग्निहोत्री, मृणाल पांडेय, उर्मिला शिरीष, ज्योत्सना मिलन, आदि अनेक महिला साहित्यकारों ने अपने शीर्ष रचनाकर्म से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है, निश्चित रूप से मध्यप्रदेश की माटी को अपनी जन्मभूमि अथवा कर्मभूमि के रूप में इन महिला साहित्यकारों ने गौरवान्वित किया है ।

घनश्याम मैथिल 'अमृत'
वरि.तक.स.डि.पु.का.भोपाल
मो. 9589251250



मेरी बिटिया

शाम हो गई अभी तो घुमने चलो न पापा,
चलते-चलते थक गई,
कंधे पे बिठा लो न पापा ।
अंधेरे से डर लगता है,
सीने से लगा लो न पापा ।
मम्मी तो सो गई,
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा ।
अब कॉलेज जाने दो न पापा ।
पाल-पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा तो मत करो न पापा ।
अब डोली में बिठा ही दिया है तो
आंसू तो मत बहाओ न पापा ।
आपकी मुस्कराहट अच्छी है,
एक बार मुस्कराओ न पापा ।
आपने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओं न पापा ।
इस धरती पर बोझ नहीं मैं,
दुनिया को समझाओ न पापा ।



अरूण कुमार
कनि.अनु.म.रे.प्र.कार्या.
जबलपुर, पमरे
मो. : 9752096560

बिटिया को दे शिक्षा का उजियारा, पढ़-लिखकर करेगी रोशन जग सारा



सुभद्रा जी की मातृत्व भावना

सुभद्रा कुमारी चौहान का सक्रिय और समादृत जीवन वस्तुतः बहु-आयामी था। वे एक समर्थ और संवेदनशील रचनाकार थीं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वे एक

अग्रणी महिला नेतृत्वकर्ता के रूप में तब प्रतिस्थापित हुईं, जब-झंडा सत्याग्रह में वे प्रथम महिला सत्याग्रही के रूप में अग्रिम पंक्ति में दिखाई दीं। एक संवेदनशील कथाकार के रूप में उनकी लिखी अनेक कथाएँ हैं, जिन्होंने पाठकों के मन को छुआ है। बाल साहित्यकार के रूप में उनकी बाल कविताओं और कहानियों ने बाल मनोविज्ञान पर उनकी समझ को रेखांकित किया है। अपने समग्र साहित्य के माध्यम से सुभद्रा जी ने समाज को जाग्रत करने, कुरीतियों, छुआछूत, आडम्बर व पाखंड से मुक्ति दिलाने के लिए गंभीर प्रयास किए।

सुभद्रा जी से सामान्य हिन्दी पाठक वर्ग का परिचय जिस ओजस्वी कविता के माध्यम से हुआ वह थी 'झांसी की रानी'। इस कविता ने -झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के शौर्य, धैर्य और युद्ध नीति में प्रवीणता की पताका दूर-दूर तक फहरा दी। स्वतंत्रता आन्दोलन के विभिन्न मंचों पर उनके इस काव्यपाठ ने आजादी के युवा सेनानियों के मन में न केवल उत्साह का संचार किया वरन उन्हें देश के लिए सर्वोच्च बलिदान की प्रेरणा भी प्रदान की। उनकी अनेक रचनाओं में -'झांसी की रानी' एकमात्र ऐसी रचना है जो अखिल भारतीय स्तर पर उनकी पहचान बनी तथा जिसने उन्हें कालजयी रचनाकार के रूप में स्थापित कर दिया।

नारी का सर्वोच्च मनोभाव मातृत्व में ही प्रकट होता है। भारतीय संस्कृति में विद्या की देवी सरस्वती, धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी और शक्ति की देवी के रूप में दुर्गा को राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है। हमारा यह मनोभाव सभी भारतीय भाषाओं में विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। तमिलनाडु में तो नारी कन्या हो या वयोवृद्ध सभी को अम्मा कहने की सुदीर्घ परम्परा है। सुभद्रा कुमारी चौहान भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में निरन्तर संघर्षरत रहीं। एक बार ऐसा अवसर भी आया जब उनके पति लक्ष्मण सिंह जी भी स्वतंत्रता के आन्दोलन में जेल में थे तभी सुभद्रा जी की गिरफ्तारी तिलक भूमि तलैया में भाषण देते हुए हुई। उस समय उनकी पुत्री ममता उनकी गोद में थी। सुभद्रा जी के साथ उनकी बच्ची को भी जेल जाना पड़ा। सुभद्रा जी ने माँ के वात्सल्य और ममत्व के भावों के साथ राष्ट्रभक्ति की ज्योति को भी जलाए रखा। सुभद्रा जी की मातृत्व भावना उनके राष्ट्रीय सरोकारों के

साथ उनके बाल-गीतों में भी झलकती रही। उन्होंने अपने बचपन की स्मृतियों को अपनी सन्तानों के रूप में पुनः जीवन्त देखा। वे कहती हैं

“बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी,
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।
आजा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति।
मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन वन सी फूल उठी यह छोटी सी कुटिया मेरी।

अपने पुत्रों और पुत्रियों के प्रति उनका वात्सल्य उनकी कविताओं में निरन्तर झलकता रहा। उनकी अत्यन्त प्रसिद्ध कविता - 'यह कदम्ब का पेड़' बालमन की हठीली कल्पनाओं को साकार कर देती है-

‘यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कहैया बनता धीरे धीरे।
ले देतीं यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदम्ब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा ! ऊँचे पर चढ़ जाता।

सुभद्रा जी की मातृत्व भावना उन्हें भी बच्चा बना देती है। वे कहती हैं

“माँ ओ! कह कर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुंह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने लाई थी।
मैंने पूछा यह क्या लाई, बोल उठी वह 'माँ काओ'
हुआ प्रफुल्लित हृदय, खुशी से मैंने कहा तुम्हीं खाओ।
मैं भी उसके साथ खेलती, खाती हूँ, तुतलाती हूँ
मिल कर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।

एक बाल कविता कोयल के माध्यम से सुभद्रा जी रस भरे आमों के पक कर टपक पड़ने की मधुर आकांक्षा को इस प्रकार प्रकट करती हैं

‘देखो कोयल काली है, पर मीठी है इसकी बोली,
इसने ही तो कूक कूक कर आमों में मिसरी घोली।
यही आम जो अभी लगे हैं, खट्टे-खट्टे हरे-हरे,
कोयल कूकेगी तब होंगे, पीले और रस भरे-भरे।
हमें देख कर टपक पड़ेंगे, हम खुश होकर खाएंगे,
ऊपर कोयल गाएगी, हम नीचे उसे बुलाएंगे।’

स्वाभिमान की कमाई, नारी ने शिक्षा से ही पाई

संभवतः वर्षा ऋतु ऐसी ऋतु है जो बच्चों के मन को सर्वाधिक रस प्लावित करती है। वर्षा ऋतु में धूप और बादलों की लुका छुपी बच्चों के मन को लुभाती है। इस कविता में शब्दों का चयन बच्चों के मन के कितने नजदीक है। अपनी बाल कविता बादल हैं किसके काका में वे कहती हैं -

‘अभी-अभी थी धूप, बरसने लगा कहाँ यह पानी,
किसने फोड़ घड़े बादल के, की है इतनी शैतानी।’
सूरज ने क्यों बंद कर लिया अपने घर का दरवाजा,
उसकी माँ ने क्या उसको बुला लिया कह कर आजा।
जोर जोर से गरज रहे हैं, बादल हैं किसके काका,
किसको डांट रहे हैं, किसने सुना नहीं कहना माँ का।’

तीन पुत्रों और दो पुत्रियों की वात्सल्यमयी माँ अपने बच्चों की शिक्षा और संस्कारों के प्रति सदैव सजग रहीं। संभवतः अपनी पुत्री सुधा के प्रति उनका नेह इस कविता में अपनी पूर्ण अर्थवत्ता के साथ प्रकट हुआ है-

‘यह मेरी गोदी की शोभा, सुख सुहाग की है लाली,
शाही शान भिखारिन की है, मनोकामना मतवाली।
दीप शिखा है अंधेरे की, घनी घटा की उज्याली,
उषा है यह कालभृंग की, है पतझड़ की हरियाली।
सुधाधार यह नीरस दिल की, मस्ती मगन तपस्वी की,
जीवनज्योति नष्ट नयनों की, सच्ची लगन मनस्वी की।’

सुभद्रा जी ने बाल मनोविज्ञान का भले ही अध्ययन न किया हो, किन्तु बालमन से उनका परिचय इतना प्रगाढ़ है कि बच्चों के मनोभाव उनकी कविताओं में सहस्रधार होकर बहते हैं। उनका ममता से भरा मन और वात्सल्य के रस से सराबोर हृदय भावनाओं के अतिरेक से भर कर सभी को रससिक्त कर देता है। खिलौने वह माध्यम हैं जो बच्चों के आकाशचारी मन को कल्पनाओं के नवल वितान रचने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। अपनी कविता खिलौने वाला में सुभद्रा जी ने बच्चों के मनोभाव इन शब्दों में प्रकट किए हैं -

‘वह देखो माँ ! आज खिलौने वाला फिर से आया है,
कई तरह के सुन्दर-सुन्दर, नए खिलौने लाया है।
हरा-हरा तोता पिजड़े में, गेंद एक पैसे वाली,
छोटी-सी मोटरगाड़ी है, सर सर सर चलने वाली।’

सुभद्रा जी का मातृत्व भाव उनकी काव्य रचनाओं में ही प्रकट नहीं हुआ। उनके आचार-विचार में निरन्तर एकरूपता बनी रही। जातिप्रथा और अस्पृश्यता को उन्होंने सदैव भारतीय समाज के लिए अभिशाप माना। स्वतंत्रता संघर्ष और उसके पश्चात स्वाधीन देश में भी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने मलिन बस्तियों में जाकर

महिलाओं, बच्चों के साथ स्नेह और माधुर्यपूर्ण व्यवहार से उन्हें पूर्णतः अपना बना लिया। समाज का वह पिछड़ा और उपेक्षित वर्ग उनमें अपनी माँ और बहन का रूप देखता था। इतना ही नहीं उनके लिए असीम आदर और श्रद्धा का भाव रखता था। सुभद्रा जी का व्यवहार एक भारतीय माँ का ही जीवन विस्तार था। उनके मन की करुणा, मातृत्व और वात्सल्य साहित्य से इतर उनके जीवन के विभिन्न आयामों में निरन्तर प्रकट होता रहा। उनके नारीत्व में माँ दुर्गा का साहस, माँ लक्ष्मी की उदारता और माँ सरस्वती का वैभव स्पष्ट आलोकित होता रहा। नारी जीवन के लिए वे एक प्रकाश स्तम्भ सी हैं।



नवीन चतुर्वेदी

सेवानिवृत्त प्राचार्य
रेलवे स्कूल प.म.रेल
मो.: 7389366590



जब से मेरी बिटिया मिष्टी आई

बिटिया तेरी हर मुस्कान मुझे सुकून देती है,
जैसे काले अंधेरे में जुगनू आशा की रोशनी देती है,
जीवन के हर पल में तुम खुशियाँ दे जाती हो,
जब छोटे-छोटे कदमों से तुम पास मेरे आती हो।

जैसे खुशियों की पोटली लिए कोई किशती आई है,
जब से मेरी बिटिया मिष्टी आई है।

जिंदगी के हर-पल, तुम मुझे दिखा रही हो,
कैसे हँसके जिंदगी बितानी, मुझे सिखा रही हो,
पापा की गुड़िया और मेरी मुस्कान हो तुम,
मेरे पूरे परिवार का अरमान हो तुम।

जैसे खुशियों की पोटली लिए कोई किशती आई है,
जबसे मेरी बिटिया मिष्टी आई है !!



श्रीमती सुधा दुबे

माता जी- मयंक दुबे
वरिष्ठ वाणिज्य निरीक्षक (मुख्यालय)
पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर
मो. : 9755311624



नारी को न समझो बेकार, जीवन का वह है आधार

भारतीय नारी की करुण कथा - 'निर्मला' (प्रेमचंद के उपन्यास निर्मला के सदर्थ में)



मुंशी प्रेमचंद एक जनवादी तथा प्रगतिशील लेखक थे। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक रहे हैं। उन्होंने कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। प्रेमचंद ने अपना लेखन सन 1903 ई. के आसपास शुरू किया और 1936 तक उनकी कलम बिना रुके चलती रही, यह वह समय था जब भारतीय समाज में स्त्रियाँ दासी की तरह जी रही थी। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने ठीक ही लिखा था कि हमारे समाज में स्त्रियाँ दासों की दासियाँ हैं। यह वह समय था, जिसमें स्त्रियाँ एक साथ उपनिवेशवाद और सामंतवाद की चक्की में पिस रही थी। उन्हें समाज में पुरुषों के जैसा अधिकार प्राप्त नहीं था। यही वजह थी कि प्रेमचंद नारियों के तत्कालीन दशा से संतुष्ट नहीं थे। मध्यवर्ग, निम्नवर्ग की नारियाँ अपने अधिकारों से वंचित थी। जमींदार, महाजन आदि परिवार की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों तक सीमित थी जबकि काश्तकार आदि वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ खेतों में भी काम करती करती थीं। मध्यम वर्ग के परिवारों में नारी-शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था। ऐसे समय में प्रेमचंद ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने मध्यम एवं निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि अपने उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से नारी की दुर्दशा को उजागर किया-जो हिंदी साहित्य को दी हुई अपूर्व देन है। प्रेमचंद ने कहा है- नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए तभी समाज उन्नति करेगा। प्रेमचंद की नारी भावना ने साहित्य में एक युगांतर प्रस्तुत किया है।

महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवनकाल में कुल पन्द्रह उपन्यास लिखे थे, इन उपन्यासों में से कुछ बेहद लघु तो कुछ भीमकाय उपन्यास थे। भीमकाय उपन्यासों में 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि', 'गबन' एवं प्रेमचंद का सबसे लोकप्रिय उपन्यास 'गोदान' का नाम लिया जा सकता है। लघु उपन्यासों में 'प्रेमा', 'वरदान', 'प्रतिज्ञा' एवं अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' था। प्रेमचंद का एक लघु उपन्यास 'निर्मला' (चाँद, हिंदी मासिक पत्रिका में नवम्बर 1925 से नवम्बर 1926 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित), पुस्तक रूप में (1927 में चाँद प्रेस, कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था।

प्रस्तुत आलेख में प्रेमचंद के लघु उपन्यास 'निर्मला' की सार्थकता व सजीवता के संबंध में चर्चा करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में दहेज जैसी कुरितियों से होने वाली समस्याओं के विषय में बताया गया था। यह समस्या आज भी समाज में बदस्तूर चलने के कारण इसकी प्रासंगिकता इतने वर्षों बाद भी कम नहीं हुई है। इस लघु उपन्यास में प्रेमचंद ने बेमेल विवाह तथा दहेज के दुष्परिणामों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया था। इस उपन्यास से पूर्व प्रेमचंद ने समाज की कई कुरितियों एवं बुराईयों को लेकर अपने उपन्यासों का विषय बनाया था, जिनमें प्रमुख रूप से पंडे पुजारियों द्वारा समाज में फैलाया जा रहा पाखंड-प्रपंच पर कुठाराघात, विधवा विवाह की समस्या, कल कारखानों के दुष्परिणाम, आभूषण प्रेम, जमींदारी प्रथा तथा किसानों पर हो रहे अत्याचारों आदि का वर्णन प्रमुखता के साथ अपने उपन्यासों में कर चुके थे। जब 'निर्मला' उपन्यास को लिखा तो इसमें दहेज रूपी दानव जिसने घरों के घर बर्बाद कर दिये थे, के संबंध में बड़ा ही दुखद वर्णन कर इसे आम पाठकों के बीच पहुँचाया। आम पाठकों से संबंधित समस्या होने के कारण पाठकों के बीच यह उपन्यास बेहद लोकप्रिय बन गया तथा हिंदी पाठकों ने भी इसका खुले दिल से स्वागत किया। चूँकि इस उपन्यास की कथावस्तु दहेज की व्यवस्था न हो पाने के कारण जिंदगी भर घर गृहस्थी में पिसती एक आम महिला 'निर्मला' की जिंदगी की त्रासद कहानी थी, इस कारण महिलाओं ने इस उपन्यास को बेहद पसंद किया। इस उपन्यास के संबंध में कतिपय विद्वानों ने अपने-

अपने विचार व्यक्त किये हैं, जिन्हें देखा जाना आवश्यक है।

“यह उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की समस्या को लेकर लिखा गया है.....अनमेल विवाह, व्यर्थ आशंका और ननद-भावज के झगड़ों के कारण एक सुखी गृहस्थी को कलह का अखाड़ा बनते दिखाया गया है। कलह इतना बढ़ता है कि घर उजड़ जाता है।”

“और इसमें शक नहीं कि औरत की जिन्दगी का दर्द जिस तरह इस किताब में निचुड़कर आ गया है वैसा मुंशी जी की और किसी किताब में मुमकिन न हुआ, न आगे न पीछे। समाज के जालिम - ढ़कोसले, लेन-देन की नहूसते, बेवा की बेचारगी और निपट अकेलापन, अनमेल ब्याह की गुत्थियाँ दर गुत्थियाँ-सब कुछ जैसे जाग पड़ा, बोल उठा इस किताब में।”

“इसमें वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह तथा दहेज के दुष्परिणामों का मनोवैज्ञानिक रूप में चित्रण हुआ है।”

उपन्यास अनुसार बाबू उदयभानुलाल जब अपनी पुत्री निर्मला का विवाह बाबू भालचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र भुवनमोहन से पक्का करते हैं तो दोनों पक्षों में दहेज के लेन-देन के संबंध में कोई बात न होकर केवल बारातियों का स्वागत सत्कार अच्छे से करने को ठहरता है, लेकिन बारातियों का स्वागत सत्कार कितना भी उत्तम प्रकार से क्यों न किया जाये बराती उसमें कहीं न कहीं कमी निकाल ही लेते हैं, इसी संबंध में बाबू उदयभानुलाल एवं उनकी पत्नी कल्याणी के बीच विवाह की तैयारियों एवं बारातियों के स्वागत पर होने वाले खर्च का हिसाब लगाया जा रहा है एवं विवाह की तैयारियों का सुन्दर चित्र खींचते हुए कहते हैं “बाबू उदयभानुलाल का मकान बाजार में बना हुआ है। बरामदे में सुनार के हथौड़े और कमरे में दर्जी की सुइयाँ चल रही हैं। सामने नीम के नीचे, बढई चारपाई बना रहा है। खपरैल में हलवाई के लिये भट्टी खोदी गई है। मेहमानों के लिये अलग-अलग मकान ठीक किया गया है। यह प्रबंध किया जा रहा है कि हर मेहमान के लिये एक-एक चारपाई, कुर्सी और एक-एक मेज हो। हर तीन मेहमानों के लिये एक-एक कहार रखने की तजवीज हो रही है। अभी बरात आने में एक महीने की देर है, लेकिन तैयारियाँ अभी से हो रही हैं। बरातियों का ऐसा सत्कार किया जाए कि किसी को जबान हिलाने

नारी है सर्वस्व विधाता, उससे ही सारा संसार जीवन पाता

का मौका न मिले। वे लोग भी याद करें कि किसी के यहाँ बरात में गए थे। एक पूरा मकान बर्तनों से भरा हुआ है। चाय के सेट हैं, नाश्ते की तश्तियाँ, थाल, लोटे, गिलास। जो लोग नित्य खाट पर पड़े हुक्का पीते रहते थे, बड़ी तत्परता से काम में लगे हुये हैं। अपनी उपयोगिता सिद्ध करने का ऐसा अच्छा अवसर उन्हें फिर बहुत दिनों बाद मिलेगा। जहाँ एक आदमी को जाना होता है, पाँच दौड़ते हैं। काम कम होता है, हुल्लड अधिक। जरा-सी बात पर घंटों तर्क-वितर्क होता है और अंत में वकील साहब को आकर निर्णय करना पड़ता है।”

विवाह की तैयारियों के वर्णन के बाद बाबू उदयभानुलाल की पत्नी कल्याणी के माध्यम से प्रेमचंद ने बारातियों द्वारा किये जाने वाले नाज-नखरों का भी चित्रण देखिए—“जब से ब्रह्मा ने सृष्टि रची, तब से आज तक कभी बारातियों को कोई प्रसन्न न रख सका। उन्हें दोष निकालने और निंदा करने का कोई न कोई अवसर मिल ही जाता है। जिसे अपने घर सूखी रोटियाँ भी मयस्सर नहीं, वह भी बरात में जाकर तानाशाह बन बैठता है। तेल खूशबूदार नहीं, साबुन टके सेर का जाने कहाँ से बटोर लाए, कहार बात नहीं सुनते, लालटेन धुँआ देती है। कुर्सियों में खटमल है, चारपाइयाँ – ढीली हैं। जनवासे की जगह हवादार नहीं। ऐसी हजारों शिकायतें होती हैं।” भाई, यह तेल तो स्त्रियों के लगाने लायक है, हमें तो सादा तेल चाहिये, जनाव ने यह साबुन नहीं भेजा है, अपनी अमीरी की शान दिखाई है, मानों हमने साबुन देखा ही नहीं। ये कहार नहीं यमदूत है, जब देखिए सिर पर सवार। लालटेन ऐसी भेजी है कि आँखें चमकने लगती हैं, अगर दस-पाँच दिन इस रोशनी में बैठना पड़े, तो आँखें फूट जाए, जनवासा क्या है, अभागे का भाग्य है, जिस पर चारों तरफ से –झोंके आते रहते हैं।”

अकस्मात् उपन्यास में कुछ घटनाएँ ऐसी घटती हैं कि बाबू उदयभानुलाल की मृत्यु हो जाती है और निर्मला का विवाह टूट जाता है। परिवार पर आर्थिक संकट आ जाने के कारण परिवार के सदस्य पहले ही साथ छोड़कर जा चुके थे, अतः पर्याप्त दहेज न होने के कारण निर्मला का विवाह अन्त में वकील साहब से करना तय हो जाता है जिनकी पिछली बीवी का स्वर्गवास हो गया है और उनसे उनके तीन बच्चे हैं। बड़ा लड़का मंशाराम, उससे छोटा जियाराम एवं सबसे छोटा सियाराम। दहेज आदि की वकील साहब द्वारा कोई माँग नहीं की जाती है। परिवार में वकील साहब व उनके तीन बच्चों के अलावा उनकी विधवा बहन रुकमिणी रहती है। दहेज की माँग न होने के कारण निर्मला का विवाह वकील साहब से हो जाता है। वकील साहब का जरा वर्णन देखिए—“वकील साहब का नाम था मुंशी तोताराम। साँवले रंग के मोटे ताजे आदमी थे। उम्र तो अभी चालीस से अधिक न थी पर वकालत के कठिन परिश्रम ने सिर के बाल पका दिये थे। व्यायाम करने का अवकाश न मिलता था। यहाँ तक कि कभी कहीं घूमने भी न जाते, इसलिये तोंद निकल आई थी। देह के स्थूल होते हुये भी आए दिन कोई न कोई शिकायत रहती थी। मंदाग्नि और वबासीर से तो उनका चिरस्थायी संबंध था। अतएव बहुत फूँक-फूँककर कदम रखते थे।”

अब जिस पुरुष की अवस्था ऐसी होगी उसके साथ किसी नवयौवना का दाम्पत्य जीवन खुश कैसे हो सकता है। आज भी हमारे

देश में कई निर्मलाएँ, इसी तरह के पुरुषों से दहेज न दे पाने के कारण गले में बाँध दी जाती हैं और अन्त में घुट-घुटकर मर जाती हैं। मुंशी तोताराम निर्मला को खुश रखने के लिये हर संभव प्रयास करते थे, परन्तु जो व्यक्ति बाप की उम्र का हो उसके साथ मेल कैसे हो सकता है। अतः निर्मला मुंशी जी से कटी-कटी रहती थी। निर्मला की घर में अगर किसी से पटती थी तो वह था मुंशी तोताराम का बड़ा लड़का मंशाराम, जो अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता था व निर्मला के हमउम्र ही था। निर्मला मंशाराम से अंग्रेजी पढ़ती थी, परन्तु मुंशी जी का यूँ मंशाराम से अंग्रेजी पढ़ना व साथ में उठना बैठना पसंद न आता, वह उन दोनों को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। इसी शक की वजह से तोताराम मंशाराम को हॉस्टल में डाल देते हैं।

हॉस्टल में डाले जाने का कारण मंशाराम समझ जाता है तो उसे बड़ी ग्लानि होती है व खाना पीना छोड़ देता है, अन्त में तबीयत खराब होने के कारण वह मृत्यु को प्राप्त होता है। इस घटना से निर्मला को बहुत शोक होता है एवं इसके लिये कहीं न कहीं वह अपने आप को जिम्मेदार मानती है। तोताराम भी दुःखी रहने लगते हैं। तोताराम का मंझला पुत्र जियाराम इस घटना के लिये निर्मला को जिम्मेदार ठहराता है, इस कारण एक रात वह निर्मला के सारे गहने चोरी कर दोस्तों के साथ मिलकर सभी गहने बाजार में बेच देता है। चोरी का भेद खुल जाने के डर से अन्ततोगत्वा वह आत्महत्या कर लेता है। सबसे छोटा पुत्र सियाराम घर से भागकर साधु बन जाता है। इन सब घटनाओं से निर्मला अत्यधिक परेशान व व्यथित रहने लगती है। तोताराम भी सियाराम को –सजयूँ–सजयने के लिये घर से चले जाते हैं। अन्त में जिन्दगी से जू–हजयते हुये निर्मला भी मृत्यु को प्राप्त होती है। जब घर से निर्मला की लाश निकाली जाती है, तभी तोताराम घर लौटकर आ जाते हैं। अन्त में हम कह सकते हैं कि जिन पाठकों ने प्रेमचंद के इस लघु उपन्यास को नहीं पढ़ा है वे एक बार अवश्य इसे पढ़ें, तो पाठक स्वयं ही अंदाजा लगा सकते हैं कि मुंशी जी ने कितने पतें की बात इस उपन्यास में कही है।

इस संबंध में अमृतराय जी के विचार जानना आवश्यक है, वे इस उपन्यास के संबंध में अपनी पुस्तक कलम के सिपाही में कहते हैं कि—“इतनी सच्ची, मार्मिक, खासकर औरतों के दिल को भाने वाली कहानी मुंशी जी ने दूसरी नहीं लिखी। पढ़ने वाले दहल उठे, रो-रो पड़े।” कैसा डरावना आईना उन्होंने समाज के सामने उठाकर रख दिया था। हर रोज जो इतने अनमेल ब्याह होते हैं, पैसे की मजबूरी से जवान लड़की वृद्ध आदमी के गले बाँध दी जाती है, देखो उसका क्या हश्र होता है। देखते सब हैं, कहता कोई नहीं। मुंशी जी ने कह दिया, और बहुत डूबकर कहा।” (प्रेमचंद: कलम का सिपाही-अमृतराय, पृष्ठ: 394) कितना सटीक वर्णन अमृतराय करते हैं, कह सकते हैं कि इस उपन्यास में उठाया गया मुद्दा आज भी ज्यों का त्यों बरकरार है, इसी कारण इस उपन्यास की प्रासंगिकता में आज भी कोई कमी नहीं आ पाई है।

 **कृष्णवीर सिंह सिकरवार**

हिंदी साहित्यकार, भोपाल
मो. 9826583363



महिला सशक्तीकरण : कितना दूर-कितना पास

बात कुछ वर्ष पूर्व की है ट्रेन में यात्रा के दौरान एक बालिका को असहज स्थिति में देखा वह बच्ची एक सीट से दूसरी सीट बदलती हुई अपने में सिमटी जा रही थी। मुझे बहुत ग्लानि हुई कि मैं उस बच्ची को हिम्मत, ढाँढस और सुरक्षा का कोई आश्वासन दिए बगैर अपने स्टेशन पर उतर गई। घर आकर मेरा मन हुआ कि मैं अपनी सारी डिग्रियों को आग के हवाले कर दूँ क्योंकि उन में सिर्फ उन उत्तरों की गंध थी जिन्हें मैंने



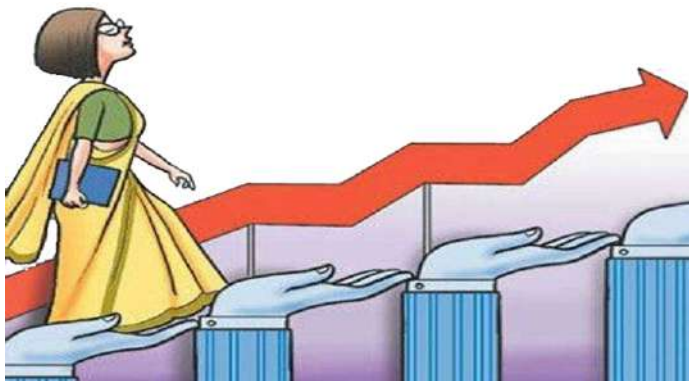
परीक्षा पास करने के लिए याद भर किया था। ज़िंदगी के असल प्रश्नों के उत्तर किसी पुस्तक किसी मार्कशीट या प्रमाणपत्र में नहीं लिखे होते। बस! रोज़ नए अनुभव बटोरो और एक पोथी तैयार करो पर ज़िंदगी हर दिन नए सवाल सामने रख देती है। मुझे लगता है कुछ प्राकृतिक अंतरों को छोड़ दिया जाए तो 'स्त्री' व 'पुरुष' चेतना के स्तर पर एक जैसे ही हैं समस्त गड़बड़ तब शुरू हुई जब स्त्री की शारीरिक कोमलता के कारण उसे केवल शरीर और पुरुष को बुद्धि का पर्याय मान लिया गया। प्रकृति को अपना व्यापार आगे बढ़ाना था, अतः स्त्री शरीर का लचीला होना एवं उसके मन में भावनाओं का अतिरेक होना जरूरी था, नहीं तो नए जीव को उत्पन्न करने एवं उसके पालन-पोषण करने जैसा नाजुक और श्रम साध्य कार्य संभव नहीं हो पाता किंतु इस अस्थायी स्थिति को मृत्युपर्यंत बनाए रखना प्रकृति की पवित्र कार्यप्रणाली में कुटिल इंसानी हस्तक्षेप है।

कहते हैं किसी बच्चे को यदि बार-बार पीटा जाए तो वह ढीठ हो जाता है और यह भी कहा जाता है कि सोने को जितना तपाया जाए उसकी आभा उतनी ही निखरती है। स्त्री ने इन दोनों ही कहावतों को अपने-अपने ढंग से परिभाषित और चरितार्थ किया। जिन महिलाओं ने स्वयं को केवल 'देह' समझा उन्होंने समाज को खुली चुनौती दी कि यदि महिला 'केवल' शरीर ही है तो उसी को साधन बनाकर आगे बढ़ा जाए। कॉस्मेटिक्स, परिधान, जेवर एवं घरेलू सामानों के विज्ञापनों एवं उपभोग के ज़रिए इस प्रकार की सोच को खुद कुछ महिलाओं ने ही प्रश्रय दिया और आज की 'सो कॉल्ड' आधुनिक नारी कहलाना पसंद किया। उन्होंने आधुनिकता का अर्थ विचारों की आधुनिकता नहीं

बल्कि 'रहन-सहन' की आधुनिकता समझा दूसरी ओर वे महिलाएं हैं जिन्होंने 'मेधा' का पर्याय बन कर स्वयं को परिभाषित किया। जिनमें डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, टेक्नॉक्रेट, एस्ट्रॉनॉट, सेना, पुलिस, सहित्यकार, बिजनेस वीमन इत्यादि हैं जिन्होंने यह सिद्ध किया कि शारिरिक मापदंडों के खोखले पाएदान पर नहीं बल्कि बल-बुद्धि और कौशल के स्थाई स्तंभ के रूप में भी महिला की पहचान की जा सकती है। शारीरिक बल एवं सौष्ठव के आधार पर खेल जगत में अपनी पहचान बनाने वाली महिलाओं ने सिद्ध किया है कि सही प्रशिक्षण एवं सोच के साथ कोमल शरीर को भी फौलाद बनाया जा सकता है।

यहां 'फेमिनिज़्म' नामक संकल्पना पर विचार करना भी समीचीन होगा फेमिनि के नाम पर समाज में जो मॉडल चल रहा है उसकी अपनी खामियां हैं, बेहद गहरा तात्पर्य रखने वाली इस संकल्पना को मात्र शब्दों का खिलवाड़ बना दिया गया है, और इसे महिलाओं की फ्रीडम जैसे संकुचित अर्थ में देखा जा रहा है जबकि महिलाओं को 'फ्रीडम' जैसी सतही चीज की नहीं बल्कि 'लिबरेशन' जैसी अनमोल सौगात की जरूरत है। यानि एक पलड़े में 'स्वतंत्रता' है तो दूसरे में 'मुक्ति'। स्वतंत्रता का अर्थ है जो चाहें वह करने की आजादी उसमें अच्छा या बुरा सही या गलत माने नहीं रखता बस! अपनी मर्जी का मालिक खुद होना ही इसका अर्थ है जबकि लिबरेशन अर्थात् मुक्ति का अर्थ है सोच को नई उड़ान मिल जाना, सीमित से असीमित हो जाना। रुढ़ियों एवं सड़ी-गली मान्यताओं को मानने की मजबूरी से बहुत-बहुत आगे निकल जाना। जहां किसी का स्त्री या

नारी जीवन को न समझो बेकार, समाज का वास्तव में यही हैं आधार



पुरुष होना मायने नहीं रखता बल्कि यह मायने रखता है कि एक जीवित इंसान के रूप में समाज राष्ट्र व दुनिया को बेहतर बनाने में हमारी क्या भूमिका व योगदान है। इससे भी आगे 'फेमिनिज्म' को और भी दूषित करते हुए इसे स्त्री बनाम पुरुष के संघर्ष की शक्ति दे दी गई यह सरासर गलत है। फेमिनिज्म का असली अर्थ है स्त्री की अपनी पहचान जहां वह आत्मनिर्भर, निर्भय और उन्मुक्त होकर अपने जीवन को अर्थ की गहराई दे और गलाघोंट देने वाले सभी रीति-रिवाजों को बिलकुल छोड़ दे। यह मानव जाति का दुर्भाग्य है कि उसकी आधी से ज्यादा जनसंख्या जिसे स्त्री कहा जाता है को सही मायने में विकसित होने के लिए काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

स्त्री का कोमल एवं भावप्रवण होना पूर्णतः एक प्राकृतिक जरूरत है, जिसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार भी नहीं है फिर भी इन वजहों से बच्चियों एवं महिलाओं को तिरस्कार एवं शोषण का शिकार होना पड़ता है और यह स्थिति न केवल अशिक्षित एवं दूर-दराज के क्षेत्रों तक सीमित है बल्कि यह घर-घर की कहानी है।

यदि वर्तमान स्थिति पर विचार किया जाए तो हमें यह मानना होगा कि महिलाओं के उत्थान एवं विकास की जंग जीतना तो बहुत दूर की बात है यह जंग अभी ठीक से शुरू भी नहीं हुई है। यहां फिर से यह आग्रह है कि यह जंग स्त्री बनाम पुरुष की जंग नहीं है। यह उन तमाम झूठी मान्यताओं के खिलाफ जंग है जिन्होंने हमें सिखाया कि स्त्री का पोषण पर, किताबों पर और संसाधनों पर पहला अधिकार नहीं है। यह जंग जीतने के लिए शिक्षा से बेहतर कोई उपकरण नहीं है यह शिक्षा केवल किताबी शिक्षा नहीं है बल्कि वह असल शिक्षा है जिसमें लड़कियों व लड़कों दोनों को नैतिकता एवं स्वावलंबन की शिक्षा दी जाए ताकि 'दोनों ओर' से ही एक-दूसरे का उपभोग कर लेने जैसी कोई क्षुद्र हरकत न की जाए। इस प्रकार की शिक्षा से बुद्धि को असल मायने में विकसित होने का अवसर मिलेगा और समाज को बेहतर इंसान और दुनिया को बेहतर नागरिक मिलेंगे।

शुरू से ही बालिकाओं व बालकों को पोषण व शिक्षा की समान सुविधाएं दी जानी चाहिए बाद में उच्च तकनीकी संस्थानों में

प्रवेश के समय लड़कियों को ऊंची झलांग लगवाने के शॉर्टकट से हम फिर लिंग आधारित सोच को बढ़ावा देते हैं और इस अवैज्ञानिक व अपुष्ट सोच को प्रश्रय देते हैं कि संभवतया बालिकाओं व बालकों के बौद्धिक स्तर में कोई जन्मजात भेद होता है। सच्चाई यह है कि किसी भी प्राणी को जिस प्रकार के माहौल, संस्कृति और आवश्यकताओं से रू-बरू होना पड़ता है उस प्राणी की सोच एवं व्यक्तित्व वैसा ही आकार ग्रहण कर लेते हैं। महिलाओं को 'घर की रानी' कहलाने के प्रलोभन से बचना चाहिए और मेहनत करके आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनना चाहिए क्योंकि आर्थिक स्वावलंबन के बगैर सामाजिक अधिकारों की बात करना बेमानी है। घर से बाहर जाकर काम करने पर महिलाओं को उन चुनौतियों को समझने में भी आसानी होगी जिनका सामना घर की अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए पुरुष रोज करते हैं। पुरुषों को भी स्त्रियों की भांति असुविधाजनक परिधान और आभूषण पहन कर घर के बुजुर्गों, बच्चों व मवेशियों के लालन-पालन जैसे कार्य करने चाहिए तभी हम समझ पाएंगे कि जीवन को चलाने के लिए सभी कामों की अपनी उपयोगिता है। एक-दूसरे की परेशानियों को समझ कर ज्यादा अच्छी समझ विकसित होगी और जीवन में सौहार्द आयेगा।

महिलाओं के उत्थान में एक बड़ी बाधा घटिया फिल्मों, सोशल मीडिया, मादक द्रव्यों और स्तरहीन किताबों द्वारा फैलाई जा रही वह अपसंस्कृति भी है जिसमें महिलाओं को मात्र एक 'वस्तु' के रूप में पेश किया जाता है, इस क्षेत्र में चाहें जितनी भी आर्थिक संभावनाएं हों महिलाओं को ऐसे कंटेंट पर काम नहीं करना चाहिए। इससे महिलाओं की गरिमा को बहुत ठेस पहुंचती है और इसका खामियाजा उन मासूम बच्चियों और औरतों को भुगतना पड़ता है जो समाज में फैली अश्लीलता का ग्रास बनती हैं।

हाल ही में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में लाल किले की प्राचीर से देश के नाम अपने संदेश में स्वयं प्रधान मंत्री जी ने आह्वान किया कि बातचीत के दौरान उन जुमलों का प्रयोग न किया जाये जिनमें महिलाओं के प्रति भेदी यौन टिप्पणियां होती हैं।

इन सभी समस्याओं का हल नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान से ही संभव है। भारतीय अध्यात्म एवं दर्शन को केंद्र में रखकर बालिकाओं और बालकों दोनों को इस प्रकार दीक्षित किया जाए कि वे अपने आप को हवाओं की दिशा में उड़ने वाला तिनका नहीं बल्कि समाज की अनमोल धरोहर के रूप में देखें।

अर्चना श्रीवास्तव

वरिष्ठ अनुवादक

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय-कोटा

मो.: 8005933870



नहीं सहना है अब अत्याचार, महिला का सशक्तिकरण का यही है मुख्य विचार

नारी और साहित्य

कविवर जयशंकर प्रसाद के सुंदर शब्दों में

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नभ पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।

यू तो सबके जीवन में कोई न कोई कहानी अवश्य होती है। किसी के लंबी, किसी की छोटी, किसी की रोचक, किसी की भावपूर्ण तो कोई भाव विहीन, कोई आक्रमक, तो कोई आकर्षण से परिपूर्ण, कोई ममता से भरी हुई, तो कोई हृदय वेदना से परिपूर्ण। परंतु यह सब भावनाएँ जिसके आस-पास, इर्द-गिर्द घूमती हैं वह है नारी।

परमात्मा ने नारी के रूप में अनुपम काया निर्मित कर सृष्टि को गौरवान्वित किया है। यहां तक कि देवी देवता भी पृथ्वी पर मनुष्य रूप में आकर अपनी लीला करते चले हैं। मनुष्य को जीवन मिले और इस अवसर को यदि सौभाग्य का नाम दिया जाए तो उसे ही नारी कहा जाता है।

आज संपूर्ण सृष्टि में सभी जगह सभी क्षेत्रों में नारी अपना स्थान बना चुकी है। देश की प्रथम नागरिक से लेकर चांद में भी कदम रखकर नारी ने अपने आप को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर लिया है। नारी सृष्टि निर्माता की अद्वितीय रचना है, और जहां तक रचना का विषय है। नारी से सुंदर रचना ना है और ना कोई कर सकता है। बड़े ही सुंदर शब्दों में हम कह सकते हैं -

सुंदर, सौम्य और शील वेदों का है ये कहना।
सृष्टि के विधान में नहीं नारी से सुंदर रचना।।

चित्रकला, भाव अभिव्यक्ति, रंगोली, गृह-सज्जा, अद्भुत पाक कला, और साहित्य के क्षेत्र में सभी अलंकारों से युक्त नारी ही तो है जहां पर कवि की कल्पना बनती संवरती सजती है। श्रृंगार, वियोग, ममता, करुणा, प्रेम, दया से भरी भावना को जब नारी शक्ति अपनी लेखनी पर उतारती है तो संसार की कहानियां यथार्थ रूप ले लेती है।

‘प्रेम दया करुणा ममता पहना उसने गहना।।’

आज साहित्य के क्षेत्र में नारी शक्ति का विशेष योगदान है। अभी हाल में ही हम कोरोना काल से निवृत्त हुए हैं। जहाँ तक एक ओर घर के सभी पुरुष वर्ग का पाक कला की ओर रुझान था, वहीं पर मातृशक्ति ने अपनी कलम की धार को तेज कर समय का सदुपयोग कर, साहित्य के क्षेत्र में अपनी बहुयाता दिखाई है।

आजादी के लड़ाई के समय जो स्वर साहित्य में उभरा। उसे भुलाया नहीं जा सकता। कौन नहीं जानता, ‘महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान, उषा देवी मिश्रा’ आदि।

इनकी लेखनी की अभिव्यक्ति को आज भी हम गाते और सुनते हैं। यह हिंदी साहित्य के लिए चीर स्थिर साहित्य है। सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में -

‘अपने विक्रय भाव का
गूँथ अटपटा सा यह हार।
चढ़ी चढ़ाने उन चरणों पर
अपने हिय का संचित प्यार।’

एक नारी की पीड़ा उसकी आवश्यकता और उसका योगदान कोई पुरुष वर्ग नहीं समझ सकता। परंतु इन सभी की व्याख्या, व्यथा और संसार में उनके प्रति विचारों को सहज सरल रूप में हमारी महिला साहित्यकारों ने मन से, सहजता से उकेरा। मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, चंद्रकिरण सौन रिक्सा, शशि प्रभा शास्त्री जैसे महिला साहित्यकारों की आज भी हमारे समाज में आवश्यकता बनी हुई है। अभी कुछ वर्षों से स्वातः सुखाय ऐसी अनेक महिला साहित्य जगत में पदार्पण कर चुकी हैं जिसे हम परिवर्तन युग भी कह सकते हैं।



आज महिलाओं को किसी चीज को लिखने पढ़ने के लिए किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती उनका ज्ञान उनकी निर्भयता पूर्वक सोच उनके आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षाएँ आज की जरूरत बन चुकी है। पुराने समय से कुछ तो अंतर आया है। अब समाज में कहा जाने लगा है। ‘मेरी बेटी मेरा अभिमान’ क्यों ना हो वर्तमान स्वरूप में देखते ही देखते सभी क्षेत्रों में नारी शिक्षा, राजनीति, चिकित्सा, समाज सेवा, प्रशासनिक अधिकारी और सौंदर्य के क्षेत्र में सदा ही जहां अपना वर्चस्व कायम कर चुकी हैं। वही अपने घर परिवार को समेटे घनी वृक्ष की छाया जैसे परिवार को ममता की डोर से बांध कर रखी हुई है। ममता भरी हृदय और झुकी पलकों से एक मनुहार करते दिखती हैं- ‘एक कदम जो मेरा बढ़ाओगे, सौ कदम स्वयं आगे बढ़ा लूंगी प्रोत्साहन और सहयोग जो दोगे अंतरिक्ष छूकर दिखा दूंगी।’ 1975 अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित हुआ। इसे ऐतिहासिक काल माना गया। इसमें बताया गया

ज्ञान बुद्धि में कम नहीं, अब नारी किसी से कम नहीं

कि स्त्री पैदा नहीं होती उसे बनाया जाता है। जब महिला सशक्तिकरण का दौर शुरू हुआ तो यह साहित्य की दुनिया में महत्वपूर्ण घटना थी। स्वयं की पहचान के लिए महिला ने अनगिनत कठिनाइयों को पार करते हुए आज महिला रचनाकार बड़े बदलाव के साथ आत्मविश्वास से अपनी बात सभी समान नागरिक के रूप में रखती है।

दोहरी लड़ाई लड़ते हुए हिंदी साहित्य में महिला रचनाकार अपने सुलझे व्यक्तित्व, गंभीर मानसिकता, दृढ़ संकल्प और भावनात्मक रूप से जुड़ी हर मापदंड पर खरी उतरती है। भारत की प्रथम महिला लेखक कथाकार साहित्यकार राजेंद्र बाला घोष को कौन नहीं जानता। जब महिला लिखती है तब उसे बिन मांगे सलाह कहा जाता है। 1960 के आसपास तब इसे लोरी पुराण कहा जाता था। अनामिका, वंदना राग, गीताश्री, कृष्णा सोप्टी, मैत्री पुष्पा, प्रभा खेतान, राखी सेठ, सभी महान लेखिकाएं हैं। गीता जौहरी आज प्रकाशक के रूप में प्रसिद्धी हासिल कर चुकी है।

हालांकि आज भी मुख्यधारा से महिला साहित्यकारों को अलग कर दिया जाता है। अभी जो चल रहा है वह महिला साहित्यकार का काल है। निरंतर सभी महिलाएं संघर्ष कर रही हैं। हमारे हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम मीराबाई भक्ति रस से प्रेम समर्पण की भाव को हिंदी साहित्य में लिखती थी। परंतु समाज के मूर्धन्य विद्वानों ने उसे भक्ति रस से जोड़कर भगवान से मुक्ति का मार्ग बताने लगे। आज की नारी सदियों से साहित्य लिखते चली आ रही है। आज इतने सालों बाद भी लेखन की चुनौतियां बनी हुई हैं। आज साहित्य में यह भाव होना चाहिए कि पाठक के मन में क्या बात है और क्या कहना चाह रहा है ना कि वह स्त्री है या पुरुष। संघर्ष आज भी बहुत बना हुआ है कि यह महिला रचनाकार है जो सिर्फ लोरी ममता या गीत भजन लिख सकती है। भारत के सामान्य जन समुदाय नहीं बल्कि मुंडा आदिवासी समुदाय की एलिस एक्का हिंदी में कथा साहित्य लिखने वाली भारत की प्रथम महिला आदिवासी साहित्यकार है। जिन्होंने अंग्रेजी में स्नातक तक की पढ़ाई की थी।

भारत की आठ महान कवियित्री विभूतियां हैं महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, अमृता प्रीतम, अनामिका, मीराबाई, सरोजिनी नायडू, तेजी ग्रोवर, पद्मा सचदेवा महिला साहित्यकारों की कोई कमी नहीं है परंतु आज साहित्य के क्षेत्र में उन्हें अपनी जगह बनाने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। फिर भी नारी घर के कामों और दोहरी भूमिका निभाती हुई चाहे वह नौकरी पेशा हो या फिर ग्रहणी अपनी लेखनी को तेज रख साहित्य में अपने जगह बना चुकी है। महिला साहित्यकारों को हार्दिक शुभकामना देते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य और सुंदर भाव लिखने के लिए सादर शत शत नमन।

सिद्धेश्वरी सराफ (शीलू)

हिंदी साहित्यकार, जबलपुर
मो.: 7354671605



सृष्टि का प्रारम्भ है बितिया,
परिवार को साकार करे है बितिया।
नए-नए रिश्ते बनाने की नींव है बितिया,
इन रिश्तों को प्यार में बाँधने की डोर है बितिया ॥



बेटी के जन्म का जब हो स्वागत,
ऐसा लगे जैसे प्रकृति हो शरणागत।
ईश्वर करे उसकी आंखें कभी नम न हों,
उसकी खुशियां कभी कम न हों ॥

सबकी बितिया

बितिया नयनों की ज्योति है,
निश्छल मन की परी जैसी है।
आँगन में चिड़िया की रौनक लाती है बितिया,
अंधकार से उजियारा लाती है बितिया ॥

असीम प्यार देती है बितिया,
बचपन भूलने नहीं देती है बितिया।
घर में सबको अपना समझती है बितिया,
समझो भगवान का आशीर्वाद है बितिया ॥



घर में बितिया लगे देवी का रूप,
खुशियाँ अपार बाँटे जैसे स्वप्न स्वरूप।
घर होने का सुखद एहसास है बितिया,
उसके आशीर्वाद ने सपनों को साकार है किया ॥

इंद्रधनुष के रंगों जैसी है बितिया,
सभी रिश्तों को निभाती है बितिया।
कठिनाइयों में संबल देती है बितिया,
जैसे शक्तिस्वरूपा का अवतार है बितिया ॥

बितिया जब पढ़ेगी,
तो विकास यात्रा बढ़ेगी।
आज बितिया पढ़कर रोजगार करती है,
और वह बेटों से कम नहीं है ॥

आज भारतीय रेल की पहचान हैं बितियाँ,
रेलगाड़ियाँ भी चलाती हैं बितियाँ,
मंडलों-जोनों में निर्णयों में शामिल हैं बितियाँ,
नित भारतीय रेल को ऊँचाइओं तक पहुँचा रही बितियाँ ॥

आज देश की शान हैं बितियाँ,
हर क्षेत्र में परचम लहराएँ बितियाँ,
चाहे हो चिकित्सा, व्यापार, प्रबंधन, इंजीनियरिंग शिक्षा,
आज विश्व में पहचान बना रही हैं देश की बितियाँ ॥



**बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ**



संजीव तिवारी

मु.सं. एवं दूर. इंजीनियर,
योजना एवं डिजाइन, प.म.रे.जबलपुर

नारी है सर्वस्व विधाता, उससे ही सारा संसार जीवन पाता

क्रांतिज्योति - सावित्री बाई फुले

19वीं सदी कालचक्र की करवटों को बदलने सामाजिक ढांचे की जर्जर ईंटों के दरकने ... वर्षों से कुचले जा रहे, अपने ही धर्म के निचले और अति निचले तबकों के पुनरुद्धार की आधारशिला रखने के लिए इतिहासकारों के बीच अपनी विशेषता दर्ज कराती है। मनुवादी वर्ण व्यवस्था अंग्रेजी शासनकाल में अवसरवादी व्यवस्थाओं के साथ अपना स्वरूप बदल रही थी। हिंदू धर्म शहरों में उदार था पर गांव में जातिवाद, छुआछूत धर्मांधता के नवीन वस्त्र पहन अपने ही भाईयों के बीच खाई गहरा रहा था। अंग्रेजी शासन ने इसकी कुछ बुराईयों को खत्म करने में कामयाबी हासिल करते हुए अंग्रेजी शिक्षा का विस्तार किया।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हिंदुस्तानी पुरुषों द्वारा शनैः शनैः स्वीकार हो चला था परंतु मनुष्यों में शूद्र समझी जाने वाली स्त्री इस ज्ञान यज्ञ के हवन कुंड की धूम्र से भी कोसों दूर खड़ी अपनी आहुति के प्रसाद से वंचित शोषित उपेक्षित थी। समस्त स्त्री जाति की प्रार्थना से प्रकृति भी सजल हो गई उसकी करुणा के प्रतिफल से श्री खंडोजी नेवैसे और लक्ष्मी नेवैसे के घर महाराष्ट्र के सतारा जिले के नया गांव में शूद्र परिवार में 3 जनवरी 1831 को भारत की सरस्वती के रूप में पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने जन्म लिया।

सावित्रीबाई जन्म से ही मेधावी, जिज्ञासु, साहसी और दयावान थीं। वह बचपन में अपने माता-पिता से जिज्ञासा और कौतूहल भरे प्रश्न पूछती और उनके समाधान को वैज्ञानिक और तार्किक कसौटी पर कस कर ही संतुष्ट होती थी। साहसी तो इतनी थी कि एक बार बचपन में अपने साथियों के साथ खेलते हुए उन्हें अचानक पेड़ पर चढ़े साथी के रौने की आवाज आई यह सुनकर वह स्वयं पेड़ पर चढ़ गई। पता चला कि उस पेड़ पर सांप था वह कौतूहल वश उसे उतार ले आई और दूर जंगल में छोड़ आई। उनका मन आरंभ से ही हर पल उत्साहवश कुछ नया और विशिष्ट करने के लिए लालायित रहता। परिवार समाज और संपूर्ण जगत के प्रति उनकी उदारता ने उनका प्रारब्ध मात्र नौ वर्ष की आयु में ही सन 1940 में पुणे के श्री गोविंदराम फुले के 13 वर्षीय पुत्र महान समाज सुधारक श्री ज्योतिराव फुले से जोड़ दिया। इस छोटी-सी उम्र में भी सामान्य बालिका के विपरीत उनका घर के कार्यों की अपेक्षा किताबों में ही अधिक मन रमता।

वे अपने पति श्री ज्योतिराव फुले की किताबों को देखकर उसे समझने का प्रयास करती हैं। उनकी जिज्ञासा देखकर समाज सुधारक श्री ज्योतिराव फुले ने उन्हें शिक्षित कर स्त्री शिक्षा के सूत्रपात का विचार किया। उन्होंने अपनी पत्नी को शिक्षित करना आरंभ किया। सावित्री बाई पतिधर्म परायण थीं। उन्होंने जल्दी ही अर्जुन की भांति शिक्षा को आत्मसात कर लिया। शिक्षण प्रशिक्षण के लिए अहमदनगर संस्थान और पुणे के नारमन स्कूल में भेजा गया। ज्योतिराव थॉमस पाईने के विचारों से बहुत प्रभावित थे। वे समस्त मनुष्यों में समभाव और समानता के समर्थक थे। उन्होंने स्त्री जाति के उत्थान के लिए शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ औजार माना और 3 जनवरी 1948 में पुणे के भिंडेवाड़ा में विभिन्न जातियों की 9 बालिकाओं के साथ बालिका विद्यालय की

स्थापना की। इस विद्यालय में सावित्रीबाई फुले प्राचार्या बनीं। उनके इस कार्य में उनके पारिवारिक मित्र श्री हसन शेख और उनकी पत्नी फातिमा शेख ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी सहायता से न केवल उन्हें विद्यालय के लिए स्थान मिला, वरन उन्हें फातिमा के रूप में एक सहायक शिक्षिका भी मिली। एक ही वर्ष में फुले दम्पति ने पांच अन्य विद्यालय भी खोले। इनके इस कार्य के लिए तत्कालीन सरकार ने उन्हें सम्मानित भी किया। आप एक श्रेष्ठ मराठी कवयित्री थी उन्हें मराठी भाषा की आदि कवयित्री भी कहा जाता है।



बालिका विद्यालय चलाने के दौरान उन्हें अनेक कष्टों और बाधाओं का सामना करना पड़ा। जब वे विद्यालय जाती तो उन पर गोबर, कीचड़, पत्थर आदि बरसाए जाते थे, धमकियां दी जाती थी, परंतु उन्होंने इन सब का डटकर मुकाबला किया। वह घर से एक थैले में अतिरिक्त साड़ी रखकर चलतीं और विद्यालय जाने पर उसे बदल लेती थीं। तत्कालीन समाज विरोधियों ने उनके इस महान कार्य में बाधा पहुंचाने का बहुत प्रयास किया। यहां तक कि उनके ससुर श्री गोविंदराव जी को समाज के भय से दोनों पति-पत्नी को घर से निकाल देना पड़ा।

प्रौढ़ शिक्षा का प्रादुर्भाव- सावित्रीबाई ने महसूस किया कि पिछड़े वर्ग में शिक्षा का प्रसार ना होने के कारण अभिभावक अपने बच्चों को पाठशाला भेजने में संकोच करते हैं। अतः उन्होंने अपने पति श्री ज्योतिराव से इस विषय पर चर्चा कर के समाधान हेतु अभिभावकों को भी शिक्षित करना आरंभ किया, जिससे प्रौढ़ शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ।

पुस्तकालय की स्थापना- पूना संडे ऑब्जर्वर 29 मई 1952 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार सावित्रीबाई के विद्यालय में बालिकाओं की संख्या सरकारी विद्यालय पुणे में पढ़ने वाले बालकों से 10 गुना अधिक थी। इसका कारण उनके अध्यापन की रोचक पद्धति थी। बालिकाएं, बालकों से उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही थीं। स्कूल के कार्यक्रम के दौरान एक छोटी बच्ची मुक्ता ने पुरस्कार देने के बजाय पुस्तकालय की स्थापना की मांग की। इस प्रकार पुस्तकालय की स्थापना आरंभ हुई।

निराश्रित विधवा आश्रम की स्थापना- एक बार विद्यालय से अपने पति के साथ लौटते हुए उन्होंने एक विधवा ब्राह्मणी काशीबाई को

शिक्षा को बना हथियार, नारी करेगी अब शोषण पर वार

आत्महत्या का प्रयास करते हुए पाया। उन्होंने उसे रोका और कारण पूछा तो पाया कि वह गर्भवती थी और समाज के भय से आत्महत्या को मजबूर थी। उस समय विधवा विवाह की प्रथा नहीं थी। उन्होंने उसके बच्चे को गोद लेने का निर्णय लिया, उसे अपने घर में आश्रय दिया और इस प्रकार निराश्रित विधवाओं के लिए एक आश्रय स्थल के रूप में आश्रम की स्थापना की। गोद लिए पुत्र का नाम यशवंतराव रखा और आजीवन स्वयं को संतति से वंचित रखा।

विधवा केश वपन आंदोलन- तत्कालीन समय में समाज में विधवा स्त्रियों का मुंडन कराया जाता था। उन्होंने सर्वप्रथम इसका विरोध किया और अपने आश्रम में रहने वाली विधवाओं के केश वपन से इंकार कर दिया। संपूर्ण नाई जाति ने उन्हें सहयोग किया और आंदोलन किया कि इस निकृष्ट कार्य में वे सहयोग नहीं देंगे और न ही हम ऐसे परिवारों में किसी भी पुरुष की दाढ़ी का केश कर्तन करेंगे। उनका यह आंदोलन बहुत सफल रहा।

अंतर जाति विवाह को मान्यता- बात सन् 1868 की है, सावित्रीबाई नया गांव गई थीं। जहां उन्हें ब्राह्मण गणेश के मल्हार लड़की सरजा से प्यार की बात पता चली। सरजा 6 माह की गर्भवती थी और इन दोनों को लेकर गांव में दंगे का माहौल बन गया था। उच्च जाति के लोग इनकी हत्या पर आमादा थे। सावित्रीबाई ने उनका बीच बचाव किया और कहा 'आप इनकी हत्या नहीं कर सकते। ब्रिटिश कानून इसके लिए बहुत कड़े हैं।' और दोनों को पुणे अपने पति के पास जीविकोपार्जन के लिए भेज दिया। उनका मानना था कि जात-पात से दूर मानव-मानव एक ही है। समाज में हो रहे किसी भी अन्याय से मेरा कोई लेना-देना नहीं है और सभी चुप रहेंगे तो यह समाज कभी नहीं बदलेगा।

सत्यशोधक समाज की स्थापना- समाज में हो रहे जातिवादी अनाचार, अत्याचार को दूर करने के लिए सन 1873 में ज्योति राव फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। सावित्रीबाई इसकी सक्रिय सदस्य बनी और उन्होंने अपने पति के आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यही नहीं उन्होंने सत्यशोधन विवाह पद्धति की स्थापना की। जिसमें वर-वधू को पंडित के मंत्रों के वचनों के स्थान पर महिलाओं को समानता और शिक्षा देने की शपथ लेनी पड़ती थी और इस प्रकार उनका विवाह संपन्न होता था।

निराश्रित बालक-बालिकाओं के लिए आश्रम की स्थापना- सावित्रीबाई निराश्रित बच्चों के लिए बहुत उदार थीं। उन्होंने दाखवाडी में निराश्रित बालक और बालिकाओं के लिए शिक्षा के साथ-साथ उनके रहने का भी बंदोबस्त किया, इसे एक आश्रम का रूप दिया गया।

महान समाज सेविका- सावित्रीबाई फुले एक महान समाजसेविका थीं। वह मानव जाति के प्रति करुणामय थीं। सन 1877 में महाराष्ट्र में जबरदस्त सूखा पड़ा। भीषण अकाल में मनुष्य पशु-पक्षी सभी अन्न-जल को तरस गए। उनको दाने-दाने को मोहताज, बूंद-बूंद पानी को तड़पते देख उनके हृदय में करुणा का स्रोत फूट गया। उन्होंने

सत्यशोधकों की राहत टीम बनाकर जो कुछ भी उपलब्ध था सब सेवा में लगा दिया। यही नहीं उन्होंने समर्थ लोगों में से श्री पंत और लक्ष्मण शास्त्री को साथ लेकर क्षेत्र का दौरा किया। सूखा राहत के लिए धन एकत्रित किया उसे जरूरतमंदों में वितरित किया। यहां तक कि कलेक्टर को झूठी शिकायत कर गिरफ्तार करवाए गए सत्यशोधकों को मुक्त कराकर ब्रिटिश सरकार से मदद भी प्राप्त की और पीड़ितों की सेवा की।

पति का अंतिम संस्कार- सावित्रीबाई बहुत ही जीवट वाली महिला थी। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया। समाज में कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। आज उनके आदर्शों का अनुसरण करते हुए हम नई पीढ़ी को देख रहे हैं। सन् 1890 में 28 नवंबर को महान संत और समाज सुधारक ज्योतिराव जी का निधन हो गया। उनकी शव यात्रा में घट लेकर दत्तक पुत्र यशवंतराव को चलना था परंतु रक्त संबंधियों ने इसका विरोध किया। तब सावित्रीबाई आगे आई स्वयं घट लेकर शमशान तक गई पति को मुखाग्नि देकर उनका अंतिम संस्कार किया। तत्कालीन समय में स्त्रियां शमशान तक भी नहीं जाती थी। उनका यह साहस दुर्लभ था।

सत्यशोधक सम्मेलन की अध्यक्षता- पति के देहावसान के बाद सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज की कमान संभाली स्वयं अध्यक्षा की। सारे निर्णय उन्होंने बहुत ही बुद्धिमता पूर्ण लेकर के सत्यशोधक समाज का विस्तार किया।

अस्पताल की स्थापना- सन् 1897 में महाराष्ट्र में प्लेग नामक महामारी फैल गई थी। सावित्रीबाई ने अपने पुत्र यशवंतराव को निर्देशित कर प्लेग पीड़ितों के इलाज के लिए एक अस्पताल खुलवाया। यशवंतराव उस समय सेना में नौकरी कर रहे थे। सावित्रीबाई प्लेग के दौरान पूरी तरह से राहत कार्यों में जुटी रहीं। दलित महार बस्तियों में बीमारों की सेवा करते हुए सावित्रीबाई पांडुरंग गायकवाड़ के बीमार बेटे को पीठ पर लादकर अस्पताल तक लेकर आई। लगातार परिश्रम और थकान से कमजोर उनका शरीर इस बीमारी की मार को झेल नहीं पाया और उन्हें प्लेग ने अपने चपेट में ले लिया। जीवन की अंतिम सांस तक वे सेवारत रहीं। महान शिक्षिका, समाज सुधारक, समाज की बहुमुखी प्रतिभा की धनी महासेविका ने 10 मार्च 1897 को महाप्रयाण किया।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की निम्न पंक्तियां उनके जीवन को सही अर्थों में रूपायित करती हैं -

अर्पित हो मेरा मनुज काय ।
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय ॥

डॉ. दमयंती सैनी

सेवानिवृत्त, वरिष्ठ अनुवादक
विद्युत लोको शेड इटारसी
मो.: 7974699665



नारी को दो शिक्षा और सम्मान, तभी बनेगा देश महान



वीरांगना-रानी दुर्गावती

ध्याता है मन शक्ति स्वरूपा, गढ़ मंडला की रानी,
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

राजपूत चंदेल वंश में, जन्मी ओजस्वी एक बाला थी,
पुत्री कीर्तिसिंह राजा की, दुर्गावती नाम की हाला थी।
रणचंडी का अवतार मिला, कालिंजर में बड़ी हुई थी,
खेल-खिलौना छोड़, पिता संग युद्ध भेरी बजाई थी।
रग-रग में साहस, गौरव भाल तलवार दमकती थी,
देख प्रहार दुश्मन खेमे ने, शौर्य कथा लिखी रानी।
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

गढ़ मंडला के राजा दलपत संग ब्याही कुमारी थी,
गोंडवाना की रानी बन, दुर्गा दुल्हन भेष पधारी थी।
स्वीकार नहीं नियति को, राजा संग दुलार दुर्गा का,
नन्हा बालक गोद में छोड़, दलपत ने तोड़ा संबंध दिवानी।
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

हुई अबला अब रानी समझ, दुश्मन ने ललकारा था,
चमक उठी जब तलवार, रानी ने सिंहनी बन हुंकारा था।
बाज बहादुर खड़ा हुआ जब, देखा रण कौशल मस्तानी का,
हुआ परास्त बाजबहादुर, दुर्गा ने जिधर निहारा था।
बनी थी चंडी दुर्गा तब, आंसू अपने सब पोछ-पाछ,
आया नहीं फिर मंडला, लाचार बहादुर शत्रु रवानी।
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

शौर्य गाथा फिर फैल गई, दुर्गावती मर्दानी की,
सरमन हाथी और सेनापति, बने हितैषी अपनी रानी की।
दुर्गावती की गौरव गाथा पीढ़ी गढ़ प्राचीर पर गढ़ती है,
उज्ज्वल दीपों से आशा दुर्गा की अमर समाधि सजाती है।

स्वयं नर्मदा जिसके पांव पखारे हैं,
अनुकरणीय है बलिवेदी यह, सोई हुई जवानी का।
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

विश्वास की प्रखर है ज्वाला, प्रेरणा की ये ज्योति है।
दुर्गा के गौरव साहस से, गर्वित भारत की नारी है,
गांव-नगर-डगर-घर फैली जीवित विस्तृत ख्याति है।
गूँज रहा है स्वर धरा पर, ओजस्वी उसकी बानी,
याद हमेशा आएगी हमको, वीरांगना दुर्गा की अमर कुर्बानी।

नारी का सम्मान सबका परम कर्तव्य है

रानी दुर्गावती एक महानतम वीरांगना थीं, जिन्होंने मातृभूमि और अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। रानी दुर्गावती का जन्म कालिंजर के किले में 5 अक्टूबर 1524 में हुआ था। कालिंजर के राजा कीर्ति सिंह थे। पुत्री का जन्म दुर्गा अष्टमी के दिन होने के कारण उसका नाम दुर्गावती रखा गया था। बचपन से उन्होंने अस्त्र-शस्त्र की विद्या सीख ली थी। सन् 1542 में उनका विवाह गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह के साथ संपन्न हुआ। इनका राज्य क्षेत्र दूर-दूर तक फैला था। राजा संग्राम शाह का राज्य बहुत ही विशाल था, उनके राज्य में 52 गढ़ थे और उनका राज्य वर्तमान मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, भोपाल, सागर, दमोह और वर्तमान छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक फैला था। सन् 1545 में रानी दुर्गावती ने एक पुत्र को जन्म दिया था। पुत्र का नाम वीरनारायण रखा था। सन् 1550 में राजा दलपत शाह की मृत्यु हो गई थी। इस दुःख भरी घड़ी में रानी को अपने नाबालिग पुत्र वीर नारायण को राजगद्दी पर बैठाया, और कालचक्र की क्रूरता के कारण उन्हें जल्द ही राज्य की बागडोर संभालनी पड़ी। रानी दुर्गावती बहुत ही कुशल शासिका थीं। उनके शासन काल में प्रजा बहुत सुखी थी और राज्य की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में जात-पात से दूर रहकर सभी को समान अधिकार दिए, उनके शासन काल में गोंड, राजपूत और कई मुस्लिम सेनापति भी मुख्य पदों पर आसीन थे। रानी दुर्गावती ने वलभ सम्प्रदाय के स्वामी विठ्ठलनाथ का स्वागत किया। रानी दुर्गावती को उनकी कई विशेषताओं के कारण जाना जाता है। वे बहुत सुन्दर होने के साथ-साथ बहादुर और योग्य शासिका भी थीं। दो मुख्य सलाहकारों और सेनापतियों आधार सिंह कायस्थ और मानसिंह ठाकुर की सहायता से राज्य को सफलता पूर्वक चला रहीं थीं। रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में कई मंदिर, इमारतें और तालाब बनवाये थे। इनमें सबसे प्रमुख हैं जबलपुर का रानी ताल जो रानी दुर्गावती ने अपने नाम पर बनवाया, उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरिताल और दीवान आधार सिंह के नाम पर आधार ताल बनवाया।

रानी के राज्य पर अकबर के साथ-साथ मालवा के शासक बाजबहादुर भी अपना अधिकार चाहता था। मालवा के शासक बाजबहादुर ने रानी को महिला जानकर कमजोर समझा और गोंडवाना पर आक्रमण कर दिया। रानी की सेना बहादुरी के साथ लड़ी और बाजबहादुर को युद्ध में परास्त कर दिया। सन् 1562 ई. में अकबर ने जब मालवा पर आक्रमण कर सुल्तान बाजबहादुर को परास्त करके अपनी सीमा बढ़ा ली थी, तब अकबर के आदेश पर उसके सेनापति अब्दुल माजिद खान ने रीवा राज्य पर भी अधिकार कर लिया और

गोंडवाना साम्राज्य को हड़पने की योजना बनाई। अकबर ने रानी दुर्गावती को सन्देश भिजवाया कि वह अपने प्रिय सफेद हाथी सरमन और सूबेदार आधार सिंह को मुगल दरबार में भेज दे, उन्होंने इंकार कर दिया और अपनी सेना को युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया। इधर अकबर ने अपने सेनापति आसफ खान को गोंडवाना पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। आसफ खान एक विशाल सेना लेकर रानी पर आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ा।



एक ओर जहाँ मुगलों की विशाल सेना आधुनिक अस्त्र-शस्त्र से प्रशिक्षित सेना थी वहीं रानी दुर्गावती की सेना छोटी और पुराने परंपरागत हथियार से तैयार थी, उन्होंने अपनी सेना को नरई नाला घाटी की तरफ कूच करने का आदेश दिया, रानी दुर्गावती के लिये नरई युद्ध हेतु सुविधाजनक स्थान था क्योंकि यह स्थान एक ओर से नर्मदा नदी से और दूसरी ओर गौर नदी से घिरा था। रानी ने स्वयं ही पुरुष वेश धारण कर युद्ध का नेतृत्व किया दोनों तरफ से

सेनाओं को काफी नुकसान हुआ शाम तक रानी की सेना ने मुगल सेना को घाटी से खदेड़ दिया और लेकिन दूसरे दिन की लड़ाई में जब रानी अपने हाथी सरमन पर सवार होकर युद्ध मैदान में उतरी थीं। रानी के साथ उनका पुत्र राजकुमार वीरनारायण भी थे, कुंवर वीरनारायण के घायल हो जाने से रानी ने उन्हें सुरक्षित जगह भिजवाने का प्रयास किया। उसी समय एक तीर रानी दुर्गावती के कान के पास लगा और दूसरा तीर उनकी गर्दन में लगा रानी को होश आया तब तक मुगल सेना हावी हो चुकी थी अपने आप को चारों तरफ से घिरता देख रानी ने अपने शरीर को शत्रु के हाथ न लगने देने की सौगंध खाते हुए अपने मान-सम्मान की रक्षा हेतु 24 जून 1564 ई. के दिन अपनी तलवार निकाली और स्वयं तलवार घोपकर अपना बलिदान दे दिया और सदा के लिए इतिहास के पन्नों में अपना नाम स्वर्णाक्षर में लिखा गई। और मरते हुए भी रानी दुर्गावती ने दुनिया को यह बलताया की दुश्मन के आगे शीश झुकाकर अपमान जनक जीवन जीने से अच्छा मृत्यु को वरन करना है।

इस तरह वीरांगना दुर्गावती ने महिलाओं का सिर ऊंचा करते हुए एक इतिहास रचा और इसी से प्रेरणा लेते हुए रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, रानी उदा देवी आदि उनके पद चिह्नों पर चलकर भारतीय इतिहास में अमर हो गईं।

डॉ. आशा रानी, (प्राध्यापक)

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

मो.: 9907883223



‘जब महिला में शक्ति होगी, तभी राष्ट्र की उन्नति होगी।’



महीयसी: महादेवी वर्मा

116 वीं
जयंती विशेष

महादेवी वर्मा की गिनती हिंदी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभ सुमित्रानंदन पन्त, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साथ की जाती है। महादेवी वेदना की गीतकार है, जिसकी अभिव्यक्ति छायावादी शैली में प्रकृति के माध्यम से हुई है।

उनकी माँ ने ही महादेवी को कविता लिखने और साहित्य में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया। निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत के साथ महादेवी वर्मा को छायावाद का एक स्तम्भ माना जाता है। कविताओं के साथ-साथ उनकी प्रसिद्धि गद्य के लिए भी रही। वह चित्रकला में भी निपुण थीं। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किए। उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियाँ हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, श्रृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र आदि प्रमुख हैं।

महादेवी वर्मा का काव्य अनुभूतियों का काव्य है। जिसमें देश, समाज या युग का चित्रांकन नहीं है, बल्कि उसमें कवयित्री की निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। उनकी अनुभूतियाँ प्रायः अज्ञात प्रिय के प्रति मौन समर्पण के रूप में हैं। उनका काव्य उनके जीवन काल में आने वाले विविध पड़ावों के समान है। उनमें प्रेम एक प्रमुख तत्व है जिस पर आलौकिकता का आवरण पड़ा हुआ है। इनमें प्रायः सहज मानवीय भावनाओं और आकर्षण के स्थूल संकेत नहीं दिए गए हैं, बल्कि प्रतीकों के द्वारा भावनाओं को व्यक्त किया गया है। कहीं-कहीं स्थूल संकेत दिए गए हैं—

‘मेरी आहें सोती हैं इन ओठों की ओटों में,
मेरा सर्वस्व छिपा है इन दीवानी चोटों में।’

महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। भक्ति काल में जो स्थान कृष्ण भक्त मीरा को प्राप्त है, आधुनिक काल में वही स्थान महादेवी वर्मा को मिला है। मीरा का प्रियतम सगुण, साकार गिरधर गोपाल है, जिसके प्रति वे समर्पित रही, तो दूसरी ओर महादेवी के प्रियतम असीम निर्गुण निराकार (ब्रह्म) हैं और उनके प्रति वे समर्पित हैं। महादेवी अपने आप में एक जीवन गाथा हैं। महादेवी का प्रसिद्ध गीत, ‘मैं नीर भरी दुःख की बदली’ इस बात का परिचायक है कि यही उनका जीवन दर्शन है जो मीराबाई जैसा ही है। उन्हें साहित्य के अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए— 1934 में सेक्सरिया पुरस्कार,

1942 में द्विवेदी पदक, 1943 में मंगला प्रसाद पुरस्कार, 1943 में भारती पुरस्कार, 1956 में पद्म भूषण, 1979 में साहित्य अकादमी फेलोशिप, 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1988 में पद्म विभूषण।

आधुनिक युग की प्रमुख कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा का नाम विख्यात है। अपनी काव्यात्मक प्रतिभा और दार्शनिक गंभीरता के लिए आधुनिक हिंदी कविता में महादेवी वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रख्यात कवयित्री हैं। महादेवी वर्मा और छायावाद दो ऐसे नाम हैं, जिन्हें एक-दूसरे से अलग कर पाना मुश्किल है। छायावादी काव्य में अपनी अनुभूति की मध्यस्ता, करुणा, प्रेम, रहस्यवाद, चिन्तन की गम्भीरता, मानवतावाद, स्वाधीनता की चेतना, आत्मियता, सौन्दर्य-चित्रण, प्रकृति-चित्रण और विद्रोह भाव जैसे तत्वों से सदैव इनकी रचनाओं को रेखांकित किया गया है। रचनाओं की इन्हीं विशेषताओं के कारण महादेवी को हिंदी साहित्य जगत में एक विराट हस्ताक्षर माना जाता है।

फाल्गुन पूर्णिमा (बसन्तोत्सव) 1907 ई. के दिन जन्मी महादेवी वर्मा उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले से संबंध रखती है, मानवीय संवेदनाओं से सराबोर महादेवी वर्मा ने मानव और मानवोत्तर जीवन दोनों को ही गहरी अनुभूति प्रदान की है और इनके कल्याण के लिए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। महीयसी महादेवी वर्मा एक संवेदनशील साहित्यकार के रूप में अपने भीतर एक गहरी संवेदना का अनुभव करती थीं। जिनकी अभिव्यक्ति के लिए वे खुद से ही संघर्ष करती थीं और अभिव्यक्ति के लिए साहित्य की विविध विशेषताओं का प्रयोग किया। विषय के अनुसार ही कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं का सृजन किया है इसीलिए महादेवी वर्मा का गद्य उनकी कविता से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

प्रासंगिकता की दृष्टि से उनका गद्य साहित्य भी काव्य के समान ही अर्थवान है क्योंकि उनका गद्य भी उनके संवेदनशील कवि-हृदय से ही संभव हुआ है, जिनकी पूर्णतः मौलिक एवं स्वतंत्र सत्ता है। मेरा परिवार संस्मरण महादेवी वर्मा द्वारा रचित है जिसमें मानवोत्तर प्राणियों की कथा को आधार बनाया गया है। मानवोत्तर प्राणियों के साथ करुणा, प्रेम और आत्मीयता से भरा हुआ यह संस्मरण कई बार पाठकों को साहस प्रदान करता है। इस संस्मरण में वर्मा जी ने जीव-जन्तुओं व पशु-पक्षियों के इतने सुंदर पलों को उभारा है कि पाठक शुरू से अंत तक जुड़ाव महसूस करता है। इस संस्मरण में महादेवी वर्मा ने उन सभी जीव-जन्तुओं व पशु-पक्षियों की यादों को उभारा है, जिन्होंने महादेवी जी के जीवन में गति प्रदान की और उनके जीवन के साथी बने। इस

नारी का असली श्रृंगार, सादा जीवन उच्च विचार



संस्मरण में संगृहीत पशु-पक्षी इस प्रकार है -नीलकंठ (मोर), गिल्लू (गिलहरी), सोना (हिरणी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नीलू (कुत्ते) और निक्की (नेवले), रोजी (कुतिया) तथा रानी (घोड़ी)।

इस कृति में प्रत्येक संस्मरण का अपना-अपना महत्व है। प्रत्येक मानवेत्तर प्राणी की अपनी अलग विशेषता, रंगों और लक्षणों का वर्णन किया गया है जिसने प्रत्येक पाठ को अद्भुत बना दिया है। इस प्रकार सब पशु-पक्षियों के संख्या, रंग, विशेष लक्षण, नाम आदि लिखे गये। महादेवी वर्मा की संवेदनशीलता से प्रभावित होकर इलाचन्द्र जोशी लिखते हैं - 'एक साधारण से लघुप्राणी गिल्लू (उनकी गिलहरी का यही नाम है) कि उनके मानवेत्तर जीवन के क्षुद्र कोटेगत मंच से इस सफाई के साथ मानवीय संघ के व्यापक परिपेक्ष में उभारकर उतारती थीं कि सांस को बार-बार रोककर उस नाटक के क्लाइमेक्स की उत्सुकता की पूर्ति के लिए उन्मुख होना पड़ता है।' यही जादू उनकी गौरा (गाय), नीलू (कुत्ता), सोना (हिरणी), दुर्मुख (खरगोश) आदि जीवों के जीवन-इतिहास-चित्रण में व्याप्त पाया जाता है। मेरा परिवार, संस्मरण का हिस्सा निक्की (नेवले), रोजी (कुतिया), और रानी (घोड़ी) की कथा का वर्णन किया गया है। इस संस्मरण में इन पशुओं की अद्भुत मित्रता का परिचय दिया गया है। जो इन पशुओं में आरंभ से अंत तक परस्पर विद्यमान रहती है। इन संस्मरणों में उस समय की कथा है, जब लेखिका बचपन में अपने पिताजी के घर में रहा करती थी और ये तीनों पशु वहीं उनके साथ रहा करते थे। 'मेरा परिवार' संस्मरण में महादेवी जी ने विशिष्ट मानवेत्तर प्राणियों के प्रति अपनी जिस सहज, सौहार्द, और एकांत आत्मीयता की अभिव्यंजना की है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। 11 सितम्बर, 1987 को महादेवी वर्मा का निधन आज के प्रयागराज में हुआ था। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने लिखा था-

**'नीर भरी दुःख की बदली।
मेरा न कभी अपना होना,'
परिचय इतना इतिहास यहीं,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।'**

ये पंक्तियां महादेवी वर्मा की कविता से हैं, जिसका अर्थ यह है कि एक लड़की माटी की गुड़िया के समान है, जिसे अपनी जिंदगी के हर मोड़ पर टूटने और बिखरने का डर है उसकी जिंदगी में परेशानियों का सफर हमेशा चलता रहता है। लंबा जीवन जिया पर ऐसे गई जैसे आज और कल के बीच की ही पूरी घटना रहीं। मेरा शत्-शत् नमन्।

राही विशाल

मुख्य वाणिज्य आरक्षण सुपरवाइजर,
सीहोरा रोड, पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर
मो.: 95898997533



सुन बेटी ताकतवर बनना...



मुसीबतों से कभी न डरना
सबसे आगे कदम बढ़ाना
दुनिया को दमखम दिखलाना
साहस से हुंकार भरना
खुद को मत कमजोर समझना
सुन बेटी ताकतवर बनना....

दुनियां वाले रस्ता रोकेंगे
कमजोर समझकर तुम्हें टोकेंगे
पर तू ना कभी हार मानना
हिम्मत से तू उनसे लड़ना
विजय पथ पर बढ़ते रहना
सुन बेटी ताकतवर बनना....

जुल्म सितम ढहाने वालों को
निर्बल अबला समझने वालों को
आर्मी कमांडों बनकर दिखलाना
मातृभूमि की रक्षा करना
अपनी गौरव गाथा लिखना
सुन बेटी ताकतवर बनना....

कल्पना, सुनीता का
मिशन अधूरा
ग्रह उपग्रह तक जा करना पूरा
जेट फाइटर प्लेन उड़ाकर
मार गिराना, जिसने घूरा
कमजोर नहीं मैं सबसे कहना
सुन बेटी ताकतवर बनना....

प्रधान मंत्री हो या राष्ट्रपति
हर कुर्सी की तू शोभा बनना
पुरुष प्रधान इस समाज में
सर्वत्र अपनी साझेदारी रखना
ऊंचा परचम लहराना अपना
सुन बेटी तू ताकतवर बनना....

मनचले युवा छेड़े तुम्हें तो
तेज़ाब आदि फैके तुझपे तो
घर आकर आंसू न बहाना
प्रतिशोध की ज्वाला बनकर
फूलन देवी सा इतिहास बनाना
सुन बेटी तू ताकतवर बनना....

अगर जरूरत आन पड़े तो
दुनियां उपेक्षित करें तुम्हें तो
दुर्गा, भवानी और माँ काली
बन जाना तू खप्पर वाली
झाँसी सी शौर्य गाथा बनना
सुन बेटी ताकतवर बनना....



दीनबंधु परालिया

लोको पायलट, कोटा मंडल
पश्चिम मध्य रेल, मो. 8003350921

स्त्री का दर्जा सबसे बड़ा, इसका त्याग है सबसे बड़ा

प्रतिभा संपन्न भारतीय महिलाएं

विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों को एक साथ लेकर चलने वाले भारत देश में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से देश का नाम रोशन करने में जिन मातृशक्ति का योगदान रहा है। उनमें से चंद नाम :-

आनंदी बाई जोशी प्रथम भारतीय महिला चिकित्सक, आनंदी बाई का जन्म 31 मार्च 1865 में पुणे में हुआ था। उन्हें बचपन से ही पढ़ने का शौक था, लेकिन उस समय महिलाओं की शिक्षा के प्रति समाज अनुकूल नहीं था। संयोग से इनका विवाह 9 वर्ष की आयु में गोपालराव जोशी से हुआ, जो सरकारी क्लर्क के पद पर थे।



उन्होंने आनंदी बाई की प्रतिभा को पहचान कर पढ़ाई-लिखाई में सहयोग किया। भारत में ही ग्रेजुएशन करवा कर 1883 में आनंदी बाई को अमेरिका के 'मेडिकल कॉलेज ऑफ पेर्विसल्वेनिया' में दाखिला दिलाया और मार्च 1886 में तीन वर्ष बाद मात्र 19 वर्ष की आयु में आनंदी बाई एम.डी. (Doctor of Medicine) की डिग्री पाने में सफल हुईं। इस विशेष उपलब्धि पर रानी विक्टोरिया ने भी उनको बधाई दी थी। तदुपरांत आनंदी बाई ने भारत आकर कोल्हापुर के एडवर्ड हॉस्पिटल में अपनी सेवाएं दीं। 01 फरवरी 1887 को मात्र 21 वर्ष की अल्प आयु में यह प्रतिभा इस संसार से विदा हो गई।

अहिल्या बाई होल्कर 31 मार्च 1725 में महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव चौंढी में अहिल्या बाई का जन्म एक साधारण से परिवार में हुआ था। मराठा शासक मल्हार राव होल्कर ने इनकी प्रतिभा को बचपन में ही पहचान कर अपने बेटे खण्डेराव होल्कर के साथ इनका विवाह करवा दिया। जब इनकी उम्र मात्र 8 वर्ष की थी। खण्डेराव के उग्र स्वभाव को अहिल्या ने सही सुझाव और समझ से एक कुशल युवा शासक बना दिया। अहिल्या बाई बचपन से ही जीव मात्र के प्रति दया भाव रखने वाली स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् शासन संभाल कर जनता की भलाई के लिए कुएं-बावड़ी, सड़क और धर्मशाला आदि का निर्माण करवाया। इन्होंने वे सभी असंभव कार्य किए, जो बड़े-बड़े शासक भी नहीं करवा पाए थे।



वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण इनके प्रयासों से ही संभव हुआ था। इनके पहले कई राजा असफल हो चुके थे, क्योंकि नवाब का शासन रहते हुए वह अनुमति नहीं देता था। इन्होंने जनता के हितार्थ अपनी निजी सम्पत्ति को भी दान कर दिया था। इसी कारण यह सारे मालवा क्षेत्र में आज भी एक देवी के रूप में पूजी जाती हैं। इनको 'पुण्य श्लोक' के नाम से भी जाना जाता है। भारत सरकार ने इन पर 1996 में डाक टिकट भी जारी किया था। इनका देहावसान 70 वर्ष की आयु में 1795 में हुआ था।

वीरांगना लक्ष्मी बाई 19 नवंबर 1828 को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मी बाई के बचपन का नाम मणिकर्णिका उर्फ मनु था। 14 वर्ष की आयु में इनका विवाह झांसी के महाराजा गंगाधर राव से हुआ। इनके पिता ने

बचपन में ही इनको शस्त्र संचालन और घुड़ सवारी करने जैसी शिक्षा दी थी। जो इनके पति की मृत्यु के बाद अंग्रेजों की तानाशाही के विरुद्ध आवाज उठाने के काम आई। अपने पुत्र के अल्पायु में निधन के बाद दामोदर राव को गोद लेना, अंग्रेजों को झांसी पर अधिकार जमाने का एक बहाना मिल गया। लेकिन लक्ष्मी बाई ने इसका विरोध किया और अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ बहादुरी पूर्वक सामना करते हुए अंग्रेजों को कई बार मात दी जो कि 1857 की क्रांति के नाम से जानी जाती है। लेकिन पर्याप्त साधन और सैन्य बल न होने के कारण, नए घोड़े के अड़ जाने के कारण वे वीरगति को प्रभव प्राप्त हुईं। मरते दम तक उन्होंने अपने सैनिकों से अपने मृत शरीर को अंग्रेजों के हाथ न लगने देने की बात कही थी। उनका एक प्रेरणा स्रोत वाक्य आज भी अमर है कि 'मेरे जीते जी मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।'



आशा पूर्णा देवी ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय लेखिका का श्रेय आशापूर्णा देवी को जाता है। इनका जन्म 08 जनवरी 1909 को तत्कालीन कलकत्ता में हुआ था वस्तुतः वह मूलरूप से बांग्ला भाषा की कहानीकार और उपन्यासकार थी। उन्होंने तेरह वर्ष की आयु से लेखन कार्य प्रारंभ किया और अजीवन साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी रही। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी इन्होंने लगभग 200 कृतियों की रचना की थी। जिनमें से अनेक का भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आशापूर्णा देवी को पद्मश्री, टैगोर पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनका देहावसान 13 जुलाई 1995 को हुआ।



पन्ना धाय पन्ना धाय चित्तौड़ के राजा राणा सांगा के पुत्र उदय सिंह की धाय मां थीं। ये किसी राज परिवार की सदस्य नहीं थीं। पुत्र उदय सिंह को मां के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्ना धाय माँश कहलाई। पन्ना का पुत्र चंदन और कुंवर उदय सिंह दोनों हम उग्र थे।



दासी पुत्र बनबीर छल कपट से चित्तौड़ का शासक बनना चाहता था। राणा के वंशजों को मारते हुए एक दिन उदय सिंह को मारने के लिए महल में आया। इसकी सूचना जब पन्ना धाय को मिली तो राजपरिवार की बफादारी निभाने की खातिर उदय सिंह के स्थान पर अपने सगे पुत्र चंदन को पलंग पर सुला दिया। और बिना आंसू बहा, चंदन को तलवार से टुकड़े-टुकड़े होते देखती रही। उदयसिंह को एक सुरक्षित स्थान पर ले जाकर मेवाड़ राज वंश की रक्षा की। धन्य है ऐसी मां, जो इतिहास में सदा-सदा के लिए अमर हो गई और देश को अपनी बफादारी से ऋणी बना दिया।

मदर टेरेसा

‘एग्नेस’ यानि मदर टेरेसा एक रोमन कैथोलिक नन थीं। इन्होंने 18 वर्ष की आयु में अपना घर और देश छोड़ दिया और भारतीय संस्कृति से प्रेरित होकर स्वेच्छा से 1948 में भारत की नागरिकता ले ली थी। एड्स पीड़ितों को घर मुहैया कराने वाली वह पहली महिला थीं। यह अपनी पारंपरिक पौशाक त्यागकर, साड़ी पहनकर लोगों से भीख मांग कर आजीवन गरीबों की मदद करती रहीं। अपने जीवन में सेवा के दौरान इन्होंने कई चमत्कार किए, जिससे लोगों को जिंदगी मिली। इनको नोबल शांति पुरस्कार, भारत रत्न, गोल्डन ऑफ नेशन, रोमन मैगसेसे एवं पद्म श्री आदि कई सम्मानों से नबाजा गया था। इस महान संत का जन्म 1910 एवं देहावसान 5 सितम्बर 1997 को हुआ था।



सरोजिनी नायडू

भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध श्रीमती सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था। आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली एवं भारतीय राज्य (उ.प्र.) की राज्यपाल नियुक्त होने वाली पहली भारतीय महिला थीं। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के बाद वे खुद आगे बढ़कर देश की आम महिलाओं को आंदोलन में शामिल होने, जोड़ने का काम करती रहीं। साथ ही गांधी जी के अनेक सत्याग्रहों में भाग लेते हुए, भारत छोड़ो आंदोलन में जेल भी गई। इन्होंने अंग्रेजी भाषा में कविताएं भी लिखी थीं। इनका देहावसान 2 मार्च 1949 को हुआ।



अरुंधती राय

24 नवम्बर 1961 को जन्मी सुजाता अरुंधती राय अपने उपन्यास ‘द गॉड ऑफ स्माल थिंग्स’ के लिए जानी जाती हैं। जिसे 1997 में बुकर पुरस्कार मिला और वह सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक बन गई। पुरस्कार से प्राप्त राशि को अरुंधती राय ने मानव अधिकारों की सेवा के लिए दान कर दिया था। इसके अलावा इन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, लैनन फाउंडेशन का कल्चरल फ्रीडम एवार्ड, सिडनी शांति पुरस्कार, ऑरवेल पुरस्कार, 2006 में साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं 2011 में गार्मल मेलर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।



कल्पना चावला

अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को करनाल में हुआ था। वे अंतरिक्ष शटल मिशन की विशेषज्ञ थीं और उन्होंने दो बार अंतरिक्ष यात्रा की थी। अंतरिक्ष यात्री बनने से पहले वे नासा की वैज्ञानिक रह चुकी थीं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा करनाल (हरियाणा) में ही हुई थी। इनके पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला एवं माता का नाम संजयोति था।



कल्पना के पिता इनको चिकित्सक या शिक्षक बनाना चाहते थे, लेकिन ये इंजीनियर बनना चाहती थीं। 1983 में वे एक उड़ान ट्रेनर और विमान लेखक, जीन पियरे हैरीसन से मिलीं और कुछ समय उपरांत उनसे विवाह करके 1990 में संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक बन गईं। इनकी पहली अंतरिक्ष यात्रा 19 नवम्बर 1997 को एवं दूसरी यात्रा 16 जनवरी 2003 को हुई थी तत्पश्चात् 5 फरवरी 2003 को भारत के प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि उपग्रहों की मौसम श्रृंखला का नाम ‘METSAT’, ‘कल्पना’ के नाम से होगा। 01 फरवरी 2003 को ‘कोलंबिया अंतरिक्ष’ अभियान में कल्पना चावला अपने सात सदस्यीय अभियान दल के साथ इस दुनिया से विदा हो गईं।

लता मंगेशकर

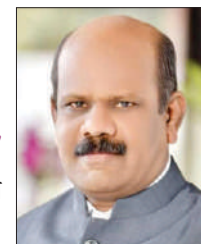
स्वर साम्राज्ञी की उपाधि एवं नाम से विख्यात, सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर 1929 को इंदौर (म.प्र.) में हुआ था। 20 अलग-अलग भाषाओं में 30,000 से अधिक गीत गाने वाली इस महान गायिका ने जब ‘ऐ मेरे वतन के लोगो’ गीत गाया तो भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की आंखों में आंसू आ गए। इस महान शख्सियत को पूरा देश ‘लता दीदी’ के संबोधन से भी आदर देता है। लता जी को गीत गाने के अलावा खाना बनाने का भी बेहद शौक था। गाजर का हलवा उनका प्रिय व्यंजन था। इनके निधन के बाद इनके परिवार वालों ने हलवा खाना बंद कर दिया। लता जी की इच्छानुरूप राजाश्रम खोलने के लिए महाराष्ट्र के नासिक में स्वर गौली फाउंडेशन द्वारा वृद्धाश्रम एवं गौशाला का निर्माण किया गया है। मुंबई यूनीवर्सिटी के सामने महाराष्ट्र सरकार 1200 करोड़ की लागत से लता जी की याद में एक म्यूजियम भी बनवा रही है। यह महान गायिका 06 फरवरी 2022 को हमसे विदा होकर चली गईं।



इसके अलावा पी.टी. ऊषा, पी.वी. सिन्धु, साइना नेहवाल, किरण बेदी, मीरा कुमार, सानिया मिर्जा, बछेन्द्री पाल, संतोष यादव, कर्णम मल्लेश्वरी, गीता फोगट, विनेश फोगट, साक्षी मलिक, एम.सी. मेरीकॉम, मिताली राज, अरुंधती भट्टाचार्य, सुरेखा यादव, एलिस एक्का, अन्ना राजम मल्होत्रा, सितारा देवी, शकुंतला देवी, किरण मजूमदार शाँ, गुलाबो, सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय बच्चन एवं प्रियंका चोपड़ा, जैसी सैकड़ों महिलायें हैं जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य कर देश का गौरव बढ़ाया है। एक मजबूत राष्ट्र रूपी रथ का निर्माण तभी संभव है जब उसके महिला एवं पुरुष रूपी दोनों पहिये बराबर हो। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि

‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवताः ।’

✍️ संत कुमार मालवीय ‘संत’
वरि.तकनीशियन, सडिपुका
भोपाल, प.म.रेल, मो. 9425393492



अपने हौंसलों से नारी भर रही ऊंची उड़ान, ना कोई शिकायत और न कोई थकान

‘नारी-समाज का गौरव’

नारी के गौरव को भली भाँति समझने के लिए इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। इस पृष्ठभूमि के उल्लेख के समय का विवरण निम्नवत है-

वैदिक युग- वैदिक युग में मनीषियों ने स्पष्ट कहा है कि- ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताएं’ कहते हैं कि- जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता लोग निवास करते हैं। इस युग में पुरुषों की तरह महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त था। वे

यज्ञ में शामिल हो सकती थी। गुरुकुल एवं शिक्षा आश्रमों में शिक्षा ग्रहण करती थी। माता-पिता, भाई-बहन के प्रति आदर्श, शिष्टाचार एवं व्यवहारिक आचरणों की शिक्षा ऋषी मुनियों द्वारा प्रदान की जाती थी और पुत्र एवं पुत्रियों के बड़े होने पर स्वयंवर जैसी प्रथाएं तथा सशर्त विवाह प्रथाएं प्रचलित थीं किन्तु उस समय के राजतंत्र में ऋषी, मुनियों तथा कुलगुरुओं का विशेष स्थान रहता था।

ऋग्वेद, उपनिषद आदि में गार्गी, अपाला, घोषा, मैत्रेयी जैसी कई महिलाओं (विदूषियों) के बारे में जानकारी मिलती है। सरस्वती देवी, पतित पावनी, धनदायनी तथा अन्य महान शक्तियों के जीवन परिचय का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि उस समय अनेक ऐसे कार्य थे जिन्हें महिलाएं आगे बढ़कर पूरा करती थीं। जैसे-गाय दुहना, माखन निकालना, भोजन बनाना, साफ-सफाई करना, सूत काटना, बुनना, वस्त्र सिलना, चित्र कला, मूर्ति कला, नृत्य कला एवं साज सज्जा आदि।

मुगल काल- मुगल काल में पुत्री जन्म को अशुभ माना जाता था। कर्नल टाऊ ने अपने लेख में वर्णन किया है कि वह पतन का दिन होता था जब कन्या का जन्म होता था। कई लेखकों ने यहाँ तक वर्णन किया है कि कुछ लोग कन्याओं को जन्म के समय ही मार दिया करते थे।

पर्दा प्रथा मध्य काल में ही प्रारम्भ हुई। मुस्लिम समर्थक

अपनी महिलाओं को बुर्का पहनाकर पर्दे में रखते थे, परन्तु मुस्लिम समाज में नूरजहाँ, रजिया बेगम एवं कुदलिया बेगम एक अपवाद के रूप में देखने को मिलती हैं। जायसी एवं विद्यापति लेखकों ने उ.प्र. व बंगाल में हिन्दू घरों में पर्दे के प्रचलन की बात कही है। जबकि दक्षिण भारत में पर्दा प्रथा नहीं थी। बहुविवाह की प्रथा उस समय विद्यमान थी। कुरान 4 स्त्रियां रखने की छूट देता था।

शिक्षा के

क्षेत्र में मुगलों में उच्च वर्ग की स्त्रियां विदुषी थी तथा कला एवं साहित्य से अनुराग रखती थी। स्कूल और मदरसों पर जाने की अनुमति नहीं थी। किन्तु उच्च घराने की लड़कियों जैसे मीराबाई, नूरजहाँ, जेबुनिसा, आकाबाई, कैनाबाई एवं गुलबन्द बेगम आदि को घर में प्रशिक्षित करने की व्यवस्था की गयी। जिसमें सामाजिक संस्कारों-परम्पराओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक व्यवस्थाओं को उत्तरोत्तर प्रखर बनाने के लिए मार्ग में बच्चों की रुचि को देखकर आगे बढ़ाने का प्रयास करते थे।

स्त्रियों को सम्मान देने का प्रचलन उस समय भी मौजूद था किन्तु प्रतिशत बहुत कम था। जहांगीर ने स्वयं उल्लेख किया है कि घर में जाकर उसने अपनी माँ को अत्यंत आदर के साथ तसलीम और सिजदा किया।

मेवाड़ का राजा राणा संग्राम सिंह द्वितीय नित्य प्रातः माँ को प्रणाम करके भोजन करता था। राजपूत अपनी स्त्रियों को सहधर्मिणी मानते थे। शासन व्यवस्था में अनेक महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान था। जैसे • 1560-64 में अकबर की धाय माहम अनमा का शासन • रानी दुर्गावती का गढ़ गोविन्द पर शासन जिसमें 70 हजार ग्राम शामिल है • चाँदबीबी अहमदनगर की शासक थी • अलीवर्दी खाँ की पुत्री साहब जी - काबुल की गर्वनर थी • नूर जहाँ- जहांगीर के

बराबरी का साथ निभाएं, महिलाएं अब आगे आएँ

शासन में उनका विशेष प्रभाव था (आगरा शासन में) • जीजा बाई/तारा बाई (शिवाजी की मां)– राज्य की शासन व्यवस्था को चलाने में विशेष योगदान (क्योंकि शिवाजी की उम्र 10 वर्ष थी जब शासक बनाया गया), • रजिया सुल्तान का शासन (दिल्ली शासन के रूप में) प्रसिद्ध है।

ब्रिटिश काल– अंग्रेजों के शासन काल में कोई विशेष प्रयास नहीं किये गये, किन्तु महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु 19 वीं सदी में अनेक प्रयास देखने को मिलते हैं।

- ब्रह्म समाज की स्थापना– राजाराम मोहन राय द्वारा (1828 में)
- आर्य समाज की स्थापना–स्वामी दयानन्द सरस्वती (1875 में)
- थियो सोफिकल सोसायटी– मैडम एच.पी. ब्लावात्स्की एवं एम.एस. ओल्काट (1875) • रामकृष्ण मिशन की स्थापना– स्वामी विवेकानन्द (1897 में) • स्त्री शिक्षा में सुधारक– ईश्वर चन्द विद्यासागर (1820–22) • दलित स्त्रियों को शिक्षा– महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले • सती प्रथा का उन्मूलन – 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा।

ब्रिटिश काल में एक अन्तर्राष्ट्रीय सोंच, शिक्षा में वृहत सुधार, एक बुनियादी सुधार एवं प्रयास का संकेत है जिससे पूरे समाज में बौद्धिक विकास होगा और किसी भी विषय वस्तु को सोंचने समझने की क्षमता स्वतः विकसित होगी। सती प्रथा के उन्मूलन में राजा राम मोहनराय के प्रयास प्रशंसनीय रहे हैं। हमारा देश 1947 में जब आजाद हुआ उस समय समस्याओं का अंबार था। जिसमें एक समस्या यह थी कि नारी समाज का उत्थान कैसे हो? इसके लिए आवश्यक कदमों को चिन्हित किया गया।

हमारे देश में आजादी के उपरांत शिक्षा की समस्या को दूर करने हेतु अनेकों सुधारत्मक कदम उठाये गये। सन् 1947 में साक्षरता का कुल प्रतिशत 18%, जिसमें पुरुषों की साक्षरता 12% तथा महिलाओं की साक्षरता 8%, थी। जबकि 2011 की गणना के अनुसार पुरुष साक्षरता 82.14%, महिला साक्षरता 65.46% है। वर्तमान में पुरुषों की जनसंख्या 52% तथा महिला की 48% है। इस समय भारत में कुल विश्वविद्यालयों की सं- 789 तथा 37,204 कालेज हैं। जबकि महिला विश्वविद्यालयों की संख्या 18 है। भारत में प्रथम महिला विश्वविद्यालय 1916 में श्रीमती नाथी बाई दामोदर धार्केसेय, द.मुम्बई तथा विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय IGNOU खोला गया जिसमें 35 लाख विद्यार्थी हैं।

भारत में स्वतंत्रता के समय आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी जिसमें उड़ीसा, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश तथा बिहार में महिलाओं की स्थिति

दयनीय थी। महिलाओं को संरक्षण प्रदान करने की अत्यंत आवश्यकता थी। इसमें किसी बड़े मंच/पंचायत आदि के समक्ष अपनी आवाज/अपनी बात रखना बहुत मुश्किल था। जो महिला आगे बढ़कर बड़े साहस के साथ आकर आवाज उठाती थी, समाज उसे कुलटा (जिसमें पुरुष के जैसे लक्षण हों) कहता था, जो अशोभनीय था।

संसाधनों की समस्या ऐसी थी कि किसी कदम को उठाने के लिए शून्य से ही प्रयास करना था। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को दूर करने के लिए कोई चिकित्सालय नहीं थे, जिसमें स्त्रियां रोग विशेषज्ञ आदि की व्यवस्था हो। जो भी बीमार हो जाती थी उसका अन्त मृत्यु के बाद ही होता था। कुप्रथाओं, रूढ़वादियों को दूर करने हेतु समय-समय पर अनेक कदम उठाये गये हैं जिन्हें समाज ने अब तक पीछे छोड़ दिया है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद-15 एवं 14 में पुत्र एवं पुत्री को पैतृक सम्पत्ति में समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। समाज में पुरुषों के साथ स्त्रियों को समान अधिकार प्रदान कर सरकारी नौकरी में 30 प्रतिशत आरक्षण तथा शिक्षा विभाग में 50 प्रतिशत आरक्षण महिलाओं को देकर बराबरी का स्थान दिया गया है।

सभी महिलाओं में जागरूकता बढ़ाने के लिए समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, वाट्सएप ग्रुप, एस.एम.एस. तथा सरकारी विभागों के द्वारा सूचना पटल एवं विज्ञापन में विज्ञप्ति देकर तथा वेबसाइट के माध्यम से गुगल सर्च इंजन में जाकर जानकारी प्राप्त करने हेतु जागरूकता अभियान चलाए गए। जिसमें सभी महिलाएं अपना अधिकार पहचाने तथा अपने हक को पाने हेतु लड़ाई लड़ सकें।

वर्तमान सरकार महिलाओं के उत्थान/प्रगतिशील बनाने हेतु अनेक योजनाएं चला रही हैं जो निम्न हैं–

- केन्द्र सरकार द्वारा–बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ • सुकन्या समृद्धि योजना • बालिका समृद्धि योजना • CBSE उड़ान स्कीम– माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों के लिए प्रोत्साहन राष्ट्रीय योजना
- धन लक्ष्मी योजना– • राज्य सरकार द्वारा • हरियाणा की लाड़ली स्कीम • मध्यप्रदेश की लाड़ली लक्ष्मी योजना • लाड़ली बहना योजना • कर्नाटक भाग्य श्री योजना, • महाराष्ट्र सरकार की मांजी कन्या भाग्यश्री योजना • पश्चिमी बंगाल की कन्या श्री प्रकल्प योजना।



हरीशंकर मिश्र

सीनि. से. इंजी.,यांत्रिक विभाग,
मुख्यालय, जबलपुर, प.म.रे.
मो.: 9752415432



‘एक नहीं दो-दो मात्राएं, नर से बढ़कर नारी है।’

कहानी

पुनर्जीवन

यशोदा के इस निर्णय से समूचा गांव हैरान था। सभी लोग यही कह रहे थे, बुढ़ापे में पंडिताईन सठिया गई है। नहीं तो भला कोई ऐसे सोच सकता है। पर यशोदा तो अपनी बात से टस से मस नहीं हो रही थी। हालांकि देखा जाए तो बात कुछ भी नहीं थी। छोटी सी बात थी, पर चूंकि गांव छोटा सा था, रोजाना कुछ विशेष घटना नहीं था, तो कुछ भी घट जाए तो बहुत दिनों तक गांव की हवा में वही मुदद् तैरता रहता था। हुआ यूं कि यशोदा की जमीन का सरकार की तरफ से पचास

हजार रूपए का मुआवजा मिला था। इतनी बड़ी रकम और अकेली यशोदा। पंडित जी कभी के स्वर्ग सिधार चुके थे। एक बेटा था जो कि बहुत दूर कहीं छोटी-मोटी नौकरी करता था। यशोदा के पास थोड़ी-सी जमीन थी, जिसमें एक छोटा सा मंदिर था, वहीं पास में दो



कमरे बने हुए थे व सामने एक सूखी बावड़ी थी, जिसे गांव भर के लोग पंडितजी की बावड़ी कहकर पुकारते थे। सभी लोग अलग-अलग बातें कर रहे थे। कोई ब्याज पर चलाने के लिए कह रहा था, कोई बैंक में जमा करने के लिए, कोई कमरे बनाकर किराए पर देने की तो कोई बेटे के नाम पर एफ.डी. कराने को कह रहा था। पर यशोदा का मन कहीं ओर विचरण कर रहा था। वो चाह रही थी, सारा पैसा बावड़ी पर लगा दे, थोड़ा और गहरा करा दे तो शायद पानी निकल आए। वो भी क्या करे, सारा जीवन बावड़ी के इर्द-गिर्द ही तो बीता है। बहुत छोटी उम्र में ही शादी होकर आ गई थी, तभी से देख रही है। बावड़ी हमेशा से गांव के जीवन का केन्द्रबिन्दु रही है। वार-त्यौहारों पर बावड़ी भीड़ से घिरी रहती। बावड़ी में उतरने के लिए सीढ़ियां बनी थी, जगह-जगह आले बने थे, जिनमें देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित थी।

इसके अलावा रोजाना तो लोगों का आना-जाना लगा ही रहता था। समूचे गांव के केन्द्र में अपने आप को पाकर अभिभूत रहती। गांव की कोई भी घटना हो, बावड़ी पर चर्चा होती और झट से पता चल जाता। उसे लगता कि गांव का समस्त जीवन-प्रवाह बावड़ी से होकर ही गुजर रहा है। और तो और पंडितजी नहीं रहे तो बेटे के पास न होने

के बाद भी बावड़ी पर चलती गतिविधियों ने उसे अकेलेपन का अहसास नहीं होने दिया। पर एक दिन जब बावड़ी का पानी टूटा, तो जैसे विधाता ने यशोदा के जीवन को अकेलेपन का अभिशाप दे दिया। लोग-बागों का आना-जाना एकदम कम हुआ और लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने का मंच बनी बावड़ी उपेक्षित हो गई। यशोदा पति की मौत के बाद इतनी अकेली नहीं रही थी, जितना बावड़ी के पानी के टूटने के बाद हो गई। वो जैसे टूट ही गई।

इसी तरह जीवन चल रहा था कि अचानक से सरकारी मुआवजे की रकम मिली। और वो भी थोड़ी नहीं, बल्कि पचास हजार रूपए। पहले-पहले तो यशोदा के समझ में नहीं आया कि वो क्या करे। बहुत से लोग, बहुत सी बातें। पर

एक दिन रात को सोते समय उसके जहन में विचार आया कि क्यों न वो बावड़ी को और गहरी करवाए, क्या पता पानी आ ही जाए। रात का सन्नाटा और मन का सूनापन.... ऐसे में विचार मात्र से ही उसे रोमांच भर आया। वो उठी और बावड़ी के पास जाकर खड़ी हो गई। चांदनी रात में सूखी बावड़ी को देखकर उसका दिल भर आया। बावड़ी में बने आलों में रखी प्रतिमाएँ, बरसों से बिना पूजा के उपेक्षित पड़ी थी। उसे अंदर झांकते देख एक पक्षी चिल्लाता हुआ आसमान में उड़ गया। उसकी आवाज से उसे लगा कि मानो पुरखों की आत्माएँ कराह रही है।

बस उसी पल उसने निर्णय लिया कि उसे बावड़ी को पुनर्जीवित करना ही है। लोगों ने उसे बहुत मना किया, समझाया भी कि यदि पानी नहीं निकला तो पचास हजार रूपए बेकार ही जाएंगे। पर यशोदा ने तो मानो प्रण ही कर रखा था। पर अब प्रश्न उठा कि इस काम को कैसे पूरा करे। फिर उसने भूराजी को बुलवाया। बहुत पुराने दिनों में भूराजी अपने दो साथियों के साथ गांव-गांव कुएं-बावड़ी साफ करने का ठेका लेते थे। पर अब जबसे धीरे-धीरे कुएं-बावड़ियां दम तोड़ती जा रही भूराजी यशोदा की बात सुनकर हतप्रभ रह गए। 'पंडिताईन, ये कैसे होगा। आजकल कौन यह काम करता है और फिर पानी नहीं

कभी माँ तो कभी बहन बनकर दुलारती है, नारी न जाने कितने जीवन संवारती है

निकला तो..... 'यशोदा अपने इरादे पर अटल थी,' भूराजी, पानी निकले तो ठीक, नहीं निकले तो ठीक। बात पैसे की नहीं है..... पुरखों की आत्मा को शांति मिले, बस मैं तो यही चाहती हूँ।' उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। भूराजी चले गए। थोड़े दिनों में उन्होंने दो-तीन आदमी ढूंढे और काम शुरू कर दिया। पूरा गांव हतप्रभ रह गया। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। पहले कचरा निकला, फिर मिट्टी निकाली गई और चट्टानें तोड़नी शुरू कर दी। बहुत धीमी रफतार से काम चल रहा था। यशोदा सुबह ही रोटी-पानी से निपटकर नीम के पेड़ के नीचे बैठ जाती। कभी सो जाती, तो उठकर बावड़ी के पास जाकर आवाज लगाती, 'क्यों भूराजी, कुछ हुआ क्या।' भूराजी हंस पड़ते। 'पंडिताईन जी आराम करो। निकलते ही सबसे पहले आप ही को बताएंगे।' बस यशोदा चुपचाप जाकर पड़ जाती। पुराने खुशनुमा दिनों की याद ताजा हो उठती। सजे-धजे कपड़ों में कुंआ-पूजन करता औरतों का झुंड, शादी के बाद देवताओं को ढोकते दूल्हा-दुल्हन, गणगौर में लड़कियों का झुंड बावड़ी से झारी भरकर ले जाता हुआ, सावन में बावड़ी के आसपास लगे पेड़ों पर झूलती लड़कियां..... उसे लगता कि बस एक बार पानी निकल आए तो गांव का ठहरा-ठहरा जीवन एक बार फिर से महक उठे। सचमुच जल का कितना महत्व है। यही तो जीवन है। बावड़ी सूख गई तो कुछ भी नहीं बचा...अभी पानी निकल आए तो सब-कुछ पहले जैसा हो जाएगा।

एक-एक दिन निकलने लगे। शुरू-शुरू में वो दिन में कई बार मुंडेर पर चली जाती। पर धीरे-धीरे उसका जाना कम हुआ। पर व्यग्रता का भाव इतना तीव्र था कि कोई भी आवाज होती या कोई जोर से बोलता। तो वो मुंडेर पर जाकर खड़ी हो जाती, 'भूराजी, मुझे बुलाया क्या।' उसकी बैचेनी को मजदूर समझ जाते। 'अरे अम्मा, अभी पानी नहीं निकला। जैसे ही निकलेगा, आप ही को बुलाएंगे....' और वो जोर से हंस पड़ते। यशोदा व्यग्र थी, पर उसे यह कतई अच्छा नहीं लगता था कि उसके भावों को कोई इस तरह पकड़ ले। रात को भी देर तक नहीं सो पाती। कभी-कभी आधी रात को जब उसे यह विश्वास हो जाता कि सब सो रहे हैं। तो धीरे से उठती। वैसे बीमारी की वजह से शरीर काम नहीं करता था, पर बावड़ी के पास जाते हुए मानो सारे शरीर में स्फूर्ति दौड़ पड़ती। उसने कई बार रात को बावड़ी में झांकने की कोशिश की। उसे लगता कि क्या पता ऐसा हो जाए कि बावड़ी के तले में पानी चमकता नजर आ जाए। फिर वो जोर-जोर से सभी को जगाकर बता दे कि उसकी मेहनत सफल हो गई है। पर उसे कभी ऐसा कुछ नजर नहीं आता। वो चुपचाप खाट पर आकर लेट जाती।

दो महीने निकल गए। बावड़ी गहरी होती जा रही थी, पर पानी का नामो-निशां नहीं था। यशोदा ने अब पूछना बंद कर दिया था। वो रोटी खाती, कभी नहीं खाती..... बस दूर बैठे-बैठे उन्हें काम करते देखती रहती, अब पैसे भी खत्म होने वाले थे, कभी भी खत्म हो सकते थे। उसकी कल्पनाएं धीरे-धीरे धूमिल पड़ती जा रही थी। गांव के

लोगों ने बेकार काम समझकर उधर आना बंद कर दिया था। ऐसे ही एक दिन दुपहर में यशोदा को झपकी आ गई। अभी सोए हुए कुछ ही देर हुई थी कि अचानक किसी के चिल्लाने की आवाज आई। वो हड़बड़ाकर उठ बैठी। बावड़ी में से कुछ आवाजें आ रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आया, कोई दुर्घटना तो नहीं हो गई, वो मुंडेर तक पहुंची। तभी हांफते हुए भूराजी ऊपर आ पहुंचे। एकदम से उपर चढ़ने के कारण उनकी आवाज नहीं निकल पा रही थी। उनके हाथ में बाल्टी थी। 'पंडिताईन भगवान ने हमारी सुन ली, पानी निकल आया।'

यशोदा एक पल के लिए अवाक रह गई 'क्या'! उसने बाल्टी हाथ में ले ली। उसमें पानी था, गंदला पानी, कीचड़ घुला हुआ। वो खुशी में रोने लगी। उसने गंदे पानी को अंजुरि में भरा और मुंह पर छिड़कने लगी। पानी के साथ लगा कीचड़ यशोदा के मुंह पर चिपक गया। 'अरे पंडिताईन तुम्हारे मुंह पर गंदगी लग गई।' पर उसे कुछ होश नहीं था। उसने पानी को अंजुरि में भर आसमान की तरफ उछाल दिया। पेड़ पर बैठे पंछी आवाज करते हुए आसमान की ओर उड़ गए। उसे लगा, पुरखे हर्षित ध्वनि में आशीर्वाद दे रहे थे। वो बहुत खुश थी, बहुत ही खुश.....।

 **शरद उपाध्याय**

से.नि.मु.कार्या.अधी.कोटा मंडल,
मो.: 94142265981



मैं तो केवल नारी हूँ

खुशबू बन उड़ जाने दो
बांधो मत बह जाने दो
मैं चंचल सी धारा हूँ
बादल एक आवारा हूँ
परम्पराओं ने पकड़ा
अंध रूढ़ियों ने जकड़ा
दामन लिपटे शूलों को
छोड़ूँ गलत उसूलों को
तोड़ गुलामी की बेड़ी
आजादी की धुन छोड़ी

पंख लगा अरमानों को
ऊँची भरूँ उड़ानों को
मैं कोमल कमजोर नहीं
अगन परीक्षा और नहीं
अधिकारों का रण होगा
अब ना चीर हरण होगा
ठोकर पर जग रखती हूँ
स्वाद जीत के चखती हूँ
शोला ना चिंगारी हूँ
मैं तो केवल नारी हूँ

चाँद-सूरज का पहनूँ ताज
अब बदलूँ अपने अंदाज

 **इंजी. आशा शर्मा**

हिंदी साहित्यकार
बीकानेर (राजस्थान)
मो.: 9413369571



‘महिलाओं ने ठाना है, शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना है।’



चन्दा

चाचा जी! आपको अपने कर्मों का प्रतिफल ही मिलेगा। आपने गलत किया होगा तो उसका भुगतान नियति जरूर करेगी, फिर भी आपके साथ कोई अन्याय नहीं होने पाए, यह मैं वचन देती हूँ, एक जानी पहचानी सी आवाज सुनकर चौधरी चेताराम वर्मा अचानक चौंक गए थे। उन्हें यह समझते देर न लगी कि मंच के प्रमुख आसन से आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी चन्दा, उन्हें संबोधित करते हुये कह रही थी। यह तो वही चन्दा है, कुछ सोलह वर्ष पहले जिसके पिता 'चन्दन' की चौधरी जी की लकड़ी की टाल पर कार्य करते हुए दुर्घटनाग्रस्त होकर इलाज के दौरान, मृत्यु हो गयी थी। जी हाँ, चन्दन एक नहीं तीन-तीन बेटियों के पिता थे और वे थीं चन्दा, गंगा व यमुना। इन तीनों बेटियों की माँ श्रीमती सुशीला एक नेक दिल बुद्धिमान गृहिणी थीं, जो एक कुशल प्रबन्धक की तरह पति 'चन्दन' की मामूली आय वाली कमाई में पाँच सदस्यों वाले परिवार का भली-भाँति पालन-पोषण कर रही थीं। अति साधारण आय क्षमता से संबंध रखने वाला यह परिवार अपनी तीन बेटियों की शिक्षा-दीक्षा के लिए पूर्णरूपेण जागरूक था तथा उपयुक्त विद्यालयीन शिक्षा की व्यवस्था कर रखी थी। इसी बीच इस परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ तब टूट पड़ा जब लकड़ी के टाल पर कार्य के दौरान चन्दन को घातक चोट लगी और इलाज के लिए उपयुक्त आर्थिक व्यवस्था न हो पाने के कारण तीन अल्पायु बेटियों के साथ कुल चार सदस्यों वाले महिला परिवार को छोड़कर दिवंगत हो गए।

चन्दा की उम्र उस समय लगभग 14 वर्ष रही होगी जो शासकीय स्कूल के कक्षा 8 में एक कुशाग्र मेधा की छात्रा थी। पिता के दुर्घटनाग्रस्त होने पर, इलाज के लिए आर्थिक मदद की बड़ी आशा से वह अपनी माँ सुशीला के साथ चौधरी चेताराम वर्मा के पास गयी थी और चौधरी के द्वारा कोई मदद न करने का टका सा जबाब दे दिया गया था।

पिता के न रहने और आय का कोई भी साधन न रह जाने के कारण अब चन्दा के लिए अपनी पढ़ाई जारी रख पाना तो असंभव हो गया, किन्तु घर की जीविका एवं दो छोटी बहनों की शिक्षा का प्रबंध उसके लिए एक चुनौती बन गयी। मात्र 14 साल की उम्र में चन्दा ने पढ़ाई छोड़कर गृहस्थी की समस्याओं से जूझने का निर्णय लिया। उसने कस्बेनुमा छोटे से जनपदीय शहर में अखबार बांटने, आंगनवाड़ी में दैनिक मजदूरी एवं पूर्व प्राथमिक बच्चों को शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। इससे इतनी आय हो जाती थी कि किसी प्रकार घर का खर्चा एवं दोनों छोटी बहनों की शिक्षा का इंतजाम हो जाये।

दिन बीतता रहा और छोटी बहनों को प्रोत्साहित करती रही, जमाने की निगाहों और तानों से अपने को भी बचाती रही। एक दिन वो आया जब दोनों बहनों ने, स्नातक होने के बाद, लोक सेवा आयोग की परीक्षा दी और एक बहन डिप्टी कलेक्टर तो दूसरी पुलिस कप्तान बन गई। इन बहनों की पदस्थ संयोग से उनके गृह जनपद में हुई और वे दोनों अपने अपने कार्य पर ईमानदारी से लग गईं।

चौधरी चेताराम वर्मा का काफी रसूख था तथा उनके आवास पर सरकारी मुलाजिमों का आना जाना रहता था। इसकी आड़ में

चौधरी का अवैध रूप से जंगल की इमारती लकड़ी कटवाने और बाजार में बेचने से लेकर लकड़ी की लाट पर काम पर लगे मजदूरों का शोषण करने तक का अनैतिक कार्य बेरोकटोक चल रहा था। इसी आपराधिक गतिविधि में चौधरी जी के विरुद्ध प्रकरण बना और उसकी निगरानी व निर्णय का कार्य इन्हीं दोनों बहनों 'गंगा' व 'यमुना' के अधीन हो रहा था।

संयोग से उस दिन जनपदीय कार्यालय में डिप्टी कलेक्टर द्वारा चौधरी के प्रकरण में पुलिस कप्तान की गवाही पर निर्णय दिया जाना था तो बहनों ने अपनी आदर्श, माँ तुल्य बहन 'चन्दा' को भी बुला लिया था। चौधरी जी अपनी सफाई में गिड़गिड़ा रहे थे कि मैडम! मैं बड़ा ही नेक व्यक्ति हूँ। मैंने प्रशासन कि खूब सेवा की है, अपने व्यवसाय में लगे मजदूरों का बहुत ख्याल रखता हूँ। उनके हारे-गाड़े में पूरी मदद करता हूँ। कुछ विरोधियों ने साजिश हमें फंसाया है। आप हमें बख्श दें। तभी चन्दा ने चौधरी जी की ओर मुखातिब होकर अपनी बहनों को मानो इशारा करते हुये बोला था और चौधरी जी, चन्दा व उसके परिवार पर किए गए अपने अपकारों को याद करके अपराध बोध से करबद्ध होकर चन्दा को निहार रहे थे और चन्दा उनकी कातर किन्तु मक्कारी भरी वाणी को सुनकर मुस्कुरा रही थी।

चन्दा अब कुछ उम्रदराज हो चुकी थी। कुछ दिन पूर्व माँ सुशीला का देवलोक गमन हो चुका था। उसे आदर्श अधिकारी के पद पर आसीन अपनी दोनों छोटी बहनों के विवाहोपरांत पुनः अकेलेपन का अनुभव हो रहा था। अपने घर में बैठी वह अतीत के पलों को यादों में दोहरा रही थी। पिता एवं माँ के मुसीबत के दिन, परिवार को संभालने के लिए उसके द्वारा की गयी कड़ी मेहनत और दोनों बहनों के उच्चाधिकारी के पद पर चुने जाने एवं उनके साथ बिताए गए खुशी के पल आदि के बारे में सोंचकर वह गम-हर्ष के भाव में तिरोहित हो रही थी तभी दरवाजे की घंटी की आवाज सुनकर सहसा भीगी पलकों को संभालती हुई पट खोलते ही छोटे-छोटे दो बच्चों को देखा जो मौसी-मौसी कहते हुये आकर चन्दा से लिपट पड़े थे। ये दोनों बच्चे गंगा व यमुना के नवनिहाल थे और गर्मियों की छुट्टी में अपनी-अपनी माँओं के साथ मौसी के घर आए थे। चन्दा ने उन बच्चों को अपनी गोंद में छिपा लिया था और उसकी आँखों में खुशी के आंसुओं की धार बह चली थी।



 **हरि सहाय पाण्डेय**

मु.सतर्कता निरीक्षक, मुख्यालय, पमरे
मो. 9752413096

अबला नहीं है बिल्कुल नारी, संघर्ष रहेगा निरंतर जारी

कहानी

नंदिनी

कहानी प्रारंभ करने से पूर्व मैं नारी के सम्मान में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की निम्न पंक्तियों का जिक्र करना चाहूंगा-

**नारी जीवन हाथ तेरी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।**

शहर के बीचों-बीच एक श्रमिक कालोनी है जहाँ लगभग 30-40 झोपड़ीनुमा आवास हैं। जिनमें अधिकतर मजदूर वर्ग के लोग निवास करते हैं। शांति नगर नाम की यह बस्ती पूरे शहर में बहुत महशूर है क्योंकि दिन में तो यहाँ सन्नाटा छाया रहता है, लेकिन रात होते-होते सारे मोहल्ले में एक प्रकार का भूचाल-सा आ जाता है, कारण दिन में कुछ बुजुर्ग महिलाओं और बच्चों को छोड़कर सारे मर्द और महिलाएं अपने-अपने काम पर चले जाते हैं। परिणाम स्वरूप दिन में यहाँ सुन सपाट और शांति कायम रहती है। सूरज ढलते-ढलते थकी हारी महिलायें अपने-अपने घरों को लौटती हैं, अपने बच्चों को लाड़-दुलार करती हैं, उनकी समस्याएं सुनती हैं और उन्हें सुलझाने का आश्वासन देती रहती हैं, तत्पश्चात् भोजन तैयार करती



रात होते-होते सारे मोहल्ले की शांति भंग हो जाती, दूर से ही शोर-शराबा सुनाई देने लगता है। मानो तुफान के आने के पहले का आगाज हो रहा हो, गंदी-गंदी गालियों के साथ चीखते-चिल्लाते, लड़खड़ाते इन महिलाओं के नशेड़ी पति जब घर लौटते हैं तब बच्चे भय से कांपते हुए अपनी पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद छोड़ तुरंत रजाई के अंदर घुस जाते हैं और छोटा सुराख बना उसमें से झांकते हैं। तथाकथित मर्द बिना किसी बात के लाचार महिलाओं पर गालियों की बौछार करने के साथ ही अपनी मर्दानगी का परिचय देने लगते हैं। इस प्रकार अनेक घरों में एक साथ गाली-गलौच, चीख-पुकार और बर्तन की कर्कस आवाजें सुनाई देने लगती हैं। कोई भोजन के स्वाद को लेकर भरी थाली अपनी पत्नी के मुँह पर फेंकता है तो कोई मजदूरी के रुपये न देने पर बेकसूर अबला, असहाय पत्नी को बुरी तरह पीटता है। बच्चों रजाई में ही सिसकियां लेते हुए रो पड़ते हैं। इस प्रकार इन महिलाओं का दिन दूसरों की मजदूरी करने में तो रात इन शराबी, नशेड़ी पतियों के अत्याचार में गुजरती है।

इसी बस्ती में खोली नंबर 4 में नंदिनी अपने पति गुड्डू उर्फ शैतान सिंह के साथ रहती है। उसके दो सुन्दर मासूम बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की, लड़के का नाम राजू है जो 05 वर्ष का है और के.जी. 1 में पढ़ता है एवं लड़की का नाम राजकुमारी है जो 07 वर्ष की है और कक्षा 2 में पढ़ती है। नंदिनी बिल्कुल शांत, सरल, मिलनसार एवं सुंदर स्त्री है जबकि उसका पति अपने नाम के अनुसार पूरी तरह शैतान, शराबी एवं भिन्न-भिन्न प्रकार के नशे का आदी है। आज नंदिनी की शादी की 10वीं सालगिरह है, सुबह से ही वह वर्षगांठ की तैयारी में व्यस्त है। साफ-सफाई, झाड़ू, बर्तन आदि व्यवस्था दूरस्थ करने के लिए आज उसने अपने काम से अवकाश ले लिया है, जबकि उसका पति काम पर गया है। आज उसने पास पड़ोस के कुछ गिने चुने लोगों को रात्रि भोज के लिए आमंत्रित किया है। घर की साज-सजावट एवं अन्य काम के रहते दिन कब गुजर गया पता ही नहीं चला और शाम हो आयी थी।

एन वक्त पर गैस सिलेण्डर खत्म हो गया सो नंदिनी ने बस्ती में पांसारी की दुकान चलाने वाले आत्माराम जी के घर बच्चों को भेजा। इस आशा से की शायद उनके पास एक भरा हुआ सिलेण्डर मिल जाये। आत्माराम जी के घर एक सिलेण्डर अतिरिक्त भरा रखा था सो वे खुद ही

सिलेण्डर उठाकर नंदिनी के किचन तक रखकर वहाँ से वापस आ ही रहे थे कि अचानक शैतान सिंह ने घर में प्रवेश किया। आत्माराम को अपने घर से निकलते देख नशे में चूर शैतान सिंह आग बबूला हो उठा और बिना कुछ जाने घर में रखी लोहे की राड़ से नंदिनी को बुरी तरह पीटने लगा और जब तक पीटते रहा तब तक उसकी श्वास थमी नहीं, आनन-फानन में किसी ने 100 नं. डायल कर दिया। पुलिस आयी और शैतान सिंह को मारते-पीटते थाने ले गई। बच्चे जो शैतान सिंह के आते ही घर में घुस गए थे, बाहर आकर अपनी माँ का यह हाल देख उससे बुरी तरह लिपटकर रो पड़े। अभी उन मासूम बच्चों को यह मालूम नहीं था कि उनकी माँ तो हमेशा के लिए उन्हें छोड़ कर जा चुकी है। दिन खुशनुमा तो रात मातम में बदल गयी, जिनको नंदिनी ने रात्रि भोज पर बुलाया था वे आये और नंदिनी को मृत अवस्था में देख गमगीन हो गये। उन्हीं लोगों ने उस रात बच्चों को संभाला, अगली सुबह कानूनी प्रक्रिया के बाद नंदिनी का शव घर लाया गया और तुरंत अंतिम यात्रा के लिए तैयार किया गया। जैसे ही घर के बाहर रखी अर्ध पर नंदिनी की मृत देह लायी गयी उसकी बच्ची किसी के रोके न रुकी और बुरी तरह दहाड़ मारते हुये अपनी प्यारी माँ से लिपट गयी जिसे देख जितने भी लोग अर्ध के समीप थे, अपने आँसू रोक न सके बहन राजकुमारी को रोता देख भाई राजू भी रो पड़ा।

शमशान में नंदिनी के पुत्र राजू ने अपने नन्हें हाथों से माँ को मुखाग्नि दी, माहौल बहुत अधिक गमगीन था। अब पिता जेल में था तो माँ हमेशा-हमेशा के लिए जा चुकी थी। दिन बीतते गए अब माँ का काम और अन्य जिम्मेदारी उसकी अबोध और मासूम सी बेटी राजकुमारी अपने ऊपर ले चुकी थी। प्रातः उठ जल्दी स्नान करती, पहले भगवान को फिर अपनी माँ की तस्वीर के सामने अगरबत्ती जलाती, तत्पश्चात् छोटे भाई को तैयार करती। अभी माँ के हाथ का राशन घर में था तो अपने छोटे-छोटे हाथ से रोटी बनाती, भाई को खिलाती, उसका और अपना लंच बॉक्स लेकर दोनों स्कूल जाते। नंदिनी की दर्दनाक मौत के बाद मोहल्ले की सारी महिलाओं ने संकल्प लिया है। अब जो भी मर्द शराब पीकर घर आता वे उसे घर में घुसने नहीं देती हैं, इतना प्रताड़ित करती कि पति सारी बुराई छोड़ दानव से मानव बन जाता है। इस प्रकार अब शांति नगर में वास्तव में शांति कायम हो चुकी है। मोहल्ले की सारी महिलाएं और मर्द नंदिनी के बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं।

यहाँ मैं अपनी बहिनो-बेटियों और उनके माता-पिता से विनम्र आग्रह करना कहूंगा कि विवाह हेतु वर देखते समय हर एक बात की बारिकी से जाँच करें यानी होने वाला जीवनसाथी नशे बाज तो नहीं, उसका रोजगार, उसका स्वभाव, वह पहले से शादीशुदा तो नहीं इत्यादि। वर्तमान में सोशल मिडिया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम और विभिन्न शादी एप इत्यादि के माध्यम से रिश्ते होते, जिनमें अधिकांश फ्राड रहते हैं। इसलिए बहुत ही सोच समझकर और छानबीन करने के बाद ही अपनी बेटियों के लिए एक अच्छे जीवन साथी की तलाश करें। वरना ऐसी अनेक नंदिनी अपनी जान गंवाती रहेंगी और नन्हें-मुन्ने बच्चे अनाथ हो जाएंगे।

अशोक शर्मा

से.नि. कार्या.अधी, भोपाल मंडल
मो.:8770500936



महिला सशक्त हो राष्ट्र में, बाकी सब इसे बाद में

आसमान में भरती नारी,
अब उन्मुक्त उड़ान ।
सजा प्रकृति के साथ हमेशा,
जीवन का जयगान ॥

बंधन काटे हैं नारी ने,
किया हमें आजाद ।
ममता की वह मूरत लिखती,
भावों का अनुवाद ॥
बिना कहे ही कर लेती है,
वह सबसे संवाद ।
मन की पीड़ा समझी उसने,
अदभुत यह प्रतिवाद ॥
आज दिखाया है उसने ही,
हमको नवल विहान ।

जीवन की अब सुखद सुहानी,
आई नूतन भोर ।
आशाओं को पंख लगे हैं,
मन भी भाव विभोर ॥
आजादी की नई कल्पना,
लाई स्वर्णिम छोर ।
आज खुशी के आँसू भी हैं,
अब नयनों की कोर ॥
इस जीवन का मिला तुम्हीं से,
यह अदभुत वरदान ।

अडिग लिए मन के भावों को,
उसका यह उपकार ।
ममता, नेह, दया, करुणा का,
वह जग में अवतार ॥
मन के भावों को हम जी लें,
यह अदभुत उपहार ।
बंधन सारे खोल दिये हैं,
दिखा मुक्ति का द्वार ।
यही कामना मन से करते,
पूरे हों अरमान ।

डॉ अरुण कुमार श्रीवास्तव 'अर्णव'
मुख्य टिकट निरीक्षक, भोपाल मंडल
मो. 9630089588



नारी

विमाता

विमाता,
नहीं होती बुरी
अत्याचारिणी हमेशा,
छुपी हुई माँ,
हर स्त्री में होती है,

हर स्त्री में,
हर उम्र की स्त्री में
झलकता है वात्सल्य
जागती है करुणा,
उनके लिए भी
जिनसे सरोकार न हो
तब भी,

उमड़ता है प्रेम,
उस पर भी,
जिससे न हो रिश्ता खून का
बावजूद हजारों नापसन्दगी के
उठती हैं ममता की लहरें,
क्योंकि वात्सल्य,
मूल प्रवृत्ति है
नारी की,
कर ही लेती हैं
छुप छुप कर
दुलार
एकाध बार तो,
उसे जो कहलाता है
सौतेला,



सौतेली, माँ नहीं होती
सौतेला तो होता है विचार,
जो होता है उत्पन्न
उस स्त्री के प्रति
उन सब का जो
स्वीकारते नहीं स्थानापन्न
जबकि
वो आती ही है भरने
रिक्त स्थान,

हालांकि वो
नहीं आती स्वयं
चलकर
न ही छीनती है
मौलिक अधिकार,
विमाता आती है
हमेशा
पिता के भीतर के
पिता के मर जाने के बाद ।

अश्विनी कुमार स्वामी
उप स्टेशन अधीक्षक
खिरकिया, भोपाल मंडल
मो.: 8989424615



देश का अंतःकरण, सिर्फ और सिर्फ महिला सशक्तिकरण

माँ



नारी रूप सारे रिश्तों में । संस्कार, सद्भाव सिखाती ।
सबसे न्यारी प्यारी माँ ।। दे जीवन को तैयारी माँ ।।
धरती पर जीवन 'धन' देकर । सब सुख से जीती ये दुनियाँ
जग लक्ष्मी सब नारी माँ ।। तुम किस दुख से हारी माँ ।।
सब कुटुम्ब की ज्योति जलाती । पावन गंगा सी 'अवनि' में ।
सरल सुप्त चिंगारी माँ ।। 'अम्बर' तारों सी भारी माँ ।।
मर्यादा संग श्रद्धा-भक्ति । कर जोड़े सब करें 'अर्चना' ।
शान-मान अधिकारी माँ ।। सुख समृद्धि संचारी माँ ।।
विपदाओं को सहज बनाती । भार हुए जग के सब नाते
हर अंधकार उजयारी माँ ।। स्वार्थ रहित आभारी माँ ।।
पतझड़ घोर निरा संकट में । मोह बसे माया हर मन
सावन सी हरियाली माँ ।। शांति दूत पुजारी माँ ।।
पुत्र-पिता भाई बहिनों संग । नतमस्तक जग सारा पग में ।
बसती राजदुलारी माँ ।। 'अखिल' कहे बलहारी माँ ।।
महकाती घर की बगिया को ।
पुष्प गंध-फुलवारी माँ ।।

अखिलेश ब्यौहार 'शिक्षक'
पश्चिम-मध्य रेलवे स्कूल, जबलपुर
मो.: 7692068918



गीत



उर्विजा- सी शक्तिरूपा बेटियों की,
अब समुन्नत आसमानों तक पहुँच है।
खोलकर घूँघट कभी हम थीं लजाती
पंछियों-सी अब उड़ानों तक पहुँच है।

दूर शिक्षा के उजाले थे कभी जो,
मुट्टियों में कैद उनको कर लिया है।
सीखकर सारी कलाएँ सब विधाएँ,
हर सफलता का वरण हमने किया है।

पा लिए उपलब्धियों के शीर्ष सारे,
अब हमारी कीर्तिमानों तक पहुँच है।

नाम की भी तख्तियाँ जिन पर नहीं थीं,
उन घरों पर प्यार का वैभव लुटाया।
झोंक दी हमने खुशी से जिंदगी पर,
कर दिया सबने हमें उनमें पराया।

नाम, यश, पावन प्रतिष्ठा भी हमारी,
है जहाँ ऐसे मकानों तक पहुँच है।

मंदिरों में देवियों को पूजते सब,
निज घरों में हम नहीं सम्मान पातीं।
दो कुलों की लाज रखना धर्म अपना,
गर्व से मस्तक उठाकर हम निभातीं।

हम सभी अधिकार अपने जानती हैं,
अब हमारी संविधान तक पहुँच है।

मिथिलेश बड़गैयाँ 'श्री'
हिंदी साहित्यकार, जबलपुर
मो. 9425383616

सुन प्रकृति की पुकार, नारी से ही है घर संसार



नारी का सम्मान

इस देश की हर बगिया में
नारी सम्मान बढ़ना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

वह ही बेटी, वह ही माँ हैं,
वह ही बहू और वही अरमां हैं,
बेटी बनकर राह के राही,
हर घर की गौरव-गरिमा है।

मन का अंधेरा पहले मिट जाये
फिर घर-घर दीप जलाना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

ना भूलें झांसी की रानी को,
बलिदानी, दीवानी फितरत को,
आग उगलती उनकी कहानी,
कैसे जीता है नफरत को।

जीत के मतलब को पहिचाने,
तब फिर गीत सुनाना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

दहेज बनता जाता राक्षस,
सबको रुलाता, रहकर हंस-हंस,
आज करें हम काम नया सा,
हम भी खुश और बेटी भी हो खुश।
शिक्षा, गुण को ही दहेज मानकर,
अब हर घर बहू बनाना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

अब वो उड़ते नीलगगन में,
और फिर रहते लाज-शरम में,
हम समाज के सुख-दुख के साथी,
सुख की धुन बाजे सरगम में।

महल बन गये उनके साथियो,
जिनने महिला को पहिचाना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

हर बाधाएँ झटपट मिटाती,
नहीं बताते कब थक जाती,
चौराहे पर खड़े भ्रमित मुसाफिर,
अविलम्ब पहुंचकर राह बताती।
आँसू के गिरने से पहिले,

ही शबनम भर जाना है।
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।

कितनी कहानी और सुनायें,
अब हम बुनियाद में ईंट बिछायें,
जड़ सींचे, जड़ रोपें पौधें की,
कब खिल जायें और
कब मिल जायें।

बेटी आंगन महके जिनके,
घर उनके ही रोशन होना है,
गौरव-गाथा से कुछ सीखें
और आगे बढ़ते जाना है।



राजेश कुमार लखेरा
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (टेली),
कटनी, जबलपुर मंडल
मो.: 9752418829

‘जब महिलाएं आगे आती हैं, समाज को तरक्की की राह पर लाती हैं’

आने वाला कल हैं 'बेटियां'

24 जनवरी राष्ट्रीय
बालिका दिवस
पर विशेष

वो फूल है हर बाग में नहीं खिला करती,
जन्म लेती हैं बेटियां जिस घर वहाँ सारी खुशियां जुड़ती।

बेटियां सब के मुकद्दर में कहां होती हैं,
होती हैं वहाँ रब की जहाँ मेहर होती हैं,
चाहत तो हर किसी को बेटे की होती है,
पर बेटियां तो ईश्वर की मर्जी से होती हैं।

किस्मत वाला हूँ मैं और वो लोग,
जिन्हें बेटियां नसीब हुई हैं,
यह सच है कि मुझे उन सब से ज्यादा,
रब की मोहब्बत नसीब हुई है।

बेटियों की माँ भी तो बहुत अनमोल होती हैं,
ये ना हो तो बेटियां भी बे-मेल होती हैं,
धूप में पिता और चूल्हे में माँ जलती हैं,
तब कहीं जाकर बेटियां पलती हैं।

यह जरूरी तो नहीं कि चिरागों से ही रोशनी हो,
बेटियां भी घर में उजियाला करती हैं,
खिलती हुयी कलियां हैं बेटियां, घर को रोशन करती हैं।
माँ-बाप का दर्द बेटियां ही तो समझती हैं।

लड़के आज हैं तो, आने वाला कल हैं बेटियां,
लड़के कुल का वंश तो, वंश चलाने वाली हैं बेटियां,
पिता की किस्मत जगाती हैं बेटियां,
तभी तो लक्ष्मी कहलाती हैं बेटियां।

रहती हैं, हर पल रोशनी वहाँ,
जिस आंगन में होती हैं बेटियां,
हर तरफ खुशियां ही बरसे,
जहाँ मुस्कान बिखेरती हैं बेटियां।



रोज नया दर्द देती है, जिंदगी,
पर कैसे करूँ जिंदगी से नफरत,
मेरी जिंदगी मेरी बेटियां हैं,
जिसने पूरी कर दी है मेरी हर हसरत।

माता-पिता की एक आह पर,
छुप-छुप कर रोती हैं, बेटियां,
फिर भी आज के दौर में,
गर्भ में ही जान खोती हैं बेटियां।

तू उड़ती जा, तेरे परो को परवान हम देंगे,
तू कोशिश तो कर बोलने की, आवाज हम देंगे,

देवराज चापागाई
कार्यालय अधीक्षक, मुख्यालय,
पमरे, जबलपुर, मो.: 9630009334



नारी सशक्तिकरण नहीं सिर्फ नारा, कर्तव्य है हमारा

जीवन का आधार है - नारी

सरस्वती तो कभी लक्ष्मी
हर आँगन की तुलसी तुम
हर घर की अभिलाषा हो और
धैर्य शौर्य की परिभाषा तुम

सभी रसों का भाव तुम्ही हो
दया ममता करुणा की तुम सागर
जीवन की लय हो हर घर की
जीवन का संस्कार है नारी

हर रस का उत्सर्ग तुम्ही से
वात्सल्य कृष्ण को पूर्ण दिया
रणभेरी की गूंजो में बन काली
विकराल संघर्ष में रक्षण देवों को दिया

भक्ति की रस में जो डूबी
अमृत और विष में न भेद किया
अन्नपूर्णा बनकर हर की
क्षुधा को तुमने ही तृप्त किया

कविता

त्याग का है जीवंत उदाहरण
हर संतान जो जीवन पाए
तुम्हारी तपस्या के आगे
छोटे लगते सारे हिम शिखर

कर्मक्षेत्र में डटकर करती
तुम्ही जो हो कार्य प्रखर
सुचारू चलाती हो तुम सबको
घर, कंपनी हो या राष्ट्र विराट
जीवन के सब रंग अधूरे जिसके बिन
वह सप्तरंगी निश्छल धूप तुम्ही हो
मैं क्या, सारा जग ये कहता
जीवन का आधार है नारी ।



 **नरोत्तम नामदेव**
मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
पमरे जबलपुर
मो.:9893817593



प्रिंसी मालवीय
पिता ओमप्रकाश मालवीय
कक्षा दसवी डब्ल्यू.एस.ई.सी. हाई स्कूल, जबलपुर

क्षणिकार्ये



मातृभाषा

अफसोस अजीब
लगा है रोग,
मातृभाषा को मात्र भाषा
समझ रहे लोग ।



टाँग

जो भी उनके मामलों में
अड़ाता है टाँग,
वे उसे ज़मीन से उठा
खूँटी पर देते हैं टाँग ।



भारत वंदना

करना है तो करो
भारत वंदना,
पर अपने स्वार्थ की खातिर
करो भारत बंद -ना ।



फाइल

ठंडी फाइल ने
गति पाई,
जब सम्बंधित बाबू की
मुट्ठी गरमाई ।



सफाई

उन्होंने विभाग में
आते ही सफाई पर
विशेष ध्यान दिया
मौका लगते ही
सब कुछ साफ किया ।



हल

जिसने चलाया हो
खेतों में हल,
वही कर सकता है,
किसानों की
समस्याओं का हल ।



भरापूरा घर

उन्होंने पाते ही कुर्सी
भरा पूरा घर
और बेईमानी के
सारे रिकॉर्ड तोड़ गए,
उनकी मृत्यु पर लोगों ने कहा
वे अपने पीछे
भरा पूरा घर छोड़ गए ।



विश्वास

जिन पर
हमने किया विश्वास
अफसोस !
उनमें ही पाया विष-वास ।



स्वर और व्यंजन

वे स्वर और व्यंजन
की नई परिभाषा
यूँ बताते हैं,
व्यंजन अगर न हों स्वादिष्ट
तो लोग ऊँचे स्वर में चिल्लाते हैं ।



भरभराकर

सरकारी नव-निर्मित इमारत
गिर पड़ी भरभराकर,
क्योंकि निर्माण से जुड़े लोग
पहले ही चल दिये थे
जेब भर भरा कर ।



मसले

उन्होंने कुछ इस तरह
हल किये मसले,
गरीबों के सपने
पैरों तल मसले ।



साधना

उनके जीवन की रही
सिर्फ इतनी साधना,
लोगों को उल्लू बना
अपना मतलब साधना ।



वेदना

चाहे भले पढ़ो वेद ना
हो सके तो हरो
लोगों की वेदना ।



पोता

जांच अधिकारी ने
सारा मामला लीपा पोता,
क्योंकि प्रकरण में फंसा था
बड़े साहब का पोता ।



खुलासा

उनके विभाग में
सबकुछ है पारदर्शी
और खुला- खुला सा,
इसलिए आजतक
किसी मामले का
हुआ नहीं खुलासा ।



करार

कैसे मिले चैन
और आये करार,
जब अपने ही
दुश्मन से मिल
घर तोड़ने का
कर रहे करार ।



घनश्याम मैथिल 'अमृत'
वरिष्ठ तक./स.डि.पु.का., भोपाल

74 वां गणतंत्र दिवस समारोह - 2023



परेड की सलामी लेते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे



सलामी देते हुए आरपीएफ के जवान



74 वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर उद्बोधन देते हुए
श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे



दर्शक दीर्घा में उपस्थित महाप्रबंधक,
अपर महाप्रबंधक, अन्य उच्चाधिकारीगण तथा परिजन



सलामी परेड का अवलोकन करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे



74 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियां

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60 वीं तिमाही बैठक का आयोजन



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण



राजभाषा सरिता के 45 वें अंक का विमोचन करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता महाप्रबंधक, पमरे, श्री विशंकर सक्सेना, अपर महाप्रबंधक एवं अन्य अधिकारीगण



राजभाषा सरिता के 45 वें अंक का अवलोकन करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता महाप्रबंधक, पमरे, उपस्थित श्री रविशंकर सक्सेना, अपर महाप्रबंधक एवं अन्य अधिकारीगण



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60 वीं बैठक का दृश्य



अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव प्रतियोगिता 2022 के विजेता कर्मचारियों को ट्रॉफी प्रदान हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे, उपस्थित श्री रविशंकर सक्सेना, अपर महाप्रबंधक, पमरे एवं अन्य अधिकारीगण



राजभाषा गतिविधियाँ



राजभाषा मार्गदर्शिका का विमोचन करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता महाप्रबंधक, पमरे तथा अन्य अधिकारीगण



राजभाषा पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री रविशंकर सक्सेना, मुराधि एवं अपर महाप्रबंधक, पमरे, श्री सुधीर सरवरिया, मुख्य कारखाना प्रबंधक, मडिमका, कोटा



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की छःमाही बैठक के दौरान राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री मनीष तिवारी, मं.रेल प्रबंधक, एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण



नराकास, कोटा की गृह पत्रिका 'चंबल प्रसून' का विमोचन करते हुए श्री मनीष तिवारी, मंडल रेल प्रबंधक, श्री मनोज कुमार जैन, अ.मु.रा.भा. अधि. एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक, कोटा



मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान चर्चा करते हुए श्री मनीष तिवारी, मंडल रेल प्रबंधक, कोटा एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित मडिमका, कोटा की महिला कर्मचारीगण

राजभाषा गतिविधियाँ



राजभाषा दैनन्दिनी का विमोचन करते हुए श्री सौरभ बन्दोपाध्याय, मंडल रेल प्रबंधक, भोपाल तथा अन्य अधिकारीगण



राजभाषा दैनन्दिनी का विमोचन करते हुए श्री सुधीर सरवरिया, मुख्य कारखाना प्रबंधक, मडिमका, कोटा एवं अन्य अधिकारीगण



सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की 127 वीं जयंती की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती रश्मि दिवाकर अ.मु.रा.भा.अधि. एवं अपर मंडल प्रबंधक, भोपाल



महादेवी वर्मा की 116 वीं जयंती के अवसर पर उपस्थित श्री सचिन आर. शर्मा वरि.मं.वि.इंजी. (टी.आर.एस.), इटारसी एवं अन्य



कवि प्रदीप की 108 वीं जयंती के अवसर पर माल्यार्पण करते हुए तत्कालीन मुख्य कारखाना प्रबंधक, श्री गुरुनाथ सी. बेटगेरी, सडिपुका, भोपाल



कवि सम्मेलन के दौरान प्रसिद्ध हास्य कवि श्री शम्भू सिंह सिकरवार को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ. कुमार आशीष, उप मुख्य यांत्रिक इंजी., सडिपुका, भोपाल

राजभाषा गतिविधियाँ



राजभाषा दैनन्दिनी का विमोचन करते हुए श्री विवेक शील, मंडल रेल प्रबंधक, जबलपुर, श्री दीपक कुमार गुप्ता, अमुराधि, श्री अमितोज वल्लभ, अ.म.रे.प्र. तथा अन्य



राजभाषा पत्रिका 'प्रयास' का विमोचन करते हुए श्री सुधीर सरवरिया, मुख्य कारखाना प्रबंधक, मडिमका, कोटा एवं अन्य अधिकारीगण



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल कार्यालय जबलपुर में नवीनकृत महिला कर्मचारी विश्राम कक्ष का उद्घाटन,



जबलपुर मंडल पर हिंदी साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत जयंती के अवसर पर उपस्थित श्री दीपक कुमार गुप्ता अ.मु.रा.भा.अधि. एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 के अवसर पर मंडल कार्यालय जबलपुर में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन



महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत आयोजित शिविर में अंडमान निकोबार द्वीप समूह के लिए रवाना होते हुए जबलपुर मंडल का महिला कर्मचारी दल

हिंदी कार्यशाला का आयोजन



हिंदी कार्यशाला के अवसर पर श्री एस.के. अलबेला, तत्कालीन मुराधि का स्वागत करते हुए श्री यू.के. सिंह, उप मुराधि एवं उप मुख्य सतर्कता अधिकारी



हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित श्री एस.के. अलबेला, तत्कालीन मुराधि तथा अन्य अधिकारीगण



हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित प्रशिक्षार्थी कर्मचारीगण



हिंदी कार्यशाला के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री एस.के. अलबेला, तत्कालीन मुराधि एवं प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी, पमरे, तथा उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री यू.के. सिंह



दोहे

स्वर्गलोक की चाह में, करें लोग परमार्थ।
केवल माँ ही कर सकी, सभी काम निस्वार्थ॥

धन वैभव, से जो मिले, लगे सभी सुख अल्प।
माँ की ममता का मुझे, मिला न कहीं विकल्प॥

एक कला संसार में, केवल माँ को ज्ञात।
बिन भाषा बिन बोल के, समझे मन की बात॥

सिर के ऊपर बाज है, नीचे तीर कमान।
खतरा है फिर भी भरे, चिड़िया रोज उड़ान॥

आई दुख की आँधियाँ, कष्टों के तूफान।
माँ के अधरों पर कभी, कम न दिखी मुस्कान॥

नारी के मन की व्यथा, समझ सका है कौन।
अधरों की मुस्कान पर, आँसू बैठे मौन॥

सच्ची खुशियाँ हैं कहाँ, करना हो अहसास।
घड़ी दो घड़ी बैठ कर, देखो माँ के पास॥

बँधी रही कर्तव्य से, सब कुछ था परिवार।
जीवन भर माँगे नहीं, नारी ने अधिकार॥

माँ के आँचल में बसा, एक अलग संसार।
ममता करुणा प्रेम का, जहाँ विपुल भंडार॥

माँ भगिनी बेटी बहू, जो भी हो किरदार।
नारी ने हर रूप में, बाँटा केवल प्यार॥

मेरे घर आती नहीं, दुख की तीखी धूप।
माँ के आशीर्वाद की, छाया सुखद अनूप॥

त्याग प्रेम विश्वास का, होता है आभास।
नारी के दिल में करे, ईश्वर सदा निवास॥

हो छोटा सा घाव या, लगा हृदय पर तीर।
माँ के हाथों की छुअन, हर लेती हर पीर॥

नारी को मिलता जहाँ, पूर्ण मान सम्मान।
वहाँ देश परिवार का, निश्चित है उत्थान॥

चाहे जितने शूल हों, हो जाते सब फूल।
माँ के चरणों की जहाँ, पड़ जाती है धूल॥

तब तक आ सकता नहीं, अपना अच्छा वक्त।
नारी जब तक देश में, होगी नहीं सशक्त॥



बसंत कुमार शर्मा

उप मुख्य सतर्कता अधिकारी

पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

मो.: 9752415033





विश्वस्तरीय रानी कमलापति रेलवे स्टेशन, पश्चिम मध्य रेल, भोपाल



Design & Print by **Solar Offset**, 426 Hanumantal, Jabalpur. Mob.: 9425861538, E-mail: solaroffset_jbp@yahoo.com

सर्वसुविधायुक्त वन्दे भारत एक्सप्रेस गाड़ी